जंगली सुअर

एक था समशेर।
ग्यारह साला था एक बदनसीब मुसलमान औरत का
जो उसके बच्चों की मां है दी
और शरा हो जाता है एक अहीरों-गरीब इलाका
गांव की धरती पर बड़े लोगों का यहां दुर्गों
से चला आने वाला अत्याचार।
पीड़ित-दलित भोले-भाले ग्रामीणों को
दबाकर पीस डालना चाहते हैं यह बड़े-ऊंचे-नामी लोग
वे लोग जो अपने नाम का डंका बजाते हैं
और जिनकी आंख के इशारे
पर कांपता है गांव का चप्पा-चप्पा
जहां होते हैं बलात्कार, हत्याएं,
और जमीन-मकान हड़पने की वारदातें
ऐसे ही गांव की भयावह कहानी है 'जंगली सुअर'
जो ग्रामीण भारत की दुख-तकलीफों
का यथार्थपूर्ण जायजा लेती है,
और पाठक को एक रोचक कथा
पढ़ने का अनुभव देने के साथ-साथ
उसे दर्द से भिगो-भिगो भी देती है।

□

उत्कृष्ट साहित्य सीरीज
के उपन्यास पढ़ना
अपने-आप में सुखद
अनुभव से गुजरना है.
ये उपन्यास आज के
समाज और सम्बन्धों का
खुला और बेबाक
जायजा लेते हैं
तथा जीवन और जगत्
को सार्थक पहचान कराते हैं

मधुकर सिंह

जंगली सुअर

हिन्द पॉकेट बुक्स

जंगली सुअर
(उपन्यास)

प्रथम पॉकेट बुक संस्करण : १९८५

प्रकाशक :
हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी० टी० रोड, शाहदरा,
दिल्ली-११००३२

JANGLI SUAR
(Novel)
MADHUKAR SINGH

जंगली सुअर

सुकुल जी चिट्ठी-पत्रीवाला खाकी थैला काख के नीचे से काढ़ते हुए रामनाथ सिंह के दुआर पर बोले, "देश-दुनिया से धरम-करम एकदम उठ गया, बाबू साहेब !"

"पाय लागी !" बड़ी मुश्किल से मुसकराते हुए रामनाथ सिंह ने पूछा, "गांव में फिर इधर कुछ हुआ है क्या ?"

"सनीचरा बंगला देश से मेहरारू लेकर आया है। कोई जात-दुनिया का पता थोड़े है। कोई कहता है, बंगालिन है, कोई कहता है मुसलमान। मगर इतना सच जरूर है बाबू साहेब, कि इस देश की और आपकी जात-बिरादरी की तो बिलकुल नहीं है।"

"कहां है सनीचर ?"

"सुना यही है कि उधर ही शहर में कहीं धर्मशाला या रेलवे मुसाफिरखाने में पड़ा हुआ है और गांव में आने का जुगाड़ बैठा रहा है।"

ऐसा लगा कि रामनाथ सिंह इस बात को बड़ी गम्भीरता से नहीं ले रहे हैं; लेकिन सुकुल जी भीतर से बहुत बेचैन हैं, जैसे कोई उनके घर में जबरन घुसने के लिए आ रहा हो।

लोग उसके कद के एकदम नहीं रह गए थे। दिन-भर बगीचे में, नहर पर लड़कों के साथ घूमता रहता। रात में जहां गांजा की चिलम पीचता, वहां अंगोछा तानकर लम्बी ले लेता।

देखते-ही-देखते सनीचर भी उमिर चालिस साल को भी छूने लगी, मगर हाथ में हल्दी लगने का सौभाग्य ही नहीं मिलता। अकसरहा, सनीचर की स्थितिवाले लोगों की शादी में बराबर दिक्कत होती रहती है। कभी-कभी कितने कवारे ही बुढ़ाकर मर जाते हैं। सनीचर भी उसी रास्ते पर जा रहा था। एक बार उसने रामनाथ सिंह के 'लवाहे को उन्हीं के गोशाले में भभीखन सिंह की बेटी को एक-दूसरे के साथ देख लिया था। अजोरिया रात में रामनाथ भाई का नौकर जब उस लड़की को छोड़कर हटा, तो सनीचर उसके पास चला आया और झट्टा पकड़कर कहने लगा, 'चुपचाप लेट जाओ, नहीं तो गाव-भर में हल्ला कर देंगे।' बेचारी चुपचाप लेट गई। तब के बाद से सनीचर काफी खुश रहने लगा था और जब भी मन में आता, भभीखन की दीवार तड़पकर घुस जाता और रात-भर उनकी बेटी के साथ पड़ा रहता। बेटी भी कम चालू नहीं थी। कइयों के साथ के रिश्ते को बड़ी खूबसूरती और होशियारी के साथ निबाहती आ रही थी।

इस बीच ससुराल से बुलावा आ गया। भभीखन की बेटी सबको तरसाकर चली गई। इसका सबसे गहरा असर सनीचर पर हुआ। एक-दो महीने तक तो पागलों जैसी स्थिति थी। मगर एक दिन सनीचर ने हमेशा के लिए गांव छोड़ दिया और चल पड़ा कलकत्ता हुगली नदी में छलांग लगाने।

घर में एक बूढ़ी मां बच गई थी। उसे समझा-बुझा दिया था, गाव पर रहकर कुछ नहीं होगा। शायद, परदेश के लोग तरस खाकर कोई रोजगार दे दें। उसने बहुत तरह से मां को

समझा दिया था, 'घर के कोने में चुपचाप मर जाना, मां! मगर किसी के सामने हाथ बिलकुल नहीं पसारना। रामनाथ भाई के सामने तो कभी नहीं। गांव-जवार के लिए धर्मात्मा पुरुष हों, गोतिया-भाई के लिए तो कसाई हैं।'

सनीचर की चार-पांच साल तक कोई चिट्ठी नहीं आई। मगर यह पता था कि किसी मारवाड़ी की कोठी पर दरबान है। एक चिट्ठी ढाका से आई कि वह आराम से है और एक जूट मिल में अच्छी नौकरी मिल गई है। मां को सनीचर कभी-कभार कुछ पैसे भेज देता था। मगर जब बुढ़िया मर गई, तो चिट्ठी-पत्री भी बंद हो गई।

बंगला देश बनने के पहले रामनाथ भाई अखबार और रेडियो से बराबर खबर सुनते रहते थे कि पूर्वी बंगाल के निवासियों पर पाकिस्तानी सैनिक भारी जुलुम ढा रहे हैं। लाखों की संख्या में शरणार्थी कलकत्ता और भारत के दूसरे शहरों की ओर भाग रहे हैं।

यहां गांव पर भी लोगों को खबर लग गई कि सनीचर अब इस दुनिया में नहीं है। कहीं दंगा-फसाद का शिकार हो गया होगा। रामनाथ भाई उर्फ बाबू रामनाथ सिंह मन-ही-मन बड़े प्रसन्न हुए कि उसका घर और एक एकड़ के लगभग धरती पर उनका अधिकार हो जाएगा। यह जरूर सच है कि उन्होंने सनीचर की मतारी का किरिया-करम, श्राद्ध, दान-पुन सब कुछ अपने पैसे से करा दिया था। गांव में नेकी की नेकी और नेकी के एवज में सूद-ब्याज के साथ सनीचर की सारी जायदाद। किस्मत इसी को कहते हैं।

कुछ दिन पहले रामनाथ भाई को एक लिफाफा गुकुल जी दे गए थे। भाई जी चिट्ठी पढ़ते ही चौंक गए। सनीचरा अभी तक जिन्दा है। उसमें लिखा था, "सोमती गिरी सरब उपमा

जोग लिखा सनीचर सिंह की तरफ से रामनाथ भइया को मालूम कि मैं बंगला देश से एक गिरोह के साथ भागकर यहीं गया में पिछले कई महीनों से पड़ा हूं। कुछ दिनों तक तो शरणार्थी कैम्प में हम थे। मगर हिन्दुस्तानी साहबों, कर्मचारियों की नियत बड़ी खराब थी। हमें खाने-पीने के मामले में तंग तो करते ही थे, हमारी मेहरारू-बेटी को भी पेशा करने के लिए मजबूर करते थे। सो मैं छोड़कर हजारीबाग चला आया हूं।

"यहां भी तकलीफ मेरा पीछा नहीं छोड़ती है। साथ में मेहरारू है और चार लड़के-लड़कियां हैं। गांव पर ही जमना चाहता हूं। भइया का हुकुम होगा, तो शरण में आ जाऊंगा। आगे, शरण मिल जाए। मैं किसी भी दिन आ सकता हूं। मेरे सामने भीख मांगने के सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं रह गया है। थोड़ा लिखना, ढेर समझना। गांव-घर में बड़े को परनाम, छोटे को आशीर्वाद। भउजी को पांवपूजी और बबुआ सुज को आशीष।" चिट्ठी पढ़ने के बाद उन्होंने किसी के सामने खोला नहीं। यहां तक कि रात-दिन एक साथ उठने-बैठने वाले मुकुल जी से भी नहीं। इन्हें यह तो पता ही था कि सनीचर मरा नहीं, जिन्दा है। इसीलिए मुकुल जी ने जब यह समाचार सुनाया तो उन्हें कोई अचरज नहीं हुआ।

"कुछ फिकिर-चिन्ता में पड़ गए का, बाबू साहेब !" मुकुल जी ने उन्हें थोड़ी देर बाद टोका।

"फिकिर-चिन्ता की तो बात ही है, पंडी जी ! सिर पर इत्ता भारी बोझ कहां रहेगा ? उसके घर को भी तोड़कर गोशाले में मिला दिया है।"

मुकुल जी खैनी ठोकते हुए बोले, "उसे तो बिरादरी में शामिल करना भी मुश्किल है। है कि नहीं, बाबू साहेब !"

"बहुत-बहुत बात है, पंडी जी ! लेकिन ससुरा मुसाफिर-

मतारी जब खाने-दाने बिना मरने लगी, तब मैंने अनाज-पानी से मदद शुरू की। क्या करता. तुम्हें मालूम है कि लोगों की तकलीफ मुझसे बर्दाश्त नहीं होती। बिना पूछे या कहे हर आदमी की सेवा करने के लिए ही जवार-पथार मे बदनाम हू, वे तो हमारी चाची ही थी। तुम तो बंगालिन औरत के साथ मजे में थे। मतारी के लिए फिकिर-चिन्ता ही क्या थी ? उसकी बीमारी मे ही कम खर्च हुआ है क्या ? सारा गाव जानता है कि मैंने क्या-क्या किया है; लेकिन दुनिया में जो आता है उसे जाना ही है। इस माया के बाजार मे कोई भी सदा के लिए रहने नहीं आता। चाची जब इस दुनिया से अचानक उठ गई, तो मैंने बड़ी धूमधाम से उनका किरिया-करम कराया। एक ही खानदान जो था। धूमधाम से कैसे नहीं कराता ! प्रतिष्ठा का सवाल था। लोग तुम पर या मुझ पर हंस-हंसकर जो जाते। तुम तो यहा थे भी नहीं। सबकी बौछारें मुझे सहनी पड़ती। यह तो भाग्य मनाओ कि मैंने चाची का परलोक सुधार दिया। इस लोक मे तुमने उन्हें बहुत सताया। लेकिन मैंने तो उनका परलोक सुधारा। आराम से स्वर्ग में पंखा डुला रही होंगी। तुम्हारी जायदाद तो मेरी देन के सामने एकदम थोड़ी है। एक दिन बैठकर हिसाब-किताब कर लो। हां, मैं इसके लिए बराबर तैयार हू कि जब चाहो मेरा कर्ज साफ कर अपनी जमीन और घर वापस ले सकते हो।"

"लेकिन इस बीच मैं कहा रहूगा ? कैसे तो भइया। आपको ही सब तरह से मेरे बारे सोचना है। तुम्हारी मर्जी होगी, तो गांव मे रहूगा, नहीं तो नटो की तरह सेब के बगीचे मे डेरा डाल दूगा।" सनीचर ने बड़े विनीत स्वर में कहा।

"सनीचर बबुआ की बात ! शरण तो मुझे देनी ही है। इस सेवा के लिए तो बराबर तैयार हू ही।"

है बची दौलत। लछमिनिया को भींच लाए और सबके सामने
गुड़ पानी पर हाथ रखकर बोले लछमिनिया! तू मेरे साथ
कांधी भी साथ जाने के लिए तैयार थी कि नहीं? यहीं के
ठनेदार बदन के साथ रात रात भर मोती दी या नहीं?' बड़े
पारखी थे। बड़े भभीखन सिंह के साथ कभी भी आ सकती थी।
लाठगाल से लछमिनिया बड़े जोर से आ गई है। उसके मुँह से
निकल गया कहो न। भभीखन बाबा! आपके पाप के लिए
गवाह लिया जाए? सभी गाँव पर मौजूद है।"

सभी चौंक गए। यह लछमिनिया क्या बक रही है? सनीचर भी खुद हैरान है कि उसके मुँह से यह सब क्या निकल रहा है?

"हाँ-हाँ गवाह हाजिर करो।" भभीखन सिंह ने कहा, "हम जानना चाहते हैं कि तुम्हारे चलन का फरहरपुर में और भी कोई है क्या?"

"हजारों हैं बाबा! आखिर तुम्हारी जानकारी में नहीं है इसलिए हवा में तलवार चला रहे हो। हमारे-तुम्हारे घर कहाँ नहीं है?"

"बताते हैं साले हरामजादे! ठहर जा!" भभीखन सिंह दौड़ा।

मगर रामनाथ भाई ने उसे पकड़ लिया, "बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं बाबू भभीखन सिंह!"

"फायदा क्यों नहीं है? इसकी औरत के चाल-चलन का हमारी बहू-बेटियों पर असर पड़ेगा। इसे समझाओ कि औरत को घर से बाहर नहीं रखे नहीं तो गोली मार दूँगा।"

भाई जी ने समझा-बुझाकर शांत किया।

सनीचर सोचने लगा, वह कहाँ इस नरक में चला आया है। अच्छा यही था कि उधर ही कहीं कट-मर जाता। गाँववालों की कठोरता तो ज्यों-की-त्यों है। कोई बदलाव नहीं आया है।

सारा दिन उसका चित्त बेचैन रहा। घूमते हुए मन्दिर पर अनायास ही चला आया। वहीं कनेर के गाछ थे, चिर परिचित और अत्यन्त ही आत्मीय। जब सनीचर घबड़ाता था, तो यहीं आता था। पुजारी जी किस्सा-कहानियों में उसका मन बहला देते थे। पुजारी जी आखिर कहां हैं? मर तो नहीं गए हैं? कनेर गाछ तो वहीं हैं। वही पीले-पीले फूल और रमपतिया दादी की किस्सा-कहानिया। सब कुछ याद है सनीचर सिंह को। यहां तक कि पुजारी जी भी सब कुछ भूलकर रमपतिया दादी के साथ घटों बैठे रहते थे। रमपतिया दादी कहती थी, राजा विक्रमादित्य......राम-लछमण......लव-कुश, एक-से-एक बढ़कर कथा। सनीचर और उसके साथ के कई लड़के रमपतिया दादी को चारो तरफ से घेरकर बैठ जाते, 'हां, दादी! तब इसके बाद क्या हुआ? सुन मेरे राम। सुन मेरे लछमन।...इधर गोद मे बैठ मेरे राजा विकरमाजीत!...' पता नहीं रमपतिया दादी जिन्दा है या मर गई है। मर गई होगी। जरूर मर गई होगी।

सनीचर चित लेट गया है और कनेर फूल टपक रहे हैं, सनीचर के सपनो की तरह। किसी से बगल में पूछा है, रमपतिया दादी दस साल पहले ही इस दुनिया से चल बसी थी; लेकिन पुजारी जी अभी तक जी रहे हैं। कहीं गए थे। सनीचर की आंखें तब से उन्हे खोज रही थी।

सीढ़िया चढ़ते हुए खड़ाऊं की आवाज हुई। पुजारी जी ही होंगे। सनीचर उठकर बैठ गया। पुजारी जी ही थे, एकदम जर्जर और बूढ़े। सिर और दाढ़ी के लम्बे बाल एकदम श्वेत हो गए थे, जो आकाश की तरह विशाल और अनन्त थे। सनीचर ने दौड़कर चरण छुए।

"मुझे पता चल गया था कि सनीचर, तुम कई दिनो से गांव

से आए हो, लेकिन इतना भी नहीं हुआ था कि तुम मार डाले गए हो। बाल-बच्चे कैसे हैं ? तुझे पूरे-पूरे बारह वर्ष बीत चुकी ? !'' पुजारी जी ने उसके माथे को चूमा।

इसीलिए तो गांव में लौटा हूं, पुजारी जी ! जिस दिन से आया हूं, उसी दिन से ग्रामवासियों से मिल रहा हूं।''

''सुना बेशक मारीशस से आए हो।'' पुजारी जी हंसते हुए बोले. यह तो बड़ी अच्छी बात है सनीचर, कि तुम परिवार वाले हो गए हो।''

''आपका दर्शन करेगी, बाबा।''

''यह तो खुशी की बात है।''

''आप उसे दर्शन देंगे न ? वह मेरी जात की नहीं है बाबा ! बंगाली मुसलमान है।''

''यह तुम्हारे लिए सौभाग्य की बात है, सनीचर ! उसे भी कभी मन्दिर लाना। पढ़ी-लिखी होगी ?''

''हां, पुजारी बाबा ! पढ़ी-लिखी है।''

''गांव की कुरीतियों से लड़ो, मेरे बेटे ! घबराओ नहीं, डटकर सामना करो ! बच्चे पढ़ते हैं न ?''

''उन्हें हिन्दी नहीं आती। बंगला जानते हैं।''

''मैं उन्हें हिन्दी पढ़ा दूंगा।''

''आप पढ़ा देंगे ?''

''मुझे तो काफी फुर्सत है। सुबह-शाम उन्हें भेज दिया करना। समझे न ?''

''समझ गया, पुजारी जी !''

सनीचर इतना आह्लाद में था, जैसे उसे कोई अप्राप्य निधि मिल गई हो। पुजारी जी जब अन्दर चले गए तो सनीचर फिर कनेर के नीचे लेट गया। भीतर से इतना सरल और भावुक हो रहा था सनीचर कि बचपन की बहुत सारी घटनाएं और बातें

पटल पर एकदम से जिन्दा होकर नाचने लगी थीं। सब
भवतः इस जगह की ही देन था, जो पुरानी बातें जीवित
ो थी। कनेर के नीचे इसी जगह पर रमपतिया दादी बैठ
थी। गांव के सारे बच्चे घेर लेते थे। दादी कहानियां
ी रहती, गीत गाती रहतीं और कनेर के फूल दादी की
ं टपकते रहते, जैसे गांव की दुखियारियों के झरते हुए
ों। दादी के गीत पता नहीं कहा से लौटकर सनीचर के
मे गूजते हैं।

अपतिया दादी बड़े राग से गुनगुनाती थी—

झिमि-रिमझिम बूंद पडत हैं पवन चले पुरवाई।
वैन बिरिछ तर भींजत होइहैं राम-लखन दुनो भाई।

रूर दादी समझाती थी, जब राम-लखन कैकेयी मइया का
ंमानकर वन की ओर चले, तो जोरों से पुरवैया हवा
लगी और बरखा झमाझम होने लगी। कौशल्या मइया
ति घड़ी में राम-लखन की बहुत याद आती है। वे सोचती
ा नहीं, दोनों कहां होंगे ? शायद, किसी वृक्ष के नीचे खड़े
भीग रहे होंगे…।

नीचर को फिर होरिल याद आता है। उसने पूछा था,
! मेरी मां मुझे क्यों मारती है ? वह तो तुम्हारी तरह
ार नहीं करती। क्यों दादी !'

दादी उसे समझाती थी, 'वह भी कौशल्या मइया की तरह
होती होगी, बरखा में जब भीगते होगे, तब तुम्हारी भी
र उसी तरह उदास हो जाती होगी।'

दि दादी को बातें सुनकर होरिल भूल जाता कि उसकी
नहीं, कौशल्या है। वह स्वयं की जगह राम की
... लौटकर दूसरे दिन दोपहर को
।, 'मैंने रात सपने में राम को

कार और विवाह-शादी में रुपये-पैसे से जो बराबर मदद
रता रहता है, उसे विष्णु भगवान सीधे स्वर्ग में बुला लेते हैं,
नाग पर लेटे हुए अपने पास बुलाकर बैठाते हैं।
से पूछा, "बाप के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार
"

"मैं क्या बता सकता हूं।" गनेसी बोला, "यह तो परमात्मा
में है।"

रुपये अपने पास रख लो।" भाई जी ने सौ रुपये
तरफ बढ़ा दिए।

किसलिए, सरकार !" गनेसी अचरज से उन्हें देखता

बाप की दशा मुझसे देखी नहीं जाती। दोनों
। अगर दवा करना चाहो, तो खर्च
। अगर मर ही गया, तो गंगा-प्रवाह के लिए भी
हो।"

दोनों हाथ जोड़ लिए, "मतलब समझ में नहीं
!"

भेजना नहीं चाहते क्या ?"

कराए मोक्ष कैसे मिलेगा ?"
सोच में पड़ गया, "गंगा मइया यहां से दस
! हम गरीब आदमी इतना कहां से जुटा

र हंस पड़े, "बेवकूफ दास ! मैंने जो
काम के लिए ? बाप को गंगा पहुंचाने के

संस्कार और विवाह-शादी में रुपये-पैसे से जो बराबर मदद करता रहता है, उसे विष्णु भगवान सीधे स्वर्ग में बुला लेते हैं, बल्कि तक्षक नाग पर लेटे हुए अपने पास बुलाकर बैठाते हैं। उन्होंने गनेसी से पूछा, "बाप के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मैं क्या बता सकता हूं।" गनेसी बोला, "यह तो परमात्मा के हाथ में है।"

"यह कुछ रुपये अपने पास रख लो।" भाई जी ने सौ रुपये गिनकर उसकी तरफ बढ़ा दिए।

"यह किसलिए, सरकार !" गनेसी अचरज से उन्हें देखता रहा।

"तुम्हारे बाप की दशा मुझसे देखी नहीं जाती। दोनों हालत में रुपये काम आएंगे। अगर दवा करना चाहो, तो खर्च कर सकते हो। अगर मर ही गया, तो गंगा-प्रवाह के लिए भी ले जा सकते हो।"

गनेसी ने दोनों हाथ जोड़ लिए, "मतलब समझ में नहीं आया सरकार !"

"बाप को स्वर्ग भेजना नहीं चाहते क्या ?"

"क्यों नहीं चाहता मालिक !"

"तब बिना गंगा में प्रवाह कराए मोक्ष कैसे मिलेगा ?"

गनेसी भारी सोच में पड़ गया, "गंगा मइया यहां से दस कोस दूर हैं, मालिक ! हम गरीब आदमी इतना कहां से जुटा पाएंगे ?"

भाई जी खिलखिलाकर हंस पड़े, "बेवकूफ दास ! मैंने जो ये सौ रुपये दिए, किस काम के लिए ? बाप को गंगा पहुंचाने के लिए ही तो ?"

"लेकिन मालिक ! किरिया-करम में भी तो खर्च है।"

पड़ा रहे हैं। मैं तुम्हें क्या बताऊँ, [illegible]!"

यह कहते हुए [illegible], [illegible] । [illegible] [illegible] हैं!"

[illegible] भाई जी [illegible], [illegible] [illegible]!"

[illegible]!"

[illegible]!"

[illegible]!"

भाई जी बुद्धिपरायण [illegible] थे। [illegible] बिल्कुल कोमल नहीं थे। उनका कहना था कि ऐसा काम कर कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। [illegible] है। हर बात के लिए दाव-पेंच हैं। अभी [illegible] के पास [illegible] आंखों के सामने नहीं हों, लेकिन मौका पड़ने पर कई निकल आ सकते हैं। फिर भाई जी का व्यक्तित्व असली हीरे के समान है। दुखियों के रक्षक के रूप में पूरे बाजार-भर में विख्यात हैं। जब भी किसी गरीब पर संकट है, भाई जी सब की रक्षा के लिए ग्राह की तरह हाजिर हैं, बल्कि ऐसे कहिए कि हातिमताई की तरह बिना पुकार लगाए ही हाजिर रहते हैं।

अभी परसों-नरसों की ही तो बात है, गनेसी के यहां भाई जी गए थे। गनेसी का बाप बहुत बीमार है। भाई जी जब उसके दरवाजे पर पहुँचे, तो गरीब की छाती हुलास से फूल उठी। भाई जी के फेंफड़े के भीतर करुणा का सागर कितना गहरा है; लेकिन भाई जी के दिमाग में है कि एक साथ दो काम हो जाते हैं, एक पथ दो काज। गरीब के दरवाजे पर पहुंचने पर यश भी मिलता है और अपनी गृहस्थी को भी परोक्ष लाभ पहुंच जाता है। अब तो गनेसी के बाप के मरने की प्रतीक्षा है। भाई जी के दिमाग में दो बातें घर कर गई हैं, किसी भी आदमी के श्राद्ध-

संस्कार और विवाह-शादी में रुपये-पैसे से जो बराबर मदद करता रहता है, उसे विष्णु भगवान सीधे स्वर्ग में बुला लेते हैं, बल्कि तक्षक नाग पर लेटे हुए अपने पास बुलाकर बैठाते हैं। उन्होंने गनेसी से पूछा, "बाप के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मैं क्या बता सकता हूं।" गनेसी बोला, "यह तो परमात्मा के हाथ में है।"

"यह कुछ रुपये अपने पास रख लो।" भाई जी ने सौ रुपये गिनकर उसकी तरफ बढ़ा दिए।

"यह किसलिए, सरकार !" गनेसी अचरज से उन्हें देखता रहा।

"तुम्हारे बाप की दशा मुझसे देखी नहीं जाती। दोनों हालत में रुपये काम आएंगे। अगर दवा करना चाहो, तो खर्च कर सकते हो। अगर मर ही गया, तो गंगा-प्रवाह के लिए भी ले जा सकते हो।"

गनेसी ने दोनों हाथ जोड़ लिए, "मतलब समझ में नहीं आया सरकार !"

"बाप को स्वर्ग भेजना नहीं चाहते क्या ?"

"क्यों नहीं चाहता मालिक !"

"तब बिना गंगा में प्रवाह कराए मोक्ष कैसे मिलेगा ?"

गनेसी भारी सोच में पड गया, "गंगा मइया यहां से दस कोस दूर हैं, मालिक ! हम गरीब आदमी इतना कहां से जुटा पाएंगे ?"

भाई जी खिलखिलाकर हंस पड़े, "बेवकूफ दास ! मैंने जो ये सौ रुपये दिए, किस काम के लिए ? बाप को गंगा पहुंचाने के लिए ही तो ?"

"लेकिन मालिक ! किरिया-करम में भी तो खर्च है।"

संस्कार और विवाह-शादी में रुपये-पैसे से जो बराबर मदद करता रहता है, उसे विष्णु भगवान सीधे स्वर्ग में बुला लेते हैं, बल्कि तक्षक नाग पर लेटे हुए अपने पास बुलाकर बैठाते हैं। उन्होंने गनेसी से पूछा, "बाप के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मैं क्या बता सकता हूं।" गनेसी बोला, "यह तो परमात्मा के हाथ में है।"

"यह कुछ रुपये अपने पास रख लो।" भाई जी ने सौ रुपये गिनकर उसकी तरफ बढ़ा दिए।

"यह किसलिए, सरकार !" गनेसी अचरज से उन्हें देखता रहा।

"तुम्हारे बाप की दशा मुझसे देखी नहीं जाती। दोनों हालत में रुपये काम आएंगे। अगर दवा करना चाहो, तो खर्च कर सकते हो। अगर मर ही गया, तो गंगा-प्रवाह के लिए भी ले जा सकते हो।"

गनेसी ने दोनों हाथ जोड़ लिए, "मतलब समझ में नहीं आया सरकार !"

"बाप को स्वर्ग भेजना नहीं चाहते क्या ?"

"क्यों नहीं चाहता मालिक !"

"तब बिना गंगा में प्रवाह कराए मोक्ष कैसे मिलेगा ?"

गनेसी भारी सोच में पड़ गया, "गंगा मइया यहां से दस कोस दूर हैं, मालिक ! हम गरीब आदमी इतना कहां से जुटा पाएंगे ?"

भाई जी खिलखिलाकर हंस पड़े, "बेवकूफ राम ! मैंने जो ये सौ रुपये दिए, किस काम के लिए ? बाप को गंगा पहुंचाने के लिए ही तो ?"

"लेकिन मालिक ! किरिया-करम में भी तो खर्च है।"

"यह सब मैं करा दूंगा। मैं तुम्हारा किसलिए हूँ।"

गनेसी भावुक होकर बोला, "अभी तक तो प्राण निकले नहीं। अभी से ऐसा कैसे सोच लें ?"

माई जी ने टोका, "तुम्हारे बाप के प्राण आसानी से निकलेंगे ? उस जनम का पाप है, तभी तो इतनी तकलीफ है। ईश्वर से यही प्रार्थना करो कि तुम्हारे बाप के प्राण जल्दी निकल जाएं।"

गनेसी एकदम डर गया।

माई जी रोज उसके बाप की मृत्यु की प्रतीक्षा में आते थे और लौट जाते थे। सनीचर को लोगों ने कहा, "तुम जाकर माई जी के सामने मुंह खोल दो। एकदम पसीजकर तुम्हें दुकान शुरू करने के लिए सौ-पचास निकालकर दे देंगे," लेकिन सनीचर अच्छी तरह जानता था कि माई जी उसे एक पैसा भी नहीं देंगे। उसके पास रखा ही क्या है ? सब तो पहले ही हड़प गए हैं।

गनेसी का घर उनकी नजर में नाच रहा है। उसका घर हड़पने के लिए किरिया-करम के नाम पर उसे धमका रहे हैं। सनीचर को माई जी के नाटक पर हंसी भी आती है कि गरीब-दुखिया समझकर गांव-जवार के लोगों से पूछते रहते हैं, "कहो भइया ! तुम्हारे यहां कोई मरने वाला तो नहीं है। किरिया-करम के लिए धन, जन सब कुछ से हाजिर हूं। मुझे याद करना मत भूलना।" किसी की बेटी का ब्याह अगर हुआ तब तो बिना बुलाए ही पहुंच जाएंगे। रात-दिन खटते रहेंगे। माई जी का ऐसे कामों में बहुत मन लगता है।

लेकिन एक अपशगुन के मामले में इधर घनघोर चर्चा है। भाई जी भी गुपचुप उसमें शामिल हैं। सावन-भादों में भी धरती पर एक बूंद पानी नहीं। धरती अग्निकुंड की तरह धधक रही थी। लोग कहते हैं, सनीचर ने हल छू दिए हैं, छोटे का काम स्वयं उठा लिया है। इसलिए इस साल सुखाड़ पड़ेगा। धरती पर इस साल बरखा नहीं होगी। आश्चर्य की बात तो यह है कि अभी भी लू हहास बांधकर चलती है।

सनीचर हल-बैल खोलकर आम के पेड़ के नीचे बैठ गया। उसकी मेहरारू भात-पानी बगल में रखकर कोई बंगला लोक-गीत गुनगुना रही थी।

"लोगों ने तुम्हें इस तरह गुनगुनाते सुन लिया, तब यही कहेंगे, तुम बदचलन हो।" सनीचर ने हंसकर कहा।

"आसपास तो कोई नहीं है; लेकिन लोग बड़े कसाई हैं न ?" वह बोली।

"एकदम कसाई हैं। लड़के पुजारी जी से मन्दिर पर पढ़ते हैं। इसे भी ये बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। मैं क्या करूं ?"

"तुम क्या करोगे ?" मेहरारू बोली, "बर्दाश्त करो और किसी से कुछ भी न कहो।"

"सो तो ठीक है।"

"तुम्हारी तरफ लोग कैसे गाते हैं ?"

"अरे कुछ मत पूछो," सनीचर हंसते हुए बोला, "इधर तो लोग बहुत ऊटपटांग गाते हैं।"

"सचमुच ?"

"तब और का ?"

"फिर भी सुनाओ न !" मेहरारू बहुत जिद करने लगी।

बिरहा सुनोगी ? लेकिन भोजपुरी में समझोगी कैसे ?"

से पकड़ लूंगी।"

"सब सुनो।"
सनीचर गुनगुनाता है :

"आग नियर धधकेला सरग धरतिया से
लपलप लुकवा बढार।
सावन-भदउवा में चटके सरगिया हो
पानी बिनु पड़ल हाहाकार
कसइन मुवइया ईनर ईसवरवा जे,
अंखिया ना फफनेला लोर।
संपवा छोड़ेला संप कॅचुल के मातल
गंगा मइया बड़ी रे कठोर।
चाहत ईनर जबो आपन बड़इया हो
करो द बछरिया दहार
नाहीं त पिआसल धरतिया सरापी तोहे,
सरग के जर दहिजार।"

सनीचर की मेहरारू को मतलब एकदम समझ में न आया; लेकिन धीरे-धीरे बहुत उदास होती गई। सनीचर ने बताया, "देख मनोहर की मतारी। धरती पर चारों तरफ तलवार की तरह लपलपा रही है। स्वर्ग में एक बूंद पानी नहीं। तभी सावन-भादों के महीने में भी चारों तरफ हाहाकार है। पता नहीं, इन्द्र भगवान कैसे कसाई हैं कि उनकी आंखों में एक बूंद भी लोर नहीं। सांप जैसा विषधर भी मौसम के अनुसार केंचुल बदलता रहता है; लेकिन गंगा मइया की छाती बड़ी कठोर है कि वह कहीं से भी उफनकर धरती की प्यास नहीं बुझाती।...हे, इन्द्र भगवान! सचमुच अगर तुम चाहते हो कि धरती के लोग बराबर तुम्हारी तारीफ करते रहें, तो बयार

चारों तरफ बाड़ कर दो। नहीं तो प्यासी धरती तुम्हें श्राप देगी कि हे कठोर इन्द्र ! तुम्हारे स्वर्ग में भी आग लग जाए…।"

"चलो, हल-बैल लेकर घर चलो !" मेहरारू बोली।

"घर पर ही चलकर क्या करूंगा ?"

"ऐसा करो, तुम बैल हांक दो। मैं लेकर जाती हूं।"

सनीचर ने हल को कंधे पर उठा लिया और बोला, "चलो, देवन सिंह के दरवाजे पर बैल बांध आता हूं। तुम घर चली जाना और मैं मन्दिर पर पुजारी जी के पास बैठूंगा।"

उसका अधिकतर समय मन्दिर पर ही पुजारी जी के साथ कटता था।

एक दिन आधी रात के लगभग तड़ातोड़ ईंटें उसके छप्पर पर गिरने लगीं। बच्चे और मेहरारू घबड़ाकर रोने लगे। सनीचर दोमुंहे से बाहर निकल आया। उसने साफ देख लिया कि दो-तीन लोग सामने से भाग रहे हैं।

मेहरारू अभी तक रो रही थी।

"…क्या बात है ? ऐसे फफककर रोती रहोगी तो काम कैसे चलेगा ?" उसने कुछ झुंझलाकर पूछा।

"एक आदमी मेरे सिरहाने आकर खड़ा हो गया और मुझे जगाने लगा।"

"क्या कह रहा था ?"

"मेरी बांह पकड़कर खींच रहा था।"

"खींच रहा था। कौन था, ससाला ?"

"कोई गुंडा ही था।"

"उसे पहचानती हो ?" उसने कहा, "अभी चलकर बताओ, तो साले को काट दूं। क्या समझ रखा है तुम्हें कोई रंडी-पतुरिया का ? तुमने उसी क्षण मारा क्यों नहीं ?"

"मारती कैसे ? मैं तो डर गई थी।"

गया। अब लोग नहीं न कहेंगे कि रामनाथ भाई अपने गोतिया को कुछ भी नहीं समझते। क्या करूं ? मैं तो सेवा-भाव के चलते तबाह रहता हूं।"

सनीचर समझ गया, भाई जी का पंजा बड़ा मजबूत है। इससे बच निकलना इस गांव में बड़ा कठिन है। सनीचर के लिए भी तो लाचारी है। अगर इनसे छूटकर निकलता है, तब गांव वाले और भी तंग करेंगे। अभी भाई जी की वजह से कुछ तो बल रहेगा। जब तक उनकी छाया रहेगी, फरहंगपुर के सरजमीन पर जमने मे आसान रहेगा।

इसके लगभग एक सप्ताह बाद की घटना है।

मनीचर भाई जी के घर के काम से शहर गया था और रात में भी लौटकर आने वाला नही था। सुकुल जी और भभीखन सिंह के लडके रात मे सनीचर की अनुपस्थिति मे दोमुहे मे घुस गए। सनीचर की मेहरारू अचानक उठकर बैठ गई और वह चीखने ही वाली थी कि भभीखन सिंह के लडके ने उसका मुंह पकडकर बन्द कर दिया और छुरा निकालकर बोला, "चुपचाप, शान्त रहो! भौजाई मे हमारा भी आधा होता है। जरा भी इधर-उधर किया तो गोद से लड़की छीनकर काट देंगे।"

बेचारी डर गई। शरीर से पति और लडके ज्यादा कीमती है। दूसरी बात है, उसके लिए यह जगह भी तो एकदम अन-जान है। पता नही, लोग कब क्या कर बैठें ? यह सब सोचकर उसने सब कुछ परमात्मा पर छोड़ दिया। दोनो मिल-जुलकर

उसे काफी तंग करते रहे; लेकिन चारा ही क्या था ? वे आपस में इतना ही बोलते थे, 'साली पता नहीं क्या-क्या बकती है। बंगला-फारसी में गाली दे रही है।' बहुत देर से वह कहती रही, 'अब तो जी भर गया। जाते क्यों नहीं ?' लेकिन वे दोनों लगे तभी छोड़कर गए, जब पूरी तरह इनका मन भर गया।

सनीचर आया, तो उसने कुछ नहीं बताया। कई दिनों तक बात दिमाग में आती रही कि सब कुछ उसे बता दे; लेकिन पर-हेज़ गई कि परेशानी बढ़ेगी। सनीचर और भी घबड़ाकर पागल हो जाएगा और नहीं तो यह सब जान-सुनकर उसे ही घर से निकाल दे, तब कहां जाएगी। यह सब सोचकर चुप लगा गई। अगली बार दोनों कभी आए, तो देखा जाएगा। न होगा, तो इस बार दोमुंहे के कोने से गंड़ासा उठाकर उन्हें मार डालेगी। न साले गुंडा जिन्दा रहेंगे, न तंग करेंगे।

लेकिन इस घटना के बाद से उसमें कुछ निर्भीकता बढ़ी थी। वह पड़ोसियों के घर में ज्यादा आने-जाने लगी थी। अगल-बगल की औरतें कहतीं कि बंगाली बहू का स्वभाव बहुत अच्छा है; परन्तु उसकी बातें उन्हें समझ में नहीं आतीं; लेकिन धीरे-धीरे वह उनकी बातें समझ जाती थी। आपस में पड़ोसी औरतें यह समझने लगीं कि बंगाली बहू और चाहे जो हो, मगर चाल-चलन की बदमाश तो बिलकुल नहीं है। ऐसी हंसमुख मेहरारू पर यह दोष लगाना अच्छा नहीं है, बल्कि इसके लिए एकाध बार सनीचर ने उसे डांटा भी कि बाहर ज्यादा मत निकला करो। औरतों के दिमाग का कोई ठिकाना नहीं रहता है। कब क्या कर देंगी, यह दव को भी नहीं मालूम।

एक रोज़ सनीचर की बहू दोमुंहे में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। सामने उसके दोनों छोटे लड़के खेल रहे थे। अगल-बगल के लड़के भी चले आए और कुछ औरतें भी। वे इतनी

जोर से आपस में हंसी-मजाक कर रही थीं कि भभीखन सिंह का माथा ठनका, 'सनीचर बहू मुहल्ला बिगाड़कर रख देगी। औरतें कैसे हंसती हैं ! लगता है इन्हें लाज-शरम बिलकुल नहीं है। धिक्कार है सनीचर को ! मुहल्ले में रंडी बुलाकर रख दिया है। अब हमारी बहू-बेटियों को भी बिगाड़कर रखेगी।'

गलियाते हुए भभीखन सिंह से सनीचर बोला, "उसे कभी तो अपनी बहू-बेटी समझो, काका ! रात-दिन लांछित करते रहने से तुम्हें क्या मिलता है ?"

"भक ससुरा !" भभीखन ने कहा, "इस बदचलन को उधर ही छोड़कर गांव पर नहीं आ सकते थे क्या ?"

सनीचर के मन में होता था, खोलकर कह दे, 'अपनी बेटी को देखा है ? पांचाली की तरह उसके कितने पति रहे हैं, तुम्हें मालूम है ? लेकिन यही सोचकर चुप लगा जाता था कि झूठ-मूठ बातों के लिए महाभारत रचना ठीक नहीं है। महाभारत रच भी जाए, तो किसी बड़े परिवर्तन के लिए।

"गाना-बजाना करना ही है, तो इस गाव में नहीं चलेगा।" पैर फेंकते हुए भभीखन सिंह रामनाथ भाई के दुआर की ओर चले गए।

इसके बावजूद बीच-बीच में सनीचर के छप्पर पर ईंटें गिरना जारी रहा। उसने कई बार ग्राम पंचायत में इस बात के लिए शिकायत भी की; परन्तु वहां भी कोई सहारा नहीं था। मुखिया बोला कि जब तक कोई सबूत नहीं मिलता, तब तक कोई कुछ नहीं कर सकता।

एक दिन सनीचर ने कुएँ पर सुकुल जी के लड़के को बा
मेहराज के साथ हँस-हँसकर बतियाते हुए देख लिया।

"सचमुच तुम्हें लोग अब जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।" सनीचर उससे कहा।

"क्या हुआ?"

"कुएँ पर तोमर सुकुल से क्या बतिया रही थी?"

"पानी पीने को तो माँग रहा था।"

"सो तो ठीक है। मगर गाँव की नजरें जो ठीक नहीं हैं। ये सब लोग एक-न-एक दिन तुम्हें यहाँ से भगाकर छोड़ेंगे।"

सनीचर बहू इतराकर चुप लगा गई; लेकिन सनीचर ने फिर उससे कहा, "हम हर तरह से गरीब और लाचार हैं। तु समझती क्यों नहीं कि जब से इस गाँव में आई हो, तब से तरह तरह की बातें उठ रही हैं? सभी यही चाहते हैं कि मैं तुम्हें निकालकर भगा दूँ।"

"भगा दो।" वह खिलखिलाकर हँसी।

"तुम्हें तो मजाक ही सूझता है।" सनीचर बोला, "मेरी जान पर आफत आ गई है। यह डाकमुंशी का जो लड़का है न, तोमर सुकुल, यह एक नम्बर का खच्चर है, एकदम गुंडा।"

"सचमुच?" सनीचर बहू बोली।

"जब चाहे वे लोग तुम्हें उठाकर चल दें।"

सनीचर बहू फिर जोरों से हँसने लगी, "छाती में कटार घुसेड़ दूँगी। वे समझते क्या हैं?"

मगर सनीचर को इन बातों से इतमीनान नहीं हुआ। वह गाँवों की प्रकृति को जानता था। रामनाथ भाई उर्फ बाबू रामनाथ सिंह भाई ही तो हैं। दानी महात्मा कहलाते हैं, मगर सनीचर की ही जमीन-जायदाद हड़प लेने में कोई संकोच हुआ? कहने के लिए जात-बिरादरी है।

सुकुल जी कोई चिट्ठी रामनाथ भाई के दरवाजे पर फेंक गए थे। चिट्ठी सनीचर बहू के नाम से थी। चिट्ठी बंगला में थी। सनीचर बहुत मुश्किल से पढ़ पाता था। उसने मेहरारू को दे दी। चिट्ठी उसकी मतारी की थी। हाल-समाचार लिखा था। बेचारी कलकत्ता से पुनः बंगला देश लौट गई थी। ढाका में जहां अपना मकान था, वहां अब वीरानी है। दूसरी जगह मां अपने बेटे के साथ रह रही है। बड़ी तकलीफ है। सनीचर बहू पढ़कर रोने लगी।

सुकुल जी ने भाई जी को कहा, "बाबू साहेब ! कौन भरोसा, बंगला भाषा में यारों की चिट्ठियां मंगाती होगी। कोई पढ़ना-लिखना थोड़े जानता है कि जानकारी रखेगा।"

भाई जी कुछ नहीं बोले। रघुनी अपनी भी चिट्ठी लेने के लिए आया था और पढ़वाने के लिए भी। सुकुल जी की बातों पर ध्यान न देते हुए भाई जी ने रघुनी को चिट्ठी पढ़कर सुना दी। उसके लड़के को एक बड़े कारखाने में नौकरी मिल गई है। तीन सौ रुपये मासिक वेतन है और ओवर टाइम अलग से।

सुकुल जी व्यंग्य से बोले, "ले रघुनी ! अब चमारू का काम छूट गया न, बेटे का ?"

"बाबा !" रघुनी बोला, "कोई भी काम हो, सबकी प्रकृति बराबर है। चाहे चिट्ठी बांटने का काम हो, चाहे जूता मरम्मत करने का। सब काम बराबर है।"

"भक ससुर !" सुकुल जी ने डांटा, "जुबान कैसे खुल गई रे ! नयी हवा लग रही है ?"

"माफी मांगता हूं, सुकुल बाबा !" रघुनी चमार ने दोनों हाथ जोड़ लिए।

जब रघुनी चलने लगा, तो भाई जी बोले, "कोई सेवा रघुनी राम !"

"कैसी सेवा, मालिक !"

"घर में कोई बीमार तो नहीं है ?"

"नहीं, सरकार ! अभी तो परमात्मा की कृपा से कोई बीमार नहीं है।"

"कोई बीमार पड़े, तो खबर करना, आ जाऊंगा।"

रघुनी नासमझ की तरह उनका मुंह ताकता रहा। बोला, "अब तो मेरी भी चलने की उमिर हो आई है। कौन जानता है यह पका हुआ आम कब टपक जाए।"

"मेरी एक सलाह मानो तो बताऊं ?"

"आज्ञा हो, मलिकार !"

"परमात्मा ने तुम्हें खाने-पीने को अच्छा दिया है। मरने के पहले घरवालों को जरूर समझा जाना कि वे तुम्हें गंगा जी ले जाएं। बिना गंगा-प्रवाह के मोक्ष पाना कठिन है।"

रघुनी बड़ी सरलता से हंसा, "पहले से इसकी चिन्ता कौन करे ? यह सब सोचना-समझना लड़कों का काम है।"

"तुम्हारी मरने की उमिर हो गई है, इसीलिए समझा रहा था।"

"देखा जाएगा, मलिकार !" उनके दुआर से उतरकर बोला, "चलता हूं। मालिक जी, सलाम ! पाय लागी बाबा !"

रघुनी रास्ते-भर सोचता रहा, भाई जी सचमुच परोपकारी जीव हैं। गांव में दो-चार दुःखी लोगों की हालत पर जब तक मरहम-पट्टी न कर लें, तब तक पेट का पानी ही नहीं पचता। आज रघुनी से हाल-चाल ले लिया न, अब सारा दिन खुशखुशी में रहेंगे। इतने बड़े आदमी हैं और बड़े-छोटे सबके दरवाजे पर पहुंचकर समाचार लेते रहते हैं। इस गांव में कौन है, जो सबके सुख-दुःख में शामिल रहता हो ? भाई जी का स्वभाव ही ऐसा है कि उन्हें किसी के साथ भी बैर-विरोध

नहीं है।

गोतिया के ही भाई लगते हैं सनीचर सिंह। न मालूम कैसी मेहरारू भगाकर लाए हैं। दूसरा कोई भी गांव में शरण लेने नहीं देता। मगर कितने ऊंचे आदमी हैं भाई जी। सब के विरोध के बाद भी सनीचर को शरण मिल गई है। यह सब भाई जी की कृपा नहीं, तो और क्या है?

गनेसी के बाप के लिए उन्हें कम चिन्ता नहीं। मरने की बड़ी आतुरता के साथ प्रतीक्षा है। सुना तो यही है कि बाप के मरने के बाद गनेसी बहुत बड़ा भंडारा कराएगा। सवा सौ साधु-ब्राह्मणों का भोज होगा और गांव-भर के जात-परजात सभी कचर-कचरकर खाएंगे। जब भाई जी हैं, तब गांव को रुपये-पैसे की चिन्ता क्या?

सयोग ही था कि रघुनी को रास्ते में गनेसी मिल गया।

"कहो गनेसी! अच्छे तो हो?" रघुनी ने पूछा।

"सब तुम्हारा आशीर्वाद है, चचा!"

"अब बाप की हालत कैसी है?"

"देखो, परमात्मा के हाथ में है। आज-कल करते हुए बेचारे दिन काट रहे हैं।"

"कब तक जीने की उम्मीद है?"

"क्या मतलब?" गनेसी चौंका।

"भाई जी मरने की प्रतीक्षा में हैं।"

"किसके?" गनेसी जोर से बोला।

"बिसेसर भाई के और किसके!"

"उन्हें बोल देना, चचा!" गनेसी ने गुस्से में कहा, "मैं क गरीब आदमी हूं। भंडारा अमीर लोग कराते हैं। समझे कि हीं?"

"दुनिया में किसिम-किसिम के लोग हैं, गनेसी! भाई जी

उनमें से एक हैं।"

"मैं भाई जी की शिकायत नहीं करता, चचा! मैं तो अपने बाप को लेकर डरता हूं कि जल्दी मरता हो, तो मर जाता। भाई जी को बड़ी प्रतीक्षा है।"

दोनों बहुत देर तक बैठे थे।

शाम ढलती जा रही थी और पुजारी जी मंदिर की घंटियां टुनटुनाते हुए आरती की तैयारियां कर रहे थे। अंधेरे में कनेर गाछ डूबता जा रहा था।

इस समय भी पसीना शरीर से चू रहा था। बधार की ओर से गरम हवा आ रही थी। बरखा का कोई आसरा नहीं। पत्र समय आ गया। लोग-बाग जिएंगे कैसे?

भाई जी को जैसे ही पता चला कि गनेसी का बाप चल बसा, वैसे ही वे तत्काल उसके दुआर पर पहुंच गए। घर में रोना-धोना मचा था। गनेसी भी एक तरफ बैठकर रो रहा था। भाई जी ने गनेसी को कसकर डांटा, "यह क्या मेहरारू की तरह लोर गिरा रहे हो? जो हुआ, सो हुआ। अब गंगा जी की तैयारी करो!"

"माफ कर दीजिए मलिकार!" गनेसी अंगोछे से आंसू पोंछते हुए बोला, "मेरी शक्ति के बा'र की बात है कि मैं दस कोस गया जी ले चलूं। हम गरीब लोग नहीं सह सकते, मालिक!"

"क्या बात करते हो? मैं अभी मर गया हूं क्या? ये लो ये और भी रख लो।" भाई जी ने रुपये बढ़ाते हुए कहा।

अगल-बगल के लोग भी गनेसी को समझाने लगे, "आज के जमाने में बड़ी मुश्किल से कोई मददगार मिलता है। इन्हें सम्भालकर रखो! गंगा जी के लिए शव-यात्रा की तैयारी करो!"

लाचार होकर गनेसी को गंगा जी के लिए तैयारी करनी पड़ी। भाई जी एक-दो मील तक साथ-साथ गए, फिर बीच रास्ते से ही लौट आए।

बहुत दिनों के बाद भाई जी की आत्मा को शांति मिली थी।

कई महीने बाद गांव में एक आदमी मरा था। दरअसल, भाई जी आदत से लाचार हैं। वे भी अपने वश में नहीं हैं। गनेसी जब श्राद्ध कर्म से निपट गया, तब एक दिन उसे दुआर पर बुलवाया।

"तब गनेसी! किरिया-करम ठाट से हो गया न?" उन्होंने पूछा।

"निभ गया किसी तरह, मालिक! सब कुछ आप ही के आशीर्वाद से हुआ है।"

"अब मेरा भी हिसाब-किताब हो जाना चाहिए न।"

गनेसी को धक् से लगा, "बताइए, मालिक!"

"अभी मगाता हूं।" उन्होंने अपने लड़के को बुलाकर एक बही मंगवाई और गनेसी के सामने ही पसारकर बाचने लगे, "बारह जून को सौ रुपये, फिर इसी महीने की छब्बीस तारीख को एक सौ रुपये तुम्हारे दरवाजे पर दिया, जब तुम्हारे बाप की लाश घर में पड़ी थी। इसके बाद किरिया-करम के लिए पचास, फिर दो सौ और आखिर में फिर तीन सौ रुपये। कुल मिलाकर हमने तुम्हें साढ़े सात सौ रुपये दिए हैं। हिसाब-किताब तो सही है न?"

थी, वह पता नहीं कहाँ शायद रहती थी और भाई जी उन्हें समझते हुए भी सही अर्थों में उनसे समझौता कर चुके थे। मुकुल जी भी उनकी सेवकाई में समझौता किए बैठे थे। यही कारण था कि दोनों एक-दूसरे की बराबर तारीफ किया करते थे।

"सुना कुछ कि नहीं, बाबू साहेब !" मुकुल जी बोले।

"का पंडी जी !"

"बंगाली बहू की फिर आज चिट्ठी आई है।"

"सुनते हैं, उसकी महारिन भेजती है।" मुकुल जी कहने के लिए तो कह चुके थे कि बंगाली बहू की चिट्ठी आई है; परंतु मन में विचार यही कर चुके थे कि अब से चिट्ठियाँ किसी को भी नहीं देंगे, रामनाथ सिंह को भी नहीं, परन्तु सच्ची बात मुह से निकल ही गई। इसे अब छिपाकर रखना भी ठीक नहीं था। इसलिए भाई जी की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "मुझे तो इस औरत के चरित्र पर ही शक है। जरूर, इसके यार की चिट्ठियाँ आती हैं। मेरा शक तो बिलकुल पक्का है कि लड़के-फड़के भी सनीचर से पदा नहीं हैं।"

"हो सकता है, बाबा !"

भाई जी को सनीचर के लिए पता नहीं भीतर-भीतर कमजोरी क्यों थी, लेकिन इस कमजोरी से चिपकते हैं, तो सनीचर की जायदाद से हाथ धोना पड़ेगा, क्योंकि वह जमाना नहीं है कि जिसकी जायदाद चाहें सीधे हड़प लें।

"मुझे तो एक बात और पसन्द नहीं है।" मुकुल जी कुछ उपेक्षा से बोले, "यह जो सनीचरा है न, मन्दिर पर ज्यादा उठने-बैठने लगा है। कई बार देखा है कि पुजारी जी भी उसके साथ सटकर खुसुर-फुसुर करते रहते हैं। ऊपर से कभी गनेसिया, कभी रघुनी चमार बगल में बैठे रहते हैं। सबसे मजेदार बात सुनी कि नहीं बाबू !"

पूजा-पाठ में मन नहीं रमता। रहता है, रहता है उड़ जाता है। कैसे और कहां उड़ जाता है, इसका अता-पता भाई जी भी आज तक नहीं पा सके। कबीरदास ने लिखा है, यह संसार कागज की पुड़िया है, पता नहीं कब गल जाएगा। उनका लिखना सही हो सकता है। मगर भाई जी इतने निर्लिप्त नहीं हैं कि कागज की पुड़िया की तरह सिर्फ गल जाना चाहते हैं। उनके लिए भौतिक उपलब्धियां भी मोक्ष प्राप्ति के रास्ते हैं। रावण भी तो बड़ा दुष्ट था; लेकिन मोक्ष पाने का उसका भी तो कोई रास्ता था। आखिरकार भगवान् राम ने उसका भी उद्धार किया कि नहीं किया! वह आदमी ही क्या, जिसने समय के साथ-साथ अपनी दृष्टि को नहीं बदला।

तभी पता नहीं कहां से सनीचर इस भरी दुपहरिया में आ गया।

"का हो, सनीचर बबुआ! सब कुछ ठीक-ठाक तो है? कुछ चाहिए क्या?" उन्होंने सनीचर से पूछा।

"एक बात के लिए हम आपका आशीर्वाद चाहते थे, बड़का भइया!"

"हम का मतलब?"

"मतलब कि मैं, रघुनी होरिल का लड़का किसुन सब आदमी मिलकर नाटक-मंडली बना रहे हैं। हमें पुजारी जी का आशीर्वाद प्राप्त है। आपका आशीर्वाद हमें चाहिए।"

"आशीर्वाद का मतलब कुछ रुपये-पैसे से सहायता ही न, सो मैं इसके लिए तैयार हूं और कुछ बोलो।" भाई जी उल्लास

रघुनी चमार की आंखें ऐसे प्रेमपूर्ण सवाद से भर गईं। अंगोछे के कोने से आखें पोंछते हुए बोला "नौजवान लोग मिल-जुलकर कुछ नाटक-तमाशा करना चाहते हैं।"

"सुना था। कल ही तो सनीचर बबुआ बता रहा था। है न, सनीचर !"

"ठीक बात है, रघुनी भाई !" सनीचर ने कहा, "कल ही मैंने बडका भइया से जिक्र कर दिया था। भइया सुनकर बहुत खुश हुए थे।"

"देख, रघुनी ! इस दुनिया मे कोई भी हमेशा के लिए रहने नही आया है। धन-दौलत पा ा ही रह जाएगा, परन्तु अपने साथ एक ही चीज जाती है और वह है नेकी। मैं तो नेकी करना जानता हू। मुकुल जी और मेरे विचार मे इतना ही तो अन्तर है। मै तो हमेशा उनसे कहता हू मुकुल जी ! आप जैसा सोचते हैं, वैसा अब नहीं चल सकता।"

"इन्ही सब कारणो मे तो बडे-छोटे सभी आपको चाहते हैं।"

थोड़ी देर के लिए सबके बीच गहरी चुप्पी रही। सभी असमंजस में थे कि जहा से बात शुरु हुई थी, वहां कैसे पहुंचा जाए। भाई जी तो दुनिया की निस्सारता की ओर बढते जा रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि भाई जी साफ-साफ कह दें, 'खेल-तमाशा सब कुछ बेकार है। एक ही सच है और वह है नेकी। कोई शादी-ब्याह हो या कहीं मरणोत्सव हो, तब मैं सहर्ष हर तरह से तैयार हू,' लेकिन स्वयं भाई जी ने ही चुप्पी तोड़ी, "मेरे लायक क्या सेवा है ? जो तुम लोग हुकुम करो।"

"हमे नाटक की तैयारी के लिए कुछ चन्दा दीजिए।" रघुनी साफ-साफ कह गया।

"हाजिर हू, जब कहो।"

"रिहर्सल शुरु है।"

भाई जी उठकर अन्दर गए और दो-चार मिनट के बाद निकलकर आए और बोले, "मेरी तरफ से यह इक्कावन रुपये रख लो दान, रघुनी भाई!"

पूरी मडली गद्गद हो उठी।

कुल मिलाकर ढाई सौ रुपये के लगभग उनके पास इकट्ठे थे। बड़े उत्साह से नाटक की शुरुआत हो गई थी। गांव के प्राय. अधिकांश लोगों ने पचास पैसे से लेकर दो रुपये, पाँच रुपये तक मे मदद की थी। भाई जी की रकम एहसान की तरह सबसे ऊपर थी। इनकी विशेषता यह थी कि किसी को भी बड़ी से-बड़ी रकम बिना लिखा-पढ़ी के यों ही उठाकर दे देते थे। इन लोगों ने भी भाई जी को कोई रसीद नहीं दी और भाई जी ने भी इसके लिए कोई माग नही रखी।

नाटक अपनी भाषा, भोजपुरी में था। किसुन ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। शाम को मडली के सभी लोग मन्दिर पर कनेर-गाछ के नीचे बैठ जाते थे और मिल-जुलकर उस पर बातें करते रहते थे। किसुन पढ़ा नहीं था। मैट्रिक करने के बाद घर पर ही रहता था। होरिल भी जल्दी ही पलटन से रिटायर होने वाला था। किसुन को होरिल पत्रों में बराबर कोसता रहता था, निकम्मा घर पर बैठा रहता है; परन्तु किसुन भी क्या करे? कुछ करने के लिए क्या है? न नौकरी मिल पाती है, न जमीन-जायदाद ही इतनी है कि खेती-बारी जमकर की जाए। नाटक-मडली में किसुन को नया उत्साह जरूर मिला है। किसुन ने जब नाटक पढ़कर सुनाया था, तो लोगों को बड़ा अचरज हुआ था। खासतौर से पुजारी जी का यह लड़का तो होरिल की तरह ही तेज निकलेगा। मन-ही-मन खुश भी होते थे। पता नहीं होरिल के साथ उनका पुत्रवत् जुड़ाव कैसे था। होरिल

मन्दिर पर कनेर गाछ के नीचे ही सयाना हुआ था या पुजारी जी का उस जन्म का सचमुच मे बेटा था।

रिहर्सल तो शुरू हो गया था; परन्तु एक समस्या बहुत जबर्दस्त थी। नाटक में एक लड़की भी थी, जो जवानी में ही विधवा हो गई थी। पहले तो उन्होंने बहुत कोशिश की कि नाटक से लड़की-औरत का झंझट ही मिटा दिया जाए; लेकिन अब बड़ा मुश्किल हो गया था। उस लड़की को हटा देने से बात ही बिगड़ जाती थी। लड़की को नाटक से हटाना जितना कठिन था, उतना ही कठिन उसका पार्ट भी था। सनीचर तो तैयार था कि मेरी औरत विधवा का पार्ट करेगी, लेकिन उसे भोज-पुरी बोलने मे कठिनाई थी और गाव में मच पर उतरने का मतलब है, आंधी और तूफान। आखिर में किसुन का ही एक साथी लड़की का पार्ट करने के लिए तैयार हो गया।

पुजारी जी रिहर्सल में कभी-कभार आकर बैठ जाते थे और उनकी बातें सुनकर हसते रहते थे। मन्दिर का सौभाग्य था कि वहा बराबर कुछ-न-कुछ होता रहता था और कुछ नही तो रामायण की कथा ही शुरू कर देते। गाव-जवार के दूसरे-दूसरे जवान-बूढ़े भी मन्दिर पर बराबर आते-जाते रहते थे। सीतापुर से सुकुल जी के घर के बगल का ही रामसिंगार भी आता था। रामसिंगार अच्छा-खासा नौजवान था। उसने भी अपने गांव से साठ-सत्तर रुपये इकट्ठा कर किसुन को दिए थे। दर-असल उस जवार मे यह पहला मौका था, जब कुछ लोग मिल-जुलकर खुद ही नाटक करने वाले थे। अभी तक तो उन्होंने विवाह-शादी मे नौटकी देखी थी या कभी-कभी कोई रामलीला पार्टी आती थी, तो उनका मनोरंजन होता था। इसलिए नाटक करने वालों के लिए ही नहीं, गांव-जवार वालों के लिए भी नाटक एक नई चीज थी। किसुन, सनीचर और रघुनी का

'रिहर्सल शुरू है।''

भाई जी उठकर अन्दर गए और दो-चार मिनट के बाद निकलकर आए और बोले, ' मेरी तरफ से यह इक्कावन रुपये लो दान, रघुनी भाई।''

पूरी मंडली गद्गद हो उठी।

कुल मिलाकर ढाई सौ रुपये के लगभग उनके पास इकट्ठे थे। बड़े उत्साह से नाटक की शुरुआत हो गई थी। गांव के प्राय. अधिकांश लोगों ने पचास पैसे से लेकर दो रुपये, चार रुपये तक से मदद की थी। भाई जी की रकम एहसान की तरह सबसे ऊपर थी। इनकी विशेषता यह थी कि किसी को भी बड़ी-से-बड़ी रकम बिना लिखा-पढ़ी के यों ही उठाकर दे देते थे। इन लोगों ने भी भाई जी को कोई रसीद नहीं दी और भाई जी ने भी इसके लिए कोई मांग नहीं रखी।

नाटक अपनी भाषा, भोजपुरी में था। किसुन ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। शाम को मंडली के सभी लोग मन्दिर पर कनेर-गाछ के नीचे बैठ जाते थे और मिल-जुलकर उस पर बातें करते रहते थे। किसुन पढ़ा नहीं था। मैट्रिक करने के बाद घर पर ही रहता था। होरिल भी जल्दी ही पलटन से रिटायर होने वाला था। किसुन को होरिल पत्रों में बराबर कोसता रहता था, निकम्मा घर पर बैठा रहता है; परन्तु किसुन भी क्या करे? कुछ करने के लिए क्या है? न नौकरी मिल पाती है, न जमीन-जायदाद ही इतनी है कि खेती-बारी जमकर की जाए। नाटक-मंडली में किसुन को [illegible] उत्साह जरूर मिला है। किसुन नाटक पढ़कर [illegible], तो लोगों को बड़ा अचरज [illegible] का यह लड़का तो होरिल [illegible] होते थे। पता [illegible] जुड़ाव कैसे था। होरिल

मन्दिर पर कनेर गाछ के नीचे ही सयाना हुआ था या पुजारी जी का उस जन्म का सचमुच मे बेटा था।

रिहर्सल तो शुरू हो गया था, परन्तु एक समस्या बहुत जबर्दस्त थी। नाटक मे एक लड़की भी थी, जो जवानी मे ही विधवा हो गई थी। पहले तो उन्होंने बहुत कोशिश की कि नाटक से लड़की-औरत का झमट ही मिटा दिया जाए, लेकिन अब बड़ा मुश्किल हो गया था। उस लड़की को हटा देने से बात ही बिगड जाती थी। लड़की को नाटक से हटाना जितना कठिन था, उतना ही कठिन उसका पार्ट भी था। सनीचर तो तैयार था कि मेरी औरत विधवा का पार्ट करेगी लेकिन उसे भोजपुरी बोलने मे कठिनाई थी और गाव मे मच पर उतरने का मतलब है, आधी और तूफान। आखिर में किसुन का ही एक साथी लड़की का पार्ट करने के लिए तैयार हो गया।

पुजारी जी रिहर्सल मे कभी-कभार आकर बैठ जाते थे और उनकी बातें सुनकर हसते रहते थे। मन्दिर का सौभाग्य था कि वहा बराबर कुछ-न-कुछ होता रहता था और कुछ नही तो रामायण की कथा ही शुरू कर देते। गाव-जवार के दूसरे-दूसरे जवान-बूढ़े भी मन्दिर पर बराबर आते-जाते रहते थे। सीतापुर से सुकुल जी के घर के बगल का ही रामसिंगार भी आता था। रामसिंगार अच्छा-खासा नौजवान था। उसने भी अपने गांव से साठ-सत्तर रुपये इकट्ठा कर किसुन को दिए थे। दरअसल उस जवार मे यह पहला मौका था, जब कुछ लोग मिल-जुलकर खुद ही नाटक करने वाले थे। अभी तक तो उन्होने विवाह-शादी मे नौटकी देखी थी या कभी-कभी कोई रामलीला पार्टी आती थी, तो उनका मनोरंजन होता था। इसलिए नाटक करने वालो के लिए ही नही, गाव-जवार वालों के लिए भी नाटक एक नई चीज थी। किसुन, सनीचर और रघुनी का

"रिहर्सल शुरू है।"

भाई जी उठकर अन्दर गए और दो-चार मिनट के बाद निकलकर आए और बोले, "मेरी तरफ से यह इक्कावन रुपये रख लो दान, रघुनी भाई !"

पूरी मंडली गद्गद हो उठी।

कुल मिलाकर ढाई सौ रुपये के लगभग उनके पास इकट्ठे थे। बड़े उत्साह से नाटक की शुरुआत हो गई थी। गाँव के प्रायः अधिकांश लोगों ने पचास पैसे से लेकर दो रुपये, चार रुपये तक में मदद की थी। भाई जी की रकम एहसान की तरह सबसे ऊपर थी। इनकी विशेषता यह थी कि किसी को भी बड़ी-से-बड़ी रकम बिना लिखा-पढ़ी के यों ही उठाकर दे देते थे। इन लोगों ने भी भाई जी को कोई रसीद नहीं दी और भाई जी ने भी इसके लिए कोई माँग नहीं रखी।

नाटक अपनी भाषा, भोजपुरी में था। किसुन ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। शाम को मंडली के सभी लोग मन्दिर पर कनेर-गाछ के नीचे बैठ जाते थे और मिल-जुलकर उस पर बातें करते रहते थे। किसुन पढ़ा नहीं था। मैट्रिक करने के बाद घर पर ही रहता था। होरिल भी जल्दी ही पलटन से रिटायर होने वाला था। किसुन को होरिल पत्रों में बराबर कोसता रहता था, निकम्मा घर पर बैठा रहता है; परन्तु किसुन भी क्या करे ? कुछ करने के लिए क्या है ? न नौकरी मिल पाती है, न जमीन-जायदाद ही इतनी है कि खेती-बारी जमकर की जाए। नाटक-मंडली में किसुन को नया उत्साह जरूर मिला है। किसुन ने जब नाटक पढ़कर सुनाया था, तो लोगों को बड़ा अचरज हुआ था। आमतौर से पुजारी जी का यह लड़का तो होरिल की तरह ही तेज निकलेगा। मन-ही-मन खुश भी होते थे। ...होरिल के साथ उनका पुत्रवत् जुड़ाव जैसे था। होरिल

न्दिर पर कनेर गाछ के नीचे ही सयाना हुआ था या पुजारी ी का उस जन्म का सचमुच मे बेटा था।

रिहर्सल तो शुरू हो गया था; परन्तु एक समस्या बहुत *ज़बर्दस्त थी। नाटक में एक लड़की भी थी, जो जवानी मे ही* वधवा हो गई थी। पहले तो उन्होंने बहुत कोशिश की कि ाटक से लड़की-औरत का झंझट ही मिटा दिया जाए, लेकिन ह बड़ा मुश्किल हो गया था। उस लड़की को हटा देने से बात ी बिगड़ जाती थी। लड़की को नाटक से हटाना जितना कठिन ा, उतना ही कठिन उसका पार्ट भी था। सनीचर तो तैयार था कि मेरी औरत विधवा का पार्ट करेगी लेकिन उसे भोज-पुरी बोलने मे कठिनाई थी और गाव मे मच पर उतरने का मतलब है, आंधी और तूफान। आखिर में किसुन का ही एक साथी लड़की का पार्ट करने के लिए तैयार हो गया।

पुजारी जी रिहर्सल मे कभी-कभार आकर बैठ जाते थे और उनकी बातें सुनकर हंसते रहते थे। मन्दिर का सौभाग्य था कि वहां बराबर कुछ-न-कुछ होता रहता था और कुछ नही तो रामायण की कथा ही शुरू कर देते। गाव-जवार के दूसरे-दूसरे जवान-बूढ़े भी मन्दिर पर बराबर आते-जाते रहते थे। सीतापुर से सुकुल जी के घर के बगल का ही रामसिंगार भी आता था। रामसिंगार अच्छा-खासा नौजवान था। उसने भी अपने गांव से साठ-सत्तर रुपये इकट्ठा कर किसुन को दिए थे। दर-असल उस जवार मे यह पहला मौका था, जब कुछ लोग मिल-जुलकर खुद ही नाटक करने वाले थे। अभी तक तो उन्होंने बिवाह-शादी में नौटकी देखी थी या कभी-कभी कोई रामलीला पार्टी आती थी, तो उनका मनोरंजन होता था। इसलिए नाटक करने वालों के लिए ही नहीं, गांव-जवार वालों के लिए भी नाटक एक नई चीज थी। किसुन, सनीचर और रघुनी का

कहता था कि हम कुछ ऐसी चीज करना चाहते हैं, जो गांव-वालों से अलग सी चीज हो और गांववालों की स्थायी जिन्दगी को एक जबर्दस्त झटके का सामना हो। वे अभी नाटक की कथा को फैलाने के पक्ष में नहीं थे। सनीचर और रघुनी को भीतर-भीतर एक भय था कि नाटक के बाद कुछ लोग शिकायत भी कर सकते हैं। बिसुन सोचता था, दुनिया कितना आगे आ गई है; परन्तु गांवों में हरिजनों और औरतों के साथ बराबरी का व्यवहार क्यों नहीं है? रिहर्सल के बाद वे थोड़ी देर तक कल्पना करते रहते, अपने गांव में नाटक जैसा ही सबके दिन लौट आते, बिरादरी चुनकर ब्याह कर लेतीं और जमीन की केन्द्रीयता टूट जाती।

इस बीच एक बुरी घटना हो गई। मुकुल जी का लड़का तोमर मरा हुआ बगीचे में पड़ा हुआ था। हे, भगवान! यह सब कैसे हो गया? इतना-भर मालूम था कि उसका चाल-चलन अच्छा नहीं था। किसी भी जवान बहू-बेटी के साथ छेड़खानी करना उसके लिए आम बात थी। मौका पाकर किसी के भी घर में घुस जाता था। सच पूछिए तो लोग-बाग तंग आ गए थे। खासतौर से गरीब आदमी तो डर के मारे कुछ बोल भी नहीं सकते थे। कई बार उसे उन्होंने सेंध पर पकड़ लिया था। मगर फिर डर के मारे छोड़ दिया।

इन्हीं सब कारणों से उसका मन बहुत बढ़ गया था और सनीचर के घर में भी वह उसकी गैरहाजिरी में कूद पड़ता था। पता नहीं—सनीचर बहू डर से या मजबूरी से उसे सब कुछ क्यों ... बात है कि उसने सनीचर को ... उसे यह बात मालूम हुई, तो वह बहुत ... को यह बात समझ में नहीं आई कि उसे ... से ज्यादा खुशी क्यों है? वह उसे खींच-

कर खेतों की ओर ले गई और दोनों हाथ पकड़कर बोली, "आज हम खुलकर नाचें और गाएं। एक बहुत बड़ा पापी तुम्हारे यहां से उठ गया है।"

"चुपचाप रह!" सनीचर ने डांटा, "कोई सुनेगा, तो तुम्हें भी मार डालेगा?"

"मुझे क्यों मार डालेगा? मैं क्या पापी हूं?"

सनीचर हंसा, "गांव वाले तो यही समझते हैं। देखती नहीं, मुझे, तुम्हें या लड़कों को किस तरह व नफरत से ताकते हैं? क्या भरोसा, किसी दिन तुम्हें या बच्चों को ही मार डालें।"

"ऐसी बात है?" वह कांपने लगी, "लड़कों के साथ मुझे यहां से कहीं दूसरी जगह ले चलो।"

"कहां ले चलूं? जो भी होना होगा, हम यहीं रहकर सहन कर लेंगे।"

"हमारा लड़का रामनाथ भाई के यहां जिन्दगी-भर के लिए नौकर रह गया न?" वह रोने लगी।

"अभी मेरे वश में कुछ भी नहीं है। तुम्हें जहां जाना हो, चली जाओ।"

"अजीब गांव है। यहां अपना काम भी तुम स्वयं नहीं कर सकते, तो झूठ और बनावटी ठसके से क्या फायदा?"

कुछ भी हो, सनीचर बहू को ही नहीं, गांव के सभी कमजोर लोगों को उसकी हत्या से खुशी थी। गिरधारी मुकुल का भविष्य अन्धकारमय हो गया। घर की हालत ऐसी नहीं थी कि चुपचाप बैठ जाने से परिवार को दोनों जून की रोटी मिल जाए। एक ही लड़का था। अभी पर साल ही तो उसकी उन्होंने शादी की थी। घर में मूरत की तरह बहू है। उसका क्या होगा? मन्दिर पर रामसिंगार एक बात बोला था, ...

उसका ब्याह मेरे माथे लगा है, तो मैं तैयार हूं। गांव-घर में भी आंधी-तूफान उठेगा, उसे बर्दाश्त कर लूंगा।" पुजारी जी डांटकर मना कर दिया, सबके सामने ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

शोकाकुल सुकुल जी के कारण उन्हें नाटक पूरे एक महीने तक बन्द रखना पड़ा। उन्होंने ऐसा कोई उत्साह नहीं दिखाया, जिससे सुकुल जी को पीड़ा पहुंचे। एक महीने तक वे घर से नहीं निकले। चिट्ठी बांटने का काम प्रायः ठप रहा। उनके बदले एक आदमी कभी-कभी चिट्ठियां इधर-से-उधर कर दिया करता था। सुकुल जी महीने बाद जब कान्ह तले खाकी का थैला दबाकर पुनः दिखे तो नाटक-मंडली की सुगबुगाहट कुछ तरसाई। नाटक का रिहर्सल फिर से चालू हो गया।

किसुन कुछ-कुछ डरता था। डरने का पहला कारण यह था कि उसने नाटक तैयार किया था, "इसमें डरने की बात क्या है?" सनीचर ने उसे समझाया।

"सुकुल जी अपने ऊपर भी तो ले सकते हैं।"

सनीचर को कुछ-कुछ शंका हुई, परन्तु बोला, "क्यों नहीं अपने ऊपर ले सकते? क्या नाटक के आखीर में उस विधवा लड़की का ब्याह नहीं हो जाता?"

[illegible] ही क्या है?"

तो यही चाहता हूं नाटक रोक दिया जाए और ही है, तो सीता-हरण, रावण-वध, कुंअरसिंह, या लैला-मजनू करें, कोई ऐतराज [illegible]

करेगा।"

सनीचर कुछ सोच मे पड गया। बात तो यह लड़का ठीक ही सोचता है। अपनी कई तरह की मजबूरियां थीं, जिनकी वजह से उनका उत्साह टूटता रहता था।

"हमने जो पैसे इकट्ठे किए हैं, उनका क्या होगा?" रामसिंगार बोला।

"हम ये सारे पैसा लौटा दें।" किसुन की राय थी।

लगभग एक सप्ताह तक जब रिहर्सल रुक गया, तो पुजारी जी ने उन्हें फिर उत्साहित किया, "देखो, मेरे बेटो! कोई भी नया काम करने में बाधा आती ही रहती है। तब इसका मतलब थोड़े हुआ कि डरकर हम कोई नया काम नही करें।"

इसके बाद पुजारी जी ने उन्हें एक कथा सुनाई। उस कथा का इतना असर जरूर हुआ कि रिहर्सल चालू हो गया। पुजारी जी अब अधिक समय तक उनके साथ बैठने लगे थे। जहां कहीं सुझाव की जरूरत होती, वहां सुझाव भी देते थे। सनीचर का पार्ट छोटा होने के कारण खत्म हो गया था। वह जब भी कनेर गाछ से उठंगकर बैठता, उसे पिछली बातें याद आने लगतीं। सनीचर की उमिर यही बारह-चौदह साल रही होगी। होरिल और सनीचर इसी तरह बैठकर नये-नये सपने गढ़ा करते थे।

एक साल गांव मे रामलीला-मण्डली आई हुई थी। वे मन्दिर पर कई दिनो तक राम-लक्ष्मण बनकर रमपतिया दादी के साथ खेलते रहते थे। वे रमपतिया दादी के पावों पर गिड़गिड़ाते, 'कोसिला मइया! हमें बन जाने के लिए आज्ञा दो।' दादी हंस देती, 'सीता कहां है रे! सीता के बिना बनवास कैसे करोगे?' दोनों हंसने लगे थे।

एक दिन होरिल रामलीला के महंत जी के पास गया था। उस समय महंत हरमुनिया पर रियाज कर रहा था और राम

बनने वाला लड़का औरतों जैसे अपने लम्बे बालों को बो
कंघी से साफ कर रहा था। होरिल टुकुर-टुकुर ताक रहा
महंत ने पहली नजर में ही अनुमान कर लिया, अगर यह ल
साड़ी पहनकर मैदान में उतर जाए, तो फिर बड़ा महं
देखने वालों को मूर्छा आ जाए। उसने पूछा था, "क्या ना
हो?"

होरिल ने कोई उत्तर नहीं दिया था।

वह महंत जी से सटकर बैठ गया।

"आज राम-विवाह है, बबुआ! अपनी मतारी से कहना भगवान के विवाह में जरूर साड़ी चढ़ाएगी।"

"मेरी मां अपनी माई नहीं है।"

"सौतेली है?"

"हूं।"

"वह भी रामलीला में आती है न?"

"आती तो है; लेकिन मुझे बहुत मारती है।"

महंत चुप हो गया था और हरमुनिया फिर बजाने लगा था। होरिल की उमिर का ही एक लड़का सामने बैठकर गीत गा रहा था।

जब गीत खत्म हुआ, तो होरिल ने पूछा था, "बाबा! रामलीला में मुझे रख सकते हो?"

"काहे नहीं रख सकता। मगर तुम क्यों चाहते हो?"

"मेरी माई बहुत मारती है।"

"जब हम चलें, तो हमारे साथ चलना।"

"राम बना देना।"

"अभी से कैसे कहें।"

होरिल लौटकर चला आया था और महीनों तक राम का सपना देखता रहा था। गांव से रामलीला-मंडली चली

गई थी।

किसुन उसी होरिल का बेटा है। यह राम तो नहीं बन सका, मगर नाटक जरूर तैयार कर सका है। किसुन ने नाटक का नाम भी गजब का रखा है, 'गनपत राम का सपना'। राम के सपने से मिलता-जुलता नाम। कुछ लोग तो अभी तक मजाक उड़ाते हैं, यह भी कोई नाटक का नाम हुआ, गनपत राम का सपना ! छि:-छि: ! बिलकुल सड़ियल नाम है। नाटक नहीं, बच्चों का तमाशा है।

सनीचर ने कसकर उन्हें जवाब दिया, "यह दुनिया गजब है रे भाई ! जिस चीज को नहीं जानती, उसे बिना समझे ही मजाक उड़ाती है।···सुन रे भइया कबीर ! भले जी, भले।··· मैं कहता हू, बंगालिन है, चाहे बिहारिन। है तो मेरी औरत न ? गांव को तकलीफ काहे है ? रंडी है कि सती-साध्वी है, उसके बाप का क्या ? आखिर मेरे पीछे क्यों पड़े हैं ? रोज-रोज उनके घर-परिवार मे कुकर्म होता रहता है, उसे क्यों नहीं देखते ?···गाव का यह पुराना ढांचा कैसे चरमराएगा, हे पुजारी जी !" वह जोर से बुदबुदाया। मगर पुजारी जी तो उससे दूर बैठे थे। रिहर्सल देखने में इतने डूबे हुए थे कि ठाकुर जी की आरती उतारना भी भूलते जा रहे थे।

"आरती की बेला टलती जा रही है, बाबा !" सनीचर ने कनेर गाछ के नीचे से ही आवाज लगाई।

"हां रे, बेटवा ! लेकिन क्या अन्तर पड़ता है। मेरे लिए तो तुम्हीं सब ठाकुर हो और मैं तुम लोगों का चेला हू।" पुजारी जी हंसते हुए बोले।

"हम तो बहुत छोटे लोग हैं, बाबा !"

पुजारी जी घनी दाढ़ी के बीच खुलकर जो हंसे, वह हंसी अंधेरे मे किसी को भी नहीं दीखी, "दूसरी बार नाटक करता,

तो मुझे भी पार्ट देना मत भूलना।" पुजारी जी बोले।

नाटक-मंडली के सभी चौंक गए।

बारह-एक बजे रात तक मन्दिर पर हंगामा रहता।

सनीचर दिन-भर काम करता था और शाम होते ही मंदिर की ओर दौड़ जाता। बचपन से लेकर आज तक मंदिर पर पुजारी जी के साथ बड़ा आत्मीय लगाव था। जैसे पुजारी जी उस जनम के परदादा, दादा, बाप सब कुछ थे। गांव में जो ऊब होती थी, यहां आते ही मिट जाती थी। पुजारी जी की उमिर का किसी को भी पता नहीं। बूढ़े-पुरनिया कहा करते हैं, पुजारी जी सौ साल के हो गए हैं। चेहरे पर अभी तक जवानी जैसा तेज है और शरीर कहीं से भी थका नहीं है। जगदीशपुर के बाबू कुंअर सिंह की कहानियां सुनाते हैं, खासकर अंग्रेजों के साथ लड़ाई की कहानियां। इनके बाबू जी इन्हें बचपन में सुनाया करते थे।

"....जब बाबू कुंअर सिंह को अंग्रेजों ने घेर लिया था, इसी गांव के रघुनी, होरिल, गनेसी के दादा लाठी-भाले लेकर बाबू की रक्षा के लिए दौड़ पड़े थे।...मंदिर बहुत पुराना है। बाबू ने ठाकुर जी की यहीं एक बार पूजा की थी।'

पुजारी जी ने फिर कहा, "अगली बार मैं नाटक तैयार करूंगा, सनीचर!"

"हम सभी उसमें पार्ट करेंगे, बाबा!"

पुजारी जी के प्रोत्साहन से उनका श्रम जारी रहा। बीच-बीच में ... की बाधाएं आती रहीं। मगर उन्होंने कोई ... नाटक की घोषणा कर दी गई। जवार-पथार ... फरहदगपुर वाले दशहरा के दिन मंदिर के ... खेलेंगे।

दशहरा का दिन करीब आता जा रहा था। सनीचर और रघुनी दुआर-दुआर जाकर नाटक के लिए सबको न्योता दे आए थे। भाई जी ने भी कम दिलचस्पी नहीं दिखलाई थी। मगर एक बात से मन को बड़ा क्लेश पहुंचता था। मुंह पर तो नहीं, मगर पीठ पीछे कुछ आदमी यह कहते कि रामनाथ भाई का सनीचर देवेन सिंह का हलवाहा है। यही सुनकर मिजाज छोटा हो जाता था। नाटक के लिए दिलचस्पी मर जाती थी।

भभीखन सिंह और भी निराश कर देते थे और कहते थे कि 'गनपत राम का सपना' यह भी नाटक का कोई नाम हुआ? वे गांव वालों का मन रह-रहकर तोड़ देते थे।

"मैं तो ऐसे नाटक पर थूकता हूं। गांव के लुच्चे-लफंगों की जमात बना रहा है सनीचरा!" भभीखन सिंह ने गरजकर एलान किया।

"मैं तो तमाशा देखने जाऊंगा कि लड़के कैसा करते हैं। रघुनी को मैंने इक्यावन रुपये चंदा दिया है।" भाई जी बोले।

भभीखन सिंह नाटक देखने नहीं आए।

मगर जवार-पथार से हजारों लोगों की भीड़ थी।

नाटक के बाद गांव में तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं हुईं। कुछ बुजुर्ग लोगों ने कहा कि गांव के लड़के गलत राह पर जा रहे हैं। इसमें आपस में भड़काने की बात कही गई है। अगर इसी तरह लोग आपस में बंट गए, तब तो एक-न-एक दिन इस गांव में भी महाभारत होकर रहेगा। औरतों, लड़कियों और छोटों को कमजोर आदमी के नाम पर बहकाने की कोशिश की गई है। रामनाथ भाई को पहली बार महसूस हुआ, जैसे उनकी नीयत पकड़ ली गई हो।

नाटक मंडली और खास तौर से सनीचर के मन में कोई भारी और अज्ञात भय घुस गया था। उसने कई दिनों तक भाई

ओं ने मुनासिब नहीं थी। उसे लग रहा था कि नाटक के खिलाफ जो भी घटना होगी, उसका सीधा असर सनीचर पर ही पड़ेगा। लोग उसके औरत-बच्चों को और भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। वह सामने देख रहा था, पुजारी जी का उत्साह बढ़ता जाता है। वे सनीचर के लिए लड़ाई में लगते हैं क्या?

रघुनी चमार को भाई जी कई दिनों से खोज रहे थे। उसे खबर लगी तो उनके दुआर पर सुबह पहुंचा।

"सलाम, मालिक !" उसने पूछा, "कोई आज्ञा है?"

"अरे, भइया ! आज्ञा क्या है?" भाई जी ने कहा, "कुछ काम था इसलिए खोज रहा था।"

"क्या मालिक ! मैं तो कल ही आता; परन्तु कई दिनों से बैल की तबीयत खराब थी। इसीलिए परेशान था।"

"क्या हुआ था? मुझे खबर क्यों नहीं दी। धरम-करम के मामले में मुझे ही तुम लोग भुला देते हो।"

"ऐसी बात नहीं, मालिक।" वह बोला, "अब बिलकुल ठीक हो गया है।"

भाई जी ने बात पलटकर अपने एहसानों की ओर उसका ध्यान खींचने की कोशिश की, "तुम अगर नहीं होते, तो मैं नाटक के लिए चंदा देता भी नहीं।"

रघुनी हठात् गद्गद हो गया, "समझता हूं, मालिक !"

"होरिल के लौंडे की क्या बिसात? फिर सनीचर तो आवारा आदमी है। पता नहीं, किसकी औरत भगा लाया है। उसका कोई विश्वास भी नहीं है।"

रघुनी की खुशी की सीमा फैलती जा रही थी। भाई जी सचमुच हीरा आदमी हैं। आजकल के युग में इनके जोड़ का आदमी मिलना मुश्किल है। दूसरों की तकलीफ से कितनी परेशानी है इन्हें। मन में कोई भेद-भाव नहीं। धरती ऐसे ही लोगों की किरपा पर तो टिकी है।

"आप न होते तो क्या नाटक हो सकता था? कितना तगड़ा विरोध था! लेकिन मालिक, ज्यादतर आदमी आज तक प्रशंसा करते हैं। आपका क्या खयाल है?"

"ठीक बात है।" भाई जी बोले, "अच्छी चीज की सभी प्रशंसा करेंगे।"

थोड़ी ही देर में वे नाटक से हटकर दूसरी-दूसरी बातें करते रहे। जब भाई जी ने समझ लिया कि रघुनी अब यहां से उठना चाहता है, तो वे बोले, "मुझे दो घण्टे के लिए तुम्हारा बैल चाहिए।"

रघुनी की हठात् आंखें वहां चली गईं, जहां रामनाथ भाई के बारहों बैल नाद पर झूम-झूमकर गवत खा रहे थे। इन्हें बैल की जरूरत क्यों पड़ गई? रघुनी के पास एक ही तो बैल है। इधर लड़के ने बहुत जोर दिया, तो एक बैल खरीद लिया है और मंगनी आदो के साथ साझे पर चलता है। बैल एक हफ्ते से बीमार था। अभी तो भाई जी से कह भी दिया कि बीमार था। तब भी इन्होंने बैल की फरमाइश क्यों कर दी? भूल तो नहीं गए कि रघुनी का बैल बीमार भी था। उसने ऊपर से खुशी दिखाते हुए पूछा, "बैल की बहुत जरूरत है क्या, मालिक!"

"अरे, हां, रघुनी!" उन्होंने कहा, मेरा एक बैल जरा कल ही से लंगड़ा रहा है। मुझे दो-तीन घण्टे के लिए तुम्हारा बैल चाहिए। आज जुताई बहुत जरूरी है।"

"जब इच्छा हो मंगा लीजिए, मालिक !" रघुनी कह
उठ गया। उसके पैर भारी होकर उठ रहे थे, जैसे दलदल
भीतर बुरी तरह फंस गए हों।

"तो सनीचरा के लौंडे को भेजूंगा, रघुनी ! बैल दे देना

"अच्छा, सरकार !"

पहली बार भाई जी के प्रति उसे कुछ झुंझलाहट हुई। वे कैसे समझ गए कि रघुनी का बैल बीमारी के बावजूद उनके लिए कारगर है ?

रघुनी का बैल सारा दिन चलता रहा, शाम को सनीचर का लड़का पहुंचा गया। बैल के सामने रघुनी जब पानी लेकर गया, तब बैल ने उसकी ओर ताका भी नहीं। चुपचाप गर्दन झुका ली। बैल पागुर बिलकुल नहीं कर रहा था। रघुनी ने कान छूकर देखा। अरे ! बैल को तो फिर बुखार है। वह जल्दी-जल्दी भोला सा'व की दुकान पर गया और कड़ू तेल और अजवाइन लेकर उसके बदन में मलने लगा। बैल एक बार जोर से खांसा। उसकी नाक से आधा किलो के बराबर खून आ गया था। यह क्या ? बैल थरथराकर गिर पड़ा। औरत, लड़के-फड़के अन्दर से दौड़कर आ गए और बैल को घेरकर बैठ गए। घर में रोना-धोना मच गया था।

सुबह होते-होते रघुनी का बैल मर गया।

रघुनी रोता-छछनता हुआ भाई जी के दुआर पर गया, "अब क्या करूं, मालिक ! बैल तो मर गया। मैं फिर रुपये कहां से लाऊंगा ? हे भगवान !..."

बार किसुन के मुंह से निकला, "यह भाई जी एकदम भीतर से साफ हैं, नम्बरी सूदखोर। जोंक की तरह सारा खून चूस लेंगे और पता भी नहीं चलेगा।

"हानिमाई सूदखोर निकल गया रे, रामसिंगार ! है कि नहीं ?" किसुन चिल्लाया।

"किसुना बिलकुल ठीक बोल रहा है। हमें सूदखोर रोकना बहुत जरूरी है। नहीं तो गांव वालों की आंखें नहीं खुलेंगी। लोग झूठ-मूठ उन्हें महात्मा ही बूझते रह जाएंगे।"

"अरे भाई जी बहुत होशियार आदमी हैं। जानते हैं, इस जमाने में जोर-जुलुम नहीं चल सकता। इसलिए प्रेम से ही नश्तर चुभाओ।"

"समय के साथ-साथ सूदखोरों का तरीका भी बदल जाता है न।" पुजारी जी पर नजर पड़ी, तो दोनों चुप लगा गए।

"जब से नाटक-वाटक खतम हुआ है, तब से सन्नाटा छाया है। यह चुप्पी अच्छी नहीं लगती, बेटो !" पुजारी जी आकर बैठ गए।

"हम लोग बहुत दुखी हैं, बाबा ! बेचारे रघुनी काका की कमर ही टूट गई है।" किसुन बोला।

पुजारी जी रघुनी को बहुत समझा चुके थे। उन्होंने कहा, "धीरज रखना चाहिए। घबड़ाने से तकलीफ और बढ़ती है। रघुनी कमाकर बाबू साहब के पैसे भर देगा।"

अंधेरा बढ़ने लगा था। पुजारी जी आरती की तैयारी करने लगे। रामसिंगार और किसुन हाथ जोड़कर खड़े हो गए। घण्टी की आवाज जैसे ही मिलती है, अगल-बगल से लड़के जुट जाते हैं। पुजारी जी आगे-आगे गाते हैं, पीछे से सभी मिल-जुलकर स्वर देते हैं, 'हे प्रभो ! आनन्ददाता, ज्ञान हमको

दीजिए। शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।'

धीरे-धीरे लड़कों की भीड़ छंट गई। पुजारी जी के साथ किसुन और रामसिंगार रह गए। कनेर की डालियों के भीतर से चन्द्रमा झांकने लगा था। गाछ के नीचे किसुन फिर उठग गया, "कोई कथा नहीं कहेंगे, बाबा ! मन एकदम नहीं लग रहा।"

"क्या सुनाएं बचवा !"

"कुछ भी, बाबा !"

पुजारी ने कथा शुरू की, "एक था राजा। राजा बड़ा ज़ुल्मी था। कोई कुछ बोलता तो टैक्स लाद देता। प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठी...।"

किसुन और रामसिंगार घटनाओं को आंखों के सामने उतारते जा रहे थे। पुजारी जी आगे कहने लगे, "यहां तक कि जेल में डलवा देता था, मरवा देता था। मगर राजा एक बात से बराबर दुखी रहता था..."

"कौन-सी बात बाबा !" रामसिंगार उठकर बैठ गया।

"रानी के अभी तक कोई लड़का नहीं हुआ था। राजा-रानी की फिकिर से तमाम दरबारी भी बहुत दुखी रहते थे। एक दिन की बात है, राज-ज्योतिषी को बुलाकर राजा-रानी ने अपना-अपना हाथ दिखलवाया और पूछा, 'महाराज ! हमारे करम में किसी लड़के का जोग है कि नहीं ?' ज्योतिषी बहुत हाथ उलट-पलटकर देखता रहा। बहुत सोच-विचार करने के बाद ज्योतिषी बोला, 'संयोग तो है महाराज ! लेकिन उपाय बड़ा कठिन है।' राजा खुशी से नाच उठा। उसने कहा, 'जल्दी बत-लाइए, महाराज। मैं वंश के लिए कुछ भी करने को तैयार हूं।' 'तो ठीक है,' ज्योतिषी कहने लगा, 'सोने के मन्दिर का निर्माण करने के बाद, जिस दिन आप पूजा करेंगे, उसी दिन रानी के

गर्भ रह जाएगा।' राजा की खुशी का ठिकाना नहीं था;... परन्तु नींव के अन्दर एक जवान आदमी या लड़के की बलि जरूरी थी।

'...राजा के लिए यह सब क्या मुश्किल बात थी।

"राजा ने राज-भर में मुनादी करवा दी जिसे पुण्य कमाना हो, वह अपना बेटा दान कर दे। मगर किसे अपना बेटा प्यारा नहीं था! कोई भी ऐसे पाप से पुण्य बटोरने के लिए तैयार नहीं था। राजा ने आधा राजपाट देने के लिए भी एलान कर दिया। तब भी कोई तैयार नहीं हुआ।

"...आखिरकार राजा के घुड़सवार छूटे।

"कई दिनों तक ढूंढते रहे। अन्त में एक बुढ़िया के पास गए। जो राज में सबसे गरीब थी। घुड़सवार उसी के बेटे को उठा लाए। बुढ़िया चीखती-चिल्लाती रही। मगर सुनता कौन है। बुढ़िया के लड़के को नींव में डाल दिया और देखते-ही-देखते मन्दिर खड़ा हो गया।

" राजा-रानी मन्दिर में पूजा करने के लिए गए। उसके ठीक नौ महीने बाद रानी ने एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया; लेकिन इसके बाद जानते हो, मेरे बच्चो! क्या हुआ?"

"क्या हुआ बाबा! उफ! साला राजा तो सचमुच में बड़ा जुल्मी था।" किसुन और रामसिंगार बोले।

पुजारी जी ने फिर आगे कहना शुरू किया, "लेकिन जिस दिन राजा-रानी अपने बच्चे को लेकर मन्दिर में एक साथ दर्शन के लिए गए, उस समय धरती कांपने लगी। मन्दिर की दीवारें थर्रा-थर्राकर गिरने लगीं। देखते-ही-देखते प्रलय जैसा दृश्य उपस्थित हो गया, जिसमें राजा-रानी का कहीं भी पता नहीं था। इसलिए जुलुम का हमेशा नाश होता है, बचवा!... किस्सा गया वन में, सूझो अपने मन में।..."

पुजारी जी उठकर अन्दर चले गए। सोने के लिए लोग मन्दिर पर टपकने लगे थे, "घर नहीं जाओगे, रामसिंगार।" किसुन ने पूछा।

"नहीं जाऊंगा।"

"रात अधिक होने लगी है। सीतापुर की ओर घुप्पा-घुप्प अंधेरा है।"

"घर में सभी मुझसे नाराज हैं।"

"तब चलो, मेरे साथ खाकर यहीं सो जाना।"

"एक गीत सुनाता हूं।" रामसिंगार बोला, "फिर हम चलेंगे।"

"सुनाओ।"

रामसिंगार गाने लगा :

"भाई रे···
दुनिया में जिए उहै, लड़े जे जिनिगिया से,
चूमे मुख ओकर मिनुसार।
रात दिन कूसे घोला,
सतुओ मोहाल होला,
कहो ना जिनिगिया रे, कायर इदिसिया के
सबके बरोबर अधिकार।
करम के नखमी मत अब सघोहऽ
अपना बल पर आसरा रखोहऽ
खेत-खरिहनियाँ में, मिल के मसिनियाँ में,
तोहरे पसेनवा के धार।
कागज के महया मा आन्ही के रोको,
नया-नया आदमी के नया काम होखो,
कान्हवा से कान्ह जोड़ो, हाथ से कुदरिया हो,

अपन कहना तुम ही अपार !

कहते है

मुझे तुम ओकर विनुगार !"

दोनों किसुन के घर से लौट कर आए तो अभी भी थके थे। रामसिगार और किसुन अलग-अलग बैठ गए।

"घर के लोगों से झगड़ा क्यों कर लेते हो ?" किसुन ने पूछा।

"कैसी बातें करते हो ?" रामसिगार झुंझलाया, "बाबू जी कहते फिरते हैं मैं नालायक हूं। मुझे खाली गाने-गाने में ही मन लगता है, लेकिन तू ही बोल किसुन ! न बाबूर मैंने है, न रोज-रोज किसी का प्यार ही होता है कि पुरोहिती करता रहूं। घर-घर कथा बांचने में तो मन ऊब गया है। बाबू जी को तो मैं फूटी आंखों भी अच्छा नहीं लगता हूं। तुम्हीं बताओ, मुझे उन्होंने ज्यादा पढ़ाया-लिखाया भी नहीं। कहते रहे, शहर में भजने के लिए पैसे नहीं हैं। अब मैट्रिक पास आदमी को कहां नौकरी मिलती है। कई बार पुलिस की भर्ती के लिए गया हूं, लेकिन हर बार छांट दिया गया।"

किसुन भी तो उसी बीमारी का मारा था। जमींदार का बेटा होते हुए भी अभी तक चुनाव नहीं हो सका है। उसने कहा, "हम दोनों कहीं चल दें और जब तक नौकरी नहीं लगती, तब तक गांव नहीं लौटेंगे।"

"मैं कुछ दिनों तक तुम्हारा साथ नहीं दे सकता, किसुन ! तुम्हीं अकेले जाओ।"

"क्या बकते हो ?" किसुन ने रामसिगार की ओर करवट बदल ली, "ऐसी क्या बात है, जो दोस्ती तोड़ना चाहते हो ?"

"है कुछ ऐसी बात, जिसे चाहकर भी अभी तक तुम्हें नहीं

बता पा रहा हूं।"

"मुझे भी नहीं बता सकते ?"

रामसिंगार बोला, "डाकमुंशी सुकुल की बहू है न, उससे ब्याह करना चाहता हूं। मेरा मन एकदम उसी में खोया रहत है।"

किसुन चौंककर उठ गया, "यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

"अच्छी बात तो है।" रामसिंगार ने कहा, "मगर हमारे कुल में तो विधवा-विवाह वर्जित है न। तुम लोगों के यहां तो चलता है। हम लोगों में जहां कहीं जानकारी मिली कि लोग कच्चे चबा जाएंगे।"

"यह बात तो है। मगर क्या वह भी तुम्हें उतना ही चाहती है ?"

"चाहने की बात क्या है ? वह तो परान भी देती है। कई बार कह चुकी है कि चलो, कहीं भाग चलें।"

"सचमुच ?"

"रिश्ते में भौजाई भी लगती है। इसमें हर्ज ही क्या है ?"

"उमिर क्या है ?"

"अभी बेचारी की उमिर ही क्या है ? सुकुल जी के बेटे को नहीं देखा ? वह ससुरा तो पापी था। जैसा था, वैसे जिन्दगी भी गई। मगर जिन्दगी-भर के लिए बेचारी को तड़पने के लिए छोड़ गया।"

"वह साला तो गुंडा था, गुंडा। गरीब की बेटी-बहिन के साथ खिलवाड़ करने का फल अच्छा मिल गया।" किसुन इतनी जोर से बोला कि रामसिंगार को उसे डांटना पड़ा।

"धीरे बोल। किसी ने सुन लिया तो गांव में बात फैल जाएगी। उस बेचारी की तो बात छोड़ दो। डाकमुंशी सुकुल हमारी जान ले लेंगे।"

'कुछ कह भी रहे। काफी रात हो गई है। उधर चन्दा भी डूबने लगा है।" किसुन फिर लेट गया। वह थोड़ी देर रामसिंगार से इधर-उधर की बातें पूछता रहा, फिर सो गया।

मगर रामसिंगार को नींद कहाँ आ रही थी। उसने सोने की बहुत कोशिश की, मगर सब बेकार था। आँख से पता नहीं और कहाँ गायब थी। मुकुन्द जी की पतोहू को अभी तक भोजन नहीं करा पा रहा है। परसों वह आँगन में आई थी, तो माई ने उसका हाथ पकड़ते समय देख लिया था। यह बात माई ने गांई बाबू जी को बता दी थी। बाबू जी इसी बात से ज्यादा खिसियाए मगन है।

रामसिंगार भी जानता है कि गिरधारी मुकुन्द की तुलना में बहुत ज्यादा कमजोर है। उनकी तरह अपने पास जमीन भी नहीं है। बाबू जी का खिसियाना इसलिए भी सही लग सकता है कि वे अपनी कमजोरी अच्छी तरह समझ रहे हैं। कहीं गिरधारी मुकुन्द की जानकारी में यह बात आ गई, तो मारने-पीटने तक की नौबत आ सकती है। मगर मुकुन्द जी ऐसी जवान पतोहू को छुड़ाकर क्या पाप नहीं करेंगे?

एक रात को रामसिंगार सबके सोने के बाद उसके घर में घुस गया था। रात-भर रहने के बाद भोर में निकलने लगा, तो रोती हुई बोली: "मुझे अपना बना लो रामसिंगार! मुझे भगाकर कहीं भी ले चलो और अपनी बेकस बनाकर रख लो। मैं जिन्दगी-भर तुम्हारी सेवा करती रहूँगी। इस तरह कब तक शरीर के साथ मुख उठाते रहोगे?" रामसिंगार कुछ भी बोल नहीं पाया था और धीरे से निकल आया था।

किसुन ने तो नाटक में बड़ी आसानी से विधवा का ब्याह करा दिया था; लेकिन उसके साथ क्या उतनी आसानी से सम्भव है? बड़ी लड़ाई लड़ने के बाद ही उसे हासिल किया जा

सकता है। इस लड़ाई में सीतापुर या फरहगपुर के कितने लोग साथ देंगे ? कुछ भी हो, जान देकर भी उसकी रक्षा करना रामसिगार का कर्त्तव्य है।

चांदनी पूरी तरह डूब गई थी। गांव के कुत्तों के भौंकने की आवाजें लगातार आ रही थीं। मन्दिर से लेकर गांव तक, तमाम लोग सो रहे हैं। एकदम स्याह-सन्नाटा था। किसुन भी उस तरफ मुड़ककर जोर-जोर से खर्राटे ले रहा था। क्या करे रामसिगार ? अब नींद कैसे आएगी ? करवटें बदलता है, फिर उठकर बैठ जाता है। अचानक सामने लाठी के सहारे पुजारी को आते देखकर रामसिगार चौंक गया।

"पुजारी बाबा !" रामसिगार ने टोका, "अभी तक सोए नहीं क्या ?"

"नहीं, नींद नहीं आती तो टहलता रहता हूं, बचवा ! इसी तरह रात-भर।" पुजारी जी कनेर गाछ के नीचे बैठ गए।

"मुझे भी नींद नहीं आ रही, बाबा !"

"काहे, रामसिगार ! तुम तो जवान आदमी हो। तुम्हें नींद क्यों नहीं आ रही है ?

"कैसे कहूं बाबा ! एक तकलीफ हो तब तो ,"

"कैसी तकलीफ, मेरे बेटे ?"

"बाबू जी नाराज हैं।"

"मैं उन्हें कल समझा दूंगा।"

रामसिगार डर गया। कहीं बाबू जी ने उन्हें सच्ची बात बता दी तब ? लेकिन पता नहीं क्यों उसे लग रहा है कि पुजारी जी बाबू जी को समझा-बुझाकर ठीक रास्ते पर ला देंगे।

पुजारी जी थोड़ी देर तक बैठकर भजन गाने लगे।

और रामसिगार उनके भजन में आनन्द लेता हुआ सो

गया, जैसे बच्चे को मतारी के मुंह से लोरी सुनते ही नींद आ जाती है।

सुबह नींद खुली तो धूप पहले से फैली हुई थी। मगर वहां किसुन के अलावा कोई भी नहीं था।

घर लौटते समय रास्ते में रघुनी से भेंट हो गई।

"कहां से, रघुनी काका !" रामसिंगार ने पूछा।

"तुम्हारे ही दुआर, सीतापुर से बबुआ !"

"का बात है ?"

"मुकुल बाबा ने खबर भेजवाई थी। कौलेसर बबुआ ने डेढ़ सौ रुपये भेजा था। वही लाने गया था।" रघुनी एक सांस में बोल गया।

"मनीआर्डर ? देखना काका ! सहेजकर रखना। दिन-दुनिया बड़ी खराब है। भभीखन सिंह के लड़के का रास्ता एकदम बिगड़ गया है।"

"झटपट सोचता हूं इसे भाई जी के पास पहुंचा ही दूं। कुछ तो भार हलका रहेगा। काहे, बबुआ !"

"काका की बात।" रामसिंगार बोला, "जरा भाई जी से होशियार ही रहना, बहुत चालू आदमी हैं। कहीं शून्य बढ़ाते मत चले जाए।"

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं धरम-करम में बड़े पक्के आदमी हैं।"

रामनाथ भाई रघुनी को देखते ही समझ गए कि रघुनी जरूर पैसा-कौड़ी के लिए आया होगा। तबीयत भीतर से हरिया गई थी। लेकिन तत्काल ख्याल आया नहीं-नहीं, अभी हाल ही में तो कौलेसरा ने डेढ़ सौ मनीआर्डर भेजा है। तो क्या मुकुल जी ने अभी तक नहीं दिया था ? मुकुल जी अक्सर ही करते क्या हैं कि रुपया-पैसा देर से बांटते हैं। अपना काम चलाते रहते हैं,

फिर जब दूसरे का मनीआर्डर आता है, तब पहलेवाले को खबर भेजकर बुलवाते हैं। यही सिलसिला शुरू से चलता रहता है। भाई जी मुसकराते हैं, समुर समझते होंगे मनीआर्डर आज ही आया है।

क्या करते बेचारे मुकुल जी ? उनकी भी तो लाचारी है। तरह-तरह के काम पड़ते रहते हैं। घर में कारूं का खजाना तो है नहीं कि काढ़कर निजी काम चलाते रहेंगे। यह तो अपनी माया और अपनी पैदाइश का फल है कि मुकुल जी डाकघर से रुपये लेकर काम चला लेते हैं। एक ही लड़का था बेचारे के, जिसकी दुश्मनों ने जान ही ले ली है। एक जवान पतोहू है। ससुरी मर जाती तो अच्छा था। एक लड़का भी नहीं हुआ कि मुकुल जी सबर कर लेते। कहीं इधर-उधर पांव फिसल गया, तो सीधे इज्जत ले डूबेगी। जवानी की तपिश बड़ी जानमारू होती है।

मुकुल जी बेचारे अपनी कोई बात रामनाथ भाई से छिपाते नहीं। भाई जी को मालूम था कि रुपये आए हुए हैं। इसीलिए मन में उठा हुआ उत्पात हठात् मर गया। कहीं लौटाने के लिए तो नहीं आ गया ? पूछा, "कहो, रघुनी ! घर-परिवार कुशल तो है ?"

"सब आपकी दया है, मालिक !" भाई जी के प्रति झुके हुए रघुनी बोला।

"कोई सेवा है ?"

"मालिक ! कुछ पैसे लौटाना चाह रहा था।"

भाई जी और भी विनम्र हो गए, "थोड़ा-थोड़ा लौटाने से न तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा, न मेरे लिए। अभी रखते क्यों नहीं, जब पूरे हो जायें, तो मुझे खुशी-खुशी लौटा देना।"

"दया कीजिए, सरकार !" रघुनी ऐसे गिड़गिड़ाने लगा,

तभी रघुनी की नजर भाई जी की मेहराह पर गई। किवाड के एक पल्ले से उठगकर झांक रही थी। अभी तो एकदम जवान है मलकिनी। अभी तो दो ही बच्चों की मतारी हैं, एक लडका है आठ साल का और दूसरी लडकी है छः साल की। बडी मलकिनी के रहते उठा लाए थे कहीं से। भाई जी की उमर साठ साल से कम नही थी।

कुछ चरवाहे सामने परती खेत मे भैंस चरा रहे थे। एक लडका भैंस की पीठ पर चुपचाप बैठकर बडे मगन होकर गीत गा रहा था :

"दादा लेखा खोजल दुलहवा, ए बाबू जी
अइसन देखवल दुख,
सपना भइल सुख,
सोनवा में वसल सोहगवा, ए बाबू जी
बुऊ से साढ़ी भइल,
घर पर हर चलवल हो बाबू जी
अबहूं छे कर खेत,
देखि के पुरान सेंत,
डोला काढ़ि मोलवा मोलइह मत बाबू जी
अबहूं से सब हुके,
मनवा में सचिलेई,
परिजाई बेटि के कलपनसा, हो बाबू जी
पढ़ल-गुनल भूल गइल,
सब दल भेड़ा भइल,
पूरि खाके छूरि देसि दिहनस, हो बाबू जी।"

भिखारी ठाकुर के गीत सबकी जुबान पर हैं। रघुनी मन

मिस से गीत की पंक्तियों में डूब गया था। बेटी बजार-बजार-कर बाप के सामने फँस रो रही है। गरीब आदमी और बेटी का कहीं भी गुजारा नहीं है। जिस खूंटे पर बांध दो, मुंह से आह तक भी नहीं निकलेगी। अभी-अभी छोटी मन्दाकिनी सामने पड़ी थी। उसकी एक-एक घटना रघुनी की आँखों में फैलती जा रही है। भिखारी ठाकुर ठीक ही तो कहते हैं। विपुल और रामगिरवर कहते हैं कि भिखारी हमारे यहाँ के जनकवि हैं। वे आदमी की अगाध पीड़ा को पहचानते थे। बाबू जी रुपये के लालच में बेटी को बेच देते हैं, कितने बड़े कसाई हैं! भाई जी दिन-प्रतिदिन अवश होते जा रहे हैं, परन्तु लोग ठीक ही कहते हैं क्या, कि धन की लिप्सा बड़ी खराब है। बुढ़ापे में ही ज्यादा जोर मारती है। कहीं भाई जी की भी तो यही मनोदशा नहीं है? शुरू के दिनों में तो ऐसे नहीं थे। सनीचर की सारी जायदाद डकार गए हैं, परन्तु लोग इसे एहसान ही मानते हैं कि भाई जी ने सनीचर सिंह को, शरण दी है। नहीं तो बुजात मेहरारू को कौन आदमी अपने टोले में बसने देता है!

वह लड़का अभी तक गीत में मगन था।

रघुनी ने भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया', 'बेटी-बेचवा', 'गंगा-स्नान', 'ननद-भौजाई', 'सुरबा' सारे नाटक देखे हैं। भिखारी अस्सी-पच्चासी की उमिर में भी पार्ट करते थे। ब्याह-शादी में उनका नाम सुनते ही जवार-पथार से हजारों की भीड़ लग जाती थी। वह लड़का 'बेटी-बेचवा' नाटक की एकबानगी गा रहा था। एकदम हू-ब-हू नकल कर रहा था। वह धुन और वैसी ही मस्ती। जी चाहता था घंटों तक सुनता रहे। करेज खखोर रहा था वह बित्ता-भर का लौंडा।

तभी भाई जी घर के अन्दर से बौखलाए हुए निकले, "सुन रहे न रघुनी! इन लौंडों की बोली? जितना ही परहेजो,

उतना ही सर चढ़ते जा रहे हैं ?"

भाई जी में रघुनी आज सब कुछ नया-नया ही देख रहा है। इतना सही गुस्सा उनके चेहरे पर कभी नहीं आता था। वह अचरज से बोला, "क्या हुआ, मालिक !"

"दुआर के सामने ही कैसे भद्दे-भद्दे गीत गा रहे हैं ?" भाई जी उसी तरह गर्मियाकर बोल रहे हैं, "मैं परती खेत में भी घुसना हराम कर दूंगा। बाप की जमीन है क्या ?"

"पटर का लड़का है, सरकार ! बड़ी सुरीली आवाज है।" रघुनी उनकी बात से सन्न रह गया था।

"गुंडा निकल रहा है न, किसी दिन बता दूंगा, समझे ?" भाई जी ऐसे गुस्सा में बोलते गए, जैसे वह उसी का लड़का हो। भाई जी भी जानते थे कि गीत भिखारी ठाकुर का ही है; परन्तु उन्हें लग रहा था कि गीत उन्हीं की मेहरारू की एवज में गा रहा है। एक-एक पंक्ति सुनकर वे चिढ़ते जा रहे थे।

रघुनी दौड़कर उस लड़के को मना कर आया। लड़का डर के मारे स्याह पड़ गया। दूसरे सभी चरवाहे अपनी-अपनी भैंस हाकते हुए वहां से भागने लगे।

"अब से ऐसी गलती कभी नहीं करेंगे, मलिकार !" रघुनी ने लौटकर कहा।

"पटर को समझा देना, पर निकल रहे हों तो कतर दूंगा।" भाई जी अभी तक चिढ़े हुए थे।

रघुनी तजवीज कर रहा था कि बात कैसे बदली जाए। इस बीच भाई जी का लड़का आकर कहने लगा, "बाबू जी ! माई कहती है कि हमें आज ही मामा के घर पहुंचा दीजिए। नहीं तो हम खुद चले जाएंगे।"

"अचानक क्या बात हो गई, बेटे !"

"बड़ी माई यहां रहेगी, तो हम लोग नहीं रहेंगे।"

भाई जी को रघुनी के सामने लाज आने लगी। उन्होंने कहा, "अभी जाओ। फिर कभी आना।" कहकर वे अन्दर मेहराह को मनाने के लिए चले गए। लड़का भी पीछे-पीछे गया।

घर के अन्दर महारानी जी पलंग पर चित लेटकर फफक रही थी। भाई जी आते ही लोर पोंछने लगे, "जो कहो मेरी महारानी ! मैं हर तरह से तैयार हूं।"

"मुझे नैहर पहुंचा दो।"

"क्या गलती हो गई मुझसे ?" उन्होंने हाथ में डेढ़ सौ रुपये पकड़वाते हुए कहा, "डेढ़ नोट भी ध्यान से रख दो। बड़ा तुम संभालकर रखती हो।"

"इस बुढ़िया को घर से निकालते हो या नहीं ?" मेहराह गरजकर दूसरी तरफ उलट गई।

"अरे, वह अब और कितने दिन जिएगी ? सारी जायदाद की मालकिन तुम हो या वह ?"

लगा कि वह धीरे-धीरे रास्ते पर आ रही है। भाई जी को उसकी दवा अच्छी तरह मालूम है। जहां कोप-भवन में गई, भाई जी नोटों से उसके पूरे शरीर को ढक देते हैं और वह भी अब मेहराह है कि रोते-रोते हंसी-खुशी में बदल जाती है।

भाई जी को इस मेहराह का एक दूसरा भी सहारा है। नैहर का पुरा है, जो समाचार लेने के बहाने आता रहता है। वहां से गाड़ी पर चावल लादकर भाई जी के ससुर के लिए लाता है। भाई जी मेहराह के सामने कुछ बोल नहीं सकते, वह कभी-कभी है होने देते हैं। पुरा का उनकी मेहराह से ... से ही सम्बन्ध है। पुरा भाई जी के ससुर के घर पर काम ... है। यहां जब आता है तब दो-तीन दिनों तक ... से आंख बचाकर घर में घुस जाता

है। असल बात यही है कि भाई जी का लड़का भाई जी से नहीं धूरा से ही पैदा है। लड़के का मुह धूरा से एकदम मिल जाता है। इधर कई महीने से धूरा यहां आया नहीं था। इसलिए भी भाई जी की नई महरानी उदास रहती थी और बात-बात मे चिढ जाती थी। उसकी सारी बेचैनी धूरा के लिए ही थी। वह बोली, "कल तक अगर नैहर का हाल-समाचार नही मंगाते हो तो मैं परसो नैहर भागकर चली जाऊंगी।"

"मैं क्या करूं? तुम्हारा नौकर धूरा भी तो आजकल नहीं आ रहा। किससे खबर भिजवाऊ?" भाई जी झुंझलाहट मे बोले।

"तुम्हारे पांव मे महावर लगा है क्या?" भाई जी के साथ उलझते समय उसकी सुन्दरता और स्वस्थ चेहरा भी अजीब विकृति मे बदल जाता था। शान्ति के क्षणो मे लगता नही कि यह वही महिला है जो भाई जी के साथ कर्कशा लगती है।

"कसम खाता हूं, मैं ही जाऊगा।"

वह रुपये और हैड नोट समेटकर सदूक मे बद करने लगी।

भाई जी के चित्त मे शान्ति मिल गई कि महारानी का कोप शांत हो गया है। कल आने पर देखा जाएगा। कल के आने मे अभी कई घंटे की देर है। उन्हें कई बरस पहले की घटना याद आ गई। यह घर था, जिसमे बाबू जी कई दिनो से अचेत पड़े थे। भाई जी अपनी पहली पत्नी के साथ तुलसी-गंगाजल लेकर उनके अन्तिम क्षणो का इन्तजार कर रहे थे, लेकिन निष्ठुर प्राण ही नही छूट रहा था, उन्हें कसकर पकड़ हुए था। रह-रहकर चेतना लौट आती थी। जब-जब चेतना लौटती वे चिल्ला पड़ते, बबुआ, तुम कहां हो?' भाई जी दौड पड़ते। वे इनका हाथ अपने हाथो में ले लेते और कहने लगते 'बेटा!

मेरी यही मंशा रही कि गांव में ज[illegible] पांव रखूं, वह पांव अपनी ही धरती पर पड़े। मैं इस दुआर से लेकर सीधे बधार की ओर चलूं, तो अपनी ही धरती पर चलूं। बीच में गैर की जमीन मिल जाए और उसे तुमने हड़प नहीं लिया, तो तुम्हें असल बूंद का पैदा नहीं समझूंगा। मेरे माथे पर हाथ रखकर कसम खाओ कि तुम मेरा सपना मरते दम तक पूरा करोगे।' कहते हुए वे भाई जी के हाथ को अपने माथे पर झटाक से मार लेते थे।

भाई जी भी डबडबाकर कहते, 'मैं कसम खाता हूं बाबू जी! मरते दम तक आपका सपना पूरा करूंगा।' उनके मरते ही भाई जी को जमीन हड़पने का नशा छा गया था। आज तक वे उसी दिशा में बढ़ते रहे हैं। फर्क इतना ही है कि बाबू जी से इनका रास्ता भिन्न है; परन्तु मंजिल तो एक ही है। बदलते हुए जमाने के कारण भाई जी को जोर-जुलुम के रास्ते को छोड़ना पड़ा है।

थोड़ी देर तक बैठकर इधर-उधर की बातें सोचते रहे। औरत के बारे में समझ गए कि घर के काम-काज में मगन होती जा रही है, तब झोला कंधे से लटकाकर किसी दूसरे के दुआर की ओर निकल गए।

•

अरहर के खेत के एक तरफ से सनीचर की बहू निकल रही थी, दूसरी तरफ से सभाधन सिंह के सपूत राम जी। भाई जी दिशा-फराकित के बयान से आरी पर बैठकर खैनी मल रहे थे। अभी लोटा उठाकर अरहर में सरपट घुसने ही वाले थे कि

सनीचर बहू की नजर ने उन्हें अपनी तरफ खींच लिया।
वे जोर-जोर से डाकने लगे, "का रे सनीचरा बहू ! परहंगपुर का पानी उतारने मे तुम्हें क्या मजा मिलता है ?"
भाई जी अवाक् रह गए। लोटा उनके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर गया और पानी पांव के चारों तरफ बहने लगा। सनीचर बहू इसी तरफ आ रही है। यह तो रंडी से भी गई-गुजरी लगती है। अब भाई जी पर हमला करने वाली है क्या ? भाई जी ने अपने मन को बड़े साहस के साथ कस लिया और लोटा छोड़कर आगे बढ़ने ही वाले थे कि सनीचर बहू हवास की तरह चली आई। उसकी आंखें लाल थीं और रूप-लावण्य के कारण मुंह सूरज के गोले की तरह चमक रहा था। भाई जी ने झटपट उसकी बांह पकड़ ली और अपनी तरफ खींचने लगे, तो फिर एक बार जोरों से चीखी। इसी तरह थोड़ी देर पहले भी चीखी थी, जब राम जी ने पता नहीं कहां से आकर उसका हाथ पकड़ लिया था।
भाई जी ने डरकर उसकी बांह छोड़ दी।
"इस गांव के तुम सभी डाकू ही हो क्या ?" सनीचर बहू रोती हुई बोली, "राम जी का यह दूसरा मौका है। पहली बार तो चुपके से रात मे दोमुहे में घुस आया था। तब से बराबर पीछा ~~करता~~ रहा। आज जब मैं दिसा-फरागित के लिए यहां आई, तो चुपके से चला आया। अब तुम्ही बताओ, भइया ! जी ! तुम लोग अपने गांव मे रंडी रखना चाहते हो क्या ?"
भाई जी का कलेजा धक्-धक् कर रहा था। उनकी जिन्दगी में यह आठवां अवसर था, जब अपनी दोनों औरतों के बाद फिर किसी औरत पर उनका मन डगमगाया था। वह भी बुढ़ौती में छोटे भाई की मेहरारू पर; लेकिन यह सब तो कहने की चीज है। विश्वामित्र जैसे ऋषि महात्मा भी मेनका

के सामने झुके थे। भाई जी तो संसारी पुरुष हैं। संसार में
यह सब चलता ही रहता है। स्वर्ग और धरती के मिजाज
समता के कारण उनका साहस फिर वापस आ गया; लेकि
सनीचर बहू कड़ककर बोली, "सुन लीजिए, भइया जी ! अ
को जहां कुछ हुआ कि लोटा उठाकर चला दूंगी।"

"तुम्हें थोड़ी भी लाज-शरम नहीं है का रे सनीचर बहू !
भाई जी उलटे धौंस जमाने लगे।

सनीचर बहू गुस्से से हांफ रही थी। उसने ऐसा लोट
चलाकर मारा कि भाई जी वहीं माथा पकड़कर बैठ गए औ
भोंकार पारकर रोने लगे। खून टपककर उनकी चादर औ
धोती खराब करने लगा। सनीचर बहू वहां ठहरी नहीं। भा
जी का लोटा उठाकर घर की ओर चल पड़ी।

उसने घर पर सनीचर को सारी बातें बता दीं। सनीच
बोला, "यह तुमने अच्छा काम नहीं किया। लोटा लेकर क्यो
चली आई ? अभी पुलिस बुलाकर पकड़वा दें तब ?"

"तुम्हारे गांव में तो एक पल के लिए भी जीना मुश्किल
है। जिधर ताको, उधर ही सूअर खड़े हैं। तुम चूड़ियां पहन-
कर चुप लगा जाओ। मैं यहां से कहीं चली जाती हूं।

"कहां जाओगी ?"

"कहीं भी।"

"फिर ये लड़के ?"

"इन्हें साथ ले जाऊंगी।"

सनीचर बहू चाहे जिस भावना से यह बात बोल रही
हो, मगर सनीचर को थोड़ी देर के लिए अच्छी लगी। उसकी
नकरी की का कांटा तो यही औरत है न ? उसने मन-ही-मन
तय कर लिया, यह चली जाए, इसीमें कल्याण है। अकेले मौट-
धारा है तब ते गांव में दूसरी कोई निवास है ही नहीं।

सुकुल जी, भभीखन सिंह और इनसे भी ऊपर पूरे घाघ हैं
रामनाथ भइया भी। बुढ़ौती में ताव आ गया, तो पराई औरत
की बाह पकड़ ली। सनीचर बहू गांव छोड़कर चली तो जाए
भभीखन सिंह के रमजोअवा का सिर नहीं उतार लिया, तो
असल बूंद का पैदा नहीं। जी मे आया कि अभी रामजी से
जाकर पूछ ले जोर-जबर्दस्ती का ही विचार है तो सिर कटवाने
के लिए तैयार रहो। मेरी औरत तुम्हारे पीछे मरती हो तो
तुम्हें इसे सौंपने में मुझे कोई एतराज नहीं है। मगर जब तुम्हा
चेहरे से ही कांपने लगी है, तब गुड़ई पर क्यो उतारू हो
अपनी बहन के बारे मे नहीं सोचते कि रात-भर मेरे साथ पलान
मे पड़ी रहती थी और मैं घर जाने के लिए भी कहता था, तो
नहीं जाती थी।

मेहरारू भुनभुनाती रही और सनीचर चुपचाप देवन सिं
का हल-बैल लेकर खेत पर चल दिया। उसने विचार कर लिया
था कि मेहरारू से पीछा छुड़ाने का यही उपाय है कि कुछ दिन
के लिए उससे बोल-चाल एकदम छोड़ दे। क्या हर्ज है, दो दि
भूखा नहीं रह सकता क्या, परन्तु अभी भूखा-प्यासा दोपहर भी
नहीं गुजरा था कि देखा, वह एक हाथ मे पानी और माथे प
थाली लिए चली आ रही है। पता नहीं इस दृश्य से सनीचर के
मन से कैसे गुस्सा कम हो गया था और प्यास महसूस होने लगी
थी। उसने अपने होंठ कई बार चाटे। प्यास और भी तीव्र हो
जाती थी।

मेहरारू आई और हंसती हुई आरी पर धम से बैठ गई
वह ऐसी खुश और उन्मुक्त नजर आ रही थी, जैसे उसके सा
कोई व्यथा ही नहीं हो। कुछ देर तक जब सनीचर करीब नहीं
आया, तो उसने दौड़कर हल की मूठ पकड़ ली।

"थोड़ी देर तब मैं चलाती हूं तुम खा लो।" वह मुस

कराती हुई बोली।

"ऐसी बात करती है? मेरे देश में यह सब नहीं चल सकता।"

"तब थोड़ी देर के लिए मुझे छोड़ दो। मैं यहीं रहूँगी।"

वह सनीचर का हाथ पकड़ कर आँगन में आई। सनीचर चुपचाप सिर झुकाए रोटियाँ तोड़ता रहा, परन्तु मेहराङ इतनी देर तक इंतजार नहीं कर सकी कि वह चुपचाप खाना खाता रहे। उसने कहा, "आज सुबह भइया जी ने तुम्हारे बबुआ पर हाथ छोड़ दिया है।"

सनीचर चौंका। उसके मुंह में रोटी अटक गई, "क्या रामनाथ भइया ने मेरे बेटे मनोहर को अपने हाथों मारा है?"

"और क्या?" वह बोली, "गोबर काढ़ने में देर हो गई थी। इसलिए उनको गाय-भैंस चराने में कुछ विलम्ब हो गया। बस, इसी पर।"

"मैं रामनाथ भइया के हाथ तोड़ दूंगा!" सनीचर चिल्लाया।

मेहराङ हंस पड़ी, "अगर ऐसा हुआ, तब तो तुम्हारे गांव में गजब हो जाएगा। क्या सचमुच ऐसा होगा?"

"तुम देखती तो जाओ कि अब क्या हो रहा है। बर्दाश्त की भी एक हद होती है। मनोहर कहां है?"

"उन्हीं के ढोरों को लेकर लड़कों के साथ चरवाही में निकल गया है।"

रामनाथ भाई का चेहरा बड़ा खौफनाक होकर सनीचर के सामने नाच रहा था। उसने रामनाथ भइया को मैदान से लौटते देखा था। मगर यह नहीं जानता था कि उसी की मेहराङ को देखकर बहक गए थे। अच्छा किया मनोहर की महतारी ने डंडा चलाकर मिजाज ठंडा कर दिया।

सनीचर को हंसी छूट रही थी कि रामनाथ भाई इतने डरपोक हैं कि औरत के हाथ से मार खाते ही अरहर की खूंटियों की परवाह न करते हुए बदहवास भाग रहे हैं। एकदम घोड़ा-पड़ोस की तरह। इसी तरह एक बार गनेसी बहू के साथ भी हुआ था। रामनाथ भाई इसी तरह मैदान के लिए अरहर के खेत में घुस गए थे और गनेसी बहू मैदान पर बैठी थी। डंठलों की पड़ापड़ आवाज से सुबल राम आरी पर झुककर भीतर झांक रहा था। उस पर गनेसी बहू हाथ में ईंट लिए गाली बुदबुदा रही थी। इस परस्पर विरोधी लीला को देखकर सुबल हतप्रभ था।

रामनाथ सिंह के निकट आते ही सुबल जोर से बोला, 'सलाम बाबू साहेब !'

भाई जी उसके व्यंग्य से तिलमिला गए थे और जोर से वे भी चिल्लाए थे, 'का रे सुबला ! तू इस भरी दुपहरिया में मरने के लिए कहा से आ गया है ? तुम सबकी बेटी-बहिन के मारे तो दिसा-फराकित भी मुश्किल है। बधार में जिधर ताको, हाथ में हंसुआ-खुरपी लेकर आरी पर बैठी है। सालो ! हम मैदान के लिए कहां जाएं ? तुम्हारे घर में ?' गुस्से के मारे बेचारे भाई जी की गर्दन फूल गई थी और खांसी उठ गई थी।

सुबल को असलियत समझते देर नहीं लगी थी। रामनाथ भाई की यह पुरानी आदत है। जवान औरत देखते ही बहकने लगते हैं। गनेसी बहू ने ईंट चलाकर मार दिया था। देखो इनकी बदमाशी ! रस्सी जल गई मगर, ससुर की ऐंटन नहीं गई। गनेसी बहू ने यही गलती की थी कि हसुआ धसा के आंख नहीं काढ़ा, ईंट ही मारकर चुप लगा गई थी।

मगर सुबल भी कम नहीं था। सनीचर मुसकराकर खाता जा रहा है और सोचता जा रहा है। सुबल ने फिर भाई जी को

सिखा दिया था, 'सूटी चुभनी चाहिए थी गोड़ में, यह
पर कैसे धस गई ए मलिकार !'

सनीचर को रामनाथ भाई के बारे में यह भी जान
कि जब अट्ठारह साल के थे तभी अंग्रेजी राज में टा
उन्हें पकड़कर खूब मारा था। बेचारे जंगलों, बगीचों,
के खेतों में मारा-मारा चल रहे थे। तब सूटी का बाप भी
गड़ा था।

ऐसे दुष्ट को सारा गाँव सुराजी समझता है। सुराज
के बाद बहुत दिनों तक कांग्रेस में रहे, फिर सोशलिस्ट पा
चले गए, परन्तु वहाँ भी मिजाज नहीं भरा, तो जन
स्वतंत्र पार्टी होते हुए फिर कांग्रेस में वापस आ गए। बीच-
में पार्टियाँ टूटती और फिर नये नाम से बनती रहीं।
रामनाथ भाई को अवसर हमेशा ठुकराता रहा।

इन्हीं सारी बातों के चलते उनका मन एकदम टूट
है। फिर भी जवार-पथार के लिए इनका बड़ा महत्त्व
खाली दानी-दधीचि होते तो कोई बात नहीं थी, मगर ब
भी चाहे जिस तरह का चुनाव हो, रामनाथ भाई जिधर चा
कांग्रेस के पक्ष में, विपक्ष में लाठी के बल पर मोड़ दे सक
है। उम्मीदवार चाहे जिस पार्टी का हो, उसे रामनाथ भा
की अगुआनी करनी ही पड़ती है। अब तो पार्टी-पोलिटिक्स
में उनका मन बिलकुल नहीं लगता, नाम सुनते ही चिड़चिड़
जाते हैं।

औरतों के साथ थोड़ा-बहुत आकर्षण रह गया है, नहीं तो
मन सम्पूर्ण सन्यासी हो गया है। औरतों के साथ कुछ कर तो
नहीं पाते। यही है कि अपने टूटे हुए मन को बाहु या आंचल
पकड़कर बहुधा लिया करते हैं, लेकिन सनीचर को भाई जी
एकदम घटिया आदमी लगते हैं। अब इस आदमी ने उस अपनी

चचेरी बहन को नहीं छोड़ा, तो किसे छोड़ेगा। कई बार मुकुल जी ने समझाया कि समय पलट गया है। अन्याय-बुराई के खिलाफ छोटे-गरीब सबके कान खड़े हैं। किसी जमाने में वे बर्दाश्त कर जाते होंगे। मगर अब तो कोई भी जान पर खेल जाएगा, मगर बर्दाश्त नहीं करेगा।

रामनाथ भाई की आदत तीन-चार साल से दब गई थी। उन्हें लोग 'भोला और मुराजी भोला' नाम से ही जानने लगे थे; परन्तु सनीचर बहू के साथ इस अभद्र कांड से गरीबों के कान फिर खड़े हो गए हैं।

"यह सुअरा एक-न-एक दिन जरूर मारा जाएगा।" सनीचर पानी पीने के बाद डकारते हुए बोला।

"कौन मारा जाएगा?" सनीचर बहू जैसे कहीं और जगह खो गई हो, इसीलिए अचकचाकर पूछा।

"बाबू रामनाथ सिंह।"

"वह तो तुम्हारा भाई है।"

"भाई नहीं, दुश्मन है।"

"मुझे तो यह रिश्ता बिलकुल समझ में नहीं आता।"

"ऐसा आदमी किसी का भी भाई नहीं होता, पगली! समझी?" पता नहीं सनीचर उसकी किस बात पर मोह गया कि उसके गाल को उंगली से छू दिया।

"धत्!" वह लजा गई और बोली, "कल सुबह मैं चली जाऊंगी, परन्तु तुम्हें हमें स्टेशन छोड़ने जरूर चलना पड़ेगा। नहीं तो मैं बहुत रोऊंगी।"

सनीचर अचानक चकरा गया, "मनोहर की मतारी! तुम अकेली नहीं जाओगी। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। यह गांव रहने की जगह नहीं है।"

"तब यहां कौन रहेगा?"

"रामनाथ सिंह।"

सचमुच यह गुजराती भाई नहीं, एक नम्बर क

है।"

उन्होंने तय कर लिया कि कल ही मुरद दोनों प्राणि

के साथ हमेशा के लिए गाँव छोड़ देंगे।

शाम को सनीचर प्रसाद मन हमवाही से नी

रामनाथ भाई के दुआर पंचइती थी। मुखिया, सर

अलावा सभी मेम्बर और गुरुजन जी भी थे। सारा गाँव म

भरा था। यहाँ तक कि औरतें भी अगल-बगल छिपकर पं

का फैसला सुनने के लिए बैठी थीं। रघुनी, रामसिंगार, कि

गुवन सभी एक तरफ गुमसुम और गुमसुम थे। पुजारी अ

खबर-पर-खबर दी गई थी, परन्तु वे नहीं आए।

रामनाथ भाई हाथ जोड़कर खड़े हो गए और कहने

"पंचो! फरहंगपुर गाँव की इज्जत अब नहीं रह सकत

सनीचर बहू का चाल-चलन अब किसी से छिपा नहीं है।

इसका गवाह हूँ। अभी कल ही की तो बात है। मैं मैदान

लिए सिवनी बधार की ओर गया था। जैसे ही फराक्ति

लिए बैठने वाला था कि देवन सिंह के अरहर के खेत में मज

घुस गई। सनीचर बहू किसी नौजवान की गोद में झूम रह

है।.. "

"यह एकदम बकवास और रामनाथ भइया की बदमाशी

है।" सनीचर बीच में ही काटते हुए गला फाड़कर चिल्लाया।

पंचइती में खलबली मच गई। यह क्या? यह तो पहली

घटना थी, जब किसी मामूली आदमी ने सीना खींचकर

रामनाथ भाई का विरोध किया था; लेकिन कुछ लोग यह भी

सोच रहे थे कि सनीचर सिंह उनका भाई भी तो है। क्या हर्ज

है इतना बोल ही दिया तो।

थोड़ी देर में लोग शान्त हो गए और मुखिया के आदेश पर रामनाथ भाई ने आगे कहना शुरू किया, "इसके बाद पंचो! मेरे जैसा सम्पूर्ण संन्यासी आदमी यह सब पाप कैसे देख सकता था। मैं भीतर घुस गया; लेकिन वह नौजवान खौरत भाग गया। मैं उसे पहचान नहीं सका। जब मैंने सनीचर बहू से उस नौजवान के बारे में जानना चाहा, तो इसने मुझे लोटा चला-कर मार दिया। यह देखिए ललाट।......" रामनाथ भाई ने अपने माथे की पट्टी को चारों तरफ प्रदर्शित किया।

लोगों को सही बात का पता था। इसलिए खलबली के बजाय रोष और चुप्पी थी। सनीचर तो क्रोध से कांप रहा था। वह बोला, "यह सरासर झूठ है पंचो! वह नौजवान कोई दूसरा नहीं, बल्कि रामनाथ भइया ही थे। मेरी मेहरारू दिसा-फराकित के लिए निकली हुई थी। रामनाथ भाई पता नहीं कहां से ताक रहे थे कि उसके बहुत निकट चले आए और उसकी बांह पकड़ ली। इसी बात पर मेरी मेहरारू ने रामनाथ भइया पर लोटा चला दिया। इतना ही कसूर है पंचो···!

"सुनते हैं न मुखिया जी, सनीचर की गुंडई!" रामनाथ भाई चिल्लाए। मगर मुखिया ने उन्हें शान्त कर दिया।

सनीचर बोला, "इस गांव में तीन ही अपराधी हैं पंचो! आज्ञा हो तो सबके सामने नाम खोल दूं।"

"अब तो नाम बताना ही पड़ेगा, सनीचर!" सरपंच ने कहा, "झूठा साबित होने पर पंच की जूती बर्दाश्त करनी पड़ेगी। तैयार हो न ?"

"एकदम सरपंच जी!"

"तब खोलो नाम सबके सामने।"

"पंचो!" सनीचर कहने लगा, "मन्दिर की ओर हाथ जोड़ता हूं। मेरी बातों में एक पैसा भी झूठ नहीं है। हमारे इस

"रामनाथ सिंह।"

"सचमुच यह सुराजी भाई नहीं, एक नम्बर का राक्षस है।"

उन्होंने तय कर लिया कि कल ही सुबह दोनों प्राणी बच्चे के साथ हमेशा के लिए गांव छोड़ देंगे।

शाम को सनीचर प्रसन्न मन हलवाही से लौटा तो रामनाथ भाई के दुआर पंचइती थी। मुखिया, सरपंच के अलावा सभी मेम्बर और मुकुल जी भी थे। सारा गांव खचाखच भरा था। यहां तक कि औरतें भी अगल-बगल छिपकर पंचों का फैसला सुनने के लिए बैठी थीं। रघुनी, रामसिंगार, किसुन अभी एक तरफ चुपचाप और गुमगुम थे। पुजारी जी खबर-पर-खबर दी गई थी; परन्तु वे नहीं आए।

रामनाथ भाई हाथ जोड़कर खड़े हो गए और कहने लगे "पंचो! फरहंगपुर गांव की इज्जत अब नहीं रह सकती। सनीचर बहू का चाल-चलन अब किसी से छिपा नहीं है। मैं इसका गवाह हूं। अभी कल ही की तो बात है। मैं मैदान के लिए मिलकी बधार की ओर गया था। जैसे ही फरागित के लिए बैठने वाला था कि देवन सिंह के अरहर के खेत में नजर घुस गई। सनीचर बहू किसी नौजवान की गोद में झूम रही है। "

"यह एकदम बकवास और रामनाथ भइया की बदमाशी है।" सनीचर बीच में ही काटते हुए गला फाड़कर चिल्लाया। पंचइती में सनसनी मच गई। यह क्या? यह तो पहली घटना थी, जब किसी मामूली आदमी ने सीना खोलकर रामनाथ भाई का विरोध किया था, लेकिन कुछ लोग यह भी सोच रहे थे कि सनीचर सिंह उनका भाई भी तो है। क्या हर्ज है इतना बोल ही दिया तो।

थोड़ी देर में लोग शान्त हो गए और मुखिया के आदेश पर रामनाथ भाई ने आगे कहना शुरू किया, "इसके बाद पंचो! मेरे जैसा सम्पूर्ण संन्यासी आदमी यह सब पाप कैसे देख सकता था। मैं भीतर घुस गया; लेकिन वह नौजवान फौरन भाग गया। मैं उसे पहचान नहीं सका। जब मैंने सनीचर बहू से उस नौजवान के बारे में जानना चाहा, तो इसने मुझे लोटा चलाकर मार दिया। यह देखिए ललाट।......" रामनाथ भाई ने अपने माथे की पट्टी को चारो तरफ प्रदर्शित किया।

लोगों को सही बात का पता था। इसलिए खलबली के बजाय रोष और चुप्पी थी। सनीचर तो क्रोध से कांप रहा था। वह बोला, "यह सरासर झूठ है पंचो! वह नौजवान कोई दूसरा नहीं, बल्कि रामनाथ भइया ही थे। मेरी मेहरारू दिसा-फराकित के लिए निकली हुई थी। रामनाथ भाई पता नहीं कहां से ताक रहे थे कि उसके बहुत निकट चले आए और उसकी बांह पकड़ ली। इसी बात पर मेरी मेहरारू ने रामनाथ भइया पर लोटा चला दिया। इतना ही कसूर है पंचो...!

"सुनते हैं न मुखिया जी, सनीचर की गुंडई!" रामनाथ भाई चिल्लाए। मगर मुखिया ने उन्हें शान्त कर दिया।

सनीचर बोला, "इस गांव मे तीन ही अपराधी हैं पंचो! आज्ञा हो तो सबके सामने नाम खोल दू।"

"अब तो नाम बताना ही पड़ेगा, सनीचर!" सरपंच ने कहा, "झूठा साबित होने पर पंच की जूती बर्दाश्त करनी पड़ेगी। तैयार हो न?"

"एकदम सरपंच जी!"

"तब खोलो नाम सबके सामने।"

"पंचो!" सनीचर कहने लगा, "मन्दिर की ओर हाथ

फरहंगपुर गांव के तीन ही कसूरवार हैं। जो कुछ भी अनहोनी, अन्याय या जुल्म होता है, उन सारी बातों के लिए यही तीन जिम्मेदार हैं। और ये हैं—रामनाथ भइया, सुकुल जी और भभीखन सिंह के सपूत रामजी सिंह।"

ऐसा दृश्य हो गया, जैसे मारपीट हो जाएगी। आज मालूम हुआ कि सनीचर सिंह के साथ भी कम आदमी नहीं हैं, बल्कि ज्यादा। रामनिवार, बिसुन, सुवन तो सबसे ज्यादा मुखर थे। गनेसी और रघुनी भी भीतर-भीतर कम गुस्से में नहीं थे। सुवन ने सोचा, पंचों के सामने कुछ साल पहले की घटना बेलाग उगल दें, परन्तु मर्यादा का मामला था। गनेसी गरीब की मर्यादा जाती। नहीं तो एक बार गनेसी बहू ने भी इनका माथा फोड़ा है कि नहीं ?

सुकुल जी से बर्दाश्त नहीं हुआ, तो उन्होंने अपनी चुप्पी तोड़ी, "बहुत बोल रहे हो सनीचर सिंह ! गांव में न मालूम कहां से एक कुलच्छन को उठा लाए हो। गांव-जवार की मर्यादा लूटने पर तुली हुई है। इसे गांव से निकाल बाहर करो !"

सनीचर ने कहा, "अपने बेटे को भूल गए क्या सुकुल बाबा ! मेरी औरत पर जो लांछन लगाएगा उसकी जीभ राख लगाकर खींच लूंगा। मैं भी फरहंगपुर में जान हथेली पर लेकर रह रहा हूं। अब देखता हूं, कौन माई का लाल मुझे इस गांव से निकालता है !"

"तुम्हारी मेहरारू को गांव छोड़ना पड़ेगा, सनीचरा !" सुकुल जी ने अपनी बात दुहराई।

"मेरे परिवार का कोई भी आदमी गांव नहीं छोड़ ।"

हूं, तुम कहां रहते हो, सनीचर सिंह !" रामनाथ

"यहीं रहूंगा, अपनी जमीन में और कहां ?"

"पंच से बड़ा तुम नहीं हो। पंच परमेश्वर होता है।"

"कल का पंच होता होगा, रामनाथ भइया ! जहां आप जैसे लोग हैं, वहां न्याय की बात क्या हो सकती है ? पंचो ! किसी को सजा ही देनी हो, तो रामनाथ भइया, सुरुल जी और रामजी सिंह को गांव छोड़ देने के लिए कहिए।"

सुरुल और रामसिगार बहुत ज्यादा बोल रहे थे। सरपंच और मुखिया के दिमाग में यह बात बहुत दूर तक थी कि रामनाथ भाई का खुलकर पक्ष नहीं लिया जा सकता है, क्योंकि जो प्रतिष्ठा कल तक थी कि एक भी आदमी चूं तक नहीं बोल सकता था, आज इनके खिलाफ गांव का चमार भी बोल रहा है। यह बदले हुए जमाने का नतीजा है। इसलिए लोगों को भरमाकर ही रामनाथ भाई का पक्ष लिया जा सकता है।"

सरपंच ने फैसला सुनाया, "भाई रे ! भाई जी साधु-संन्यासी आदमी हैं। वे ऐसा काम नहीं कर सकते। पंचों को यह विश्वास नहीं होता है। आपको भाई की नेकी मालूम है। रुपया, पैसा, शरीर सब कुछ से हमेशा आपकी भलाई के लिए तैयार रहते हैं। जरूरत पर जान देने के लिए भी तैयार रहते हैं। एक तरह से हमारे रामनाथ भाई हातिमताई हैं। इन्हें सरकार से तीन सौ रुपये पेंशन मिलती है। वह इस बात का सबूत है कि भाई जी सुराजी थे, टामियों से लड़े थे। इसलिए इनकी गलती का कोई सवाल ही नहीं है। सनीचर सिंह के लिए रामनाथ भाई ने क्या नहीं किया है ? मतारी का बड़े आदमी की तरह किरिया-करम किया। उस पर सनीचर सिंह का यह अछरंग कि भाई जी अपराधी हैं ? छिः··· छिः···!"

"भाषण नहीं, सरपंच जी !" रामसिगार ने बीच में टोका,

सनीचर चुप हो गया। उसके चेहरे पर कुछ चिन्ताएं लौट आईं।

रात में मन्दिर पर कनेर गाछ के नीचे सभी बैठे थे, रघुनी, रामसिंगार, सुबल, किसुन, गनेसी और पुजारी जी भी। सभी सनीचर की चिन्ता से दुखी थे। सनीचर थोड़ी देर से आया था।

"मुझे एक ही बात की चिन्ता है, रघुनी काका !" सनीचर ने कहा, "मेरे घर पर ये लोग बराबर कुछ-न-कुछ उत्पात करते रहते हैं। अब इनका उत्पात और तेज हो जाएगा।"

"एक उपाय है।" पुजारी जी बोले।

सभी आशा की किरण पाकर उनकी ओर लपक गए, फिर पुजारी जी ने कहा, "सनीचर का परिवार मेरे साथ रहेगा। यहां किसका वश चलेगा कि वह सनीचर बहू को यहां से निकाल देगा ?"

सबकी बांछें खिल गईं।

"बाबा ! मेरे लिए आप इतना बड़ा खतरा उठाएंगे ?"

"खतरे की बात से किसी की जिन्दगी की रक्षा का सवाल बहुत बड़ा है न, बचवा !"

सनीचर की आंखें डबडबा गईं।

"अब तुम कल ही बच्चों के साथ यहां चले आओ।" रघुनी चमार बोला।

"देवन सिंह हलवाही से हटाएंगे तो नहीं ?" किसुन ने पूछा।

सनीचर ने कहा, उन पर कई तरह के दबाव पड़ रहे हैं, लेकिन बाबू देवन सिंह अलबेला आदमी हैं। उन्होंने साफ-साफ कह दिया, 'सनीचर सिंह मेरा हलवाहा नहीं, घर का सवांग है। उसे हटाने या रखने का सवाल कहां है?' "

कुछ लोगों को यह बिलकुल खराब लगा कि पंचकूती बावजूद पुजारी जी ने अपने साथ सनीचर के परिवार को बर लिया है; लेकिन पुजारी जी उस इलाके में इतने प्रभावशाल थे कि उनका खुलकर विरोध करना आसान नहीं था। कहते ह पुजारी जी जब सात-आठ साल के थे, तभी नागा और साधुअं के झुंड के साथ इसी मन्दिर पर आए थे। तब से पुजारी ज घर-घर में ऐसे परिचित हो गए थे कि उनका मन यहीं लगने लगा और इसी गांव में रह गए। तब से पुजारी जी फरहंगपु गाव छोड़कर कहीं नहीं गए हैं।

अब तो लोग यही कहते हैं कि पुजारी जी की उमिर का कोई भी आदमी गाव में नहीं रह गया है। इनकी जोड़ी के सभी मर-खप गए हैं। गांव वाले भी ऐसे जुड़े हैं, जैसे वे उन्हीं के परिवार के हों। शुरू में जब यहां आए थे तब किसीको बाबा, किसी को काका, गांव की औरतों को मइया, काकी, दादी, बहिना कहते-कहते एकदम घरनैया हो गए थे। भोजन के समय जहां पहुंच गए, वहीं खा लिया। खाने-पीने में कोई भेद-भाव नहीं। आज तक पुजारी जी को किसी के साथ भी किसी तरह का भेद-भाव नहीं।

आज भी किसी के दरवाजे पर जब इच्छा होती है पहुंच जाते हैं और दुआर से ही आवाज लगाते हैं, 'बबुआ बहू! आज यहीं भोजन करूंगा। मेरा भी हिस्सा डाल देना।'

घरवाले इतने उल्लास से पुजारी जी का स्वागत करते हैं, जैसे भगवान ऊपर से पांव-प्याद चलकर दुआर पर आए हों। इसीलिए पुजारी जी का विरोध करने वालों को सनीचर बहू के हाथ का खाने की चिन्ता नहीं थी। चिन्ता थी कि पंचकूती की परवाह न कर पुजारी जी ने सनीचर बहू को शरण क्यों दी।

पुजारी जी रघुनी चमार के दुआर की ओर से लौटे आ

कुछ लोगों को यह बिलकुल अटपट लगा कि पंचों के
[illegible] पुजारी जी ने अपने साथ [illegible] के परिवार को [illegible]
लिया है, लेकिन पुजारी जी उस इलाके में इतने [illegible]
थे कि उनका सुनकर विरोध करना आसान नहीं था। [illegible]
पुजारी जी जब [illegible] साल के थे, तभी [illegible] और [illegible]
के गुरु के साथ इसी मन्दिर पर आए थे। तब से पुजारी
[illegible] में ऐसे [illegible] हो गए थे कि उनका मन यहीं [illegible]
गया और इसी गांव में रह गए। तब से पुजारी जी [illegible]
गांव छोड़कर कहीं नहीं गए हैं।

अब तो लोग यही कहते हैं कि पुजारी जी की उमिर [illegible]
कोई भी आदमी गांव में नहीं रह गया है। इनकी जोड़ी [illegible]
सभी मर-खप गए हैं। गांव वाले भी ऐसे जुड़े हैं, जैसे वे उन्हीं [illegible]
परिवार के हों। शुरू में जब यहां आए थे तब किसी को बाबा,
किसी को काका, गांव की औरतों को मइया, काकी, दादी,
बहिन। कहते-कहते एकदम परनैया हो गए थे। भोजन के समय
जहां पहुंच गए, वहीं खा लिया। खाने-पीने में कोई भेद-भाव
नहीं। आज तक पुजारी जी को किसी के साथ भी किसी तरह
[illegible]

को भी बुला लाती थी। पुजारी जी अजूबा-अजूबा कहानियाँ कहां से सुनाते हैं ? औरत-मर्दों की भीड़ दिन-प्रतिदिन शाम को मंदिर पर बढ़ती जा रही है। पुजारी बाबा रामायण, महा भारत से अलग-थलग तो नहीं सुनाते हैं फिर आज तक गाववालों को ऐसी जानकारी क्यों नहीं हो रही थी ? हलवाही में, खेत-खलिहान में लोग शम्बूक-वध की कथा आपस में दुहराते हैं।

"बाबा ! जब हम अपने धरम, जाति और पंथ पर सोचना शुरू करते हैं तब मस्तिष्क घूमने क्यों लगता है ?" सुबल के सवाल से सभी चौंके थे, परंतु पुजारी जी मुसकराकर चुप लगा गए थे।

वे जानते थे, ऐसी जगहों पर चुप्पी आदमी को उत्तर खोजने के लिए मजबूर करती है। पुजारी वातावरण के सघन दबाव को महसूस कर मौन तोड़ते थे, "मेरे बेटो ! जाति, धरम और पंथों में बटवारे के कारण ही तो तुम पर गहरे जुलम होते रहते हैं। इसी की असल पहचान नहीं होने के कारण तुम्हारे हाथ-पांव में लोहे की मजबूत बेड़ियां हैं।"

ग्यारह बजे तक मन्दिर की चौपाल खतम हो जाती थी। औरतें-मर्द अपने-अपने घरों को लौट जाते थे। खाली वे ही लोग मन्दिर पर रात में सोने के लिए रह जाते थे, जिनके पास न दालान है, न रात-भर गुजारने के लिए पलानी हो। रामसिंगार भी कभी-कभार अपने गांव पर जाने के बजाय यहीं सो जाता था। इन दिनों प्रायः वह घर नहीं लौटता।

कनेर गाछ के नीचे किसुन और रामसिंगार पड़े हुए थे,

कारण गांव-भर के लिए घृणा के पात्र भी बनते जा रहे थे। नौजवान तो उन्हें उलटकर भी ताकना नहीं चाहते थे।

पुजारी जी कनेर गाछ के नीचे बड़े गम्भीर और चिन्तित थे। उनके आसपास रामसिंगार, मुंगल, रघुनी, मनीचर, किशुन और कुछ दूसरे पन्द्रह-बीस लोग गोलबंद और गंभीर थे।

"अब हाथ-पर-हाथ रखकर सब कुछ सहते जाने का समय बीत गया है. बबुआ! अपने को मिल-जुलकर ताकतवर बनाओ, नहीं तो गांव में तीन-चार लोग ही रह जाएंगे।" पुजारी जी ने कहा।

मनीचर बहू मन्दिर के पीछे खड़ी होकर सारी बातें सुन रही थी। अचानक उसके मुंह से निकल गया, "पुजारी बाबा! जिन्दाबाद!"

अचरज और विस्मय से सारी आंखें उसी तरफ मुड़ गईं। धीरे-धीरे वह सामने आकर खड़ी हो गई थी, "बंगला देश में इसी तरह हम लड़ने के लिए संकल्प लेते थे, पुजारी जी।" वह तनकर बोली।

"कुछ समझा कि नहीं रघुनी! मनीचर बहू तुम्हें कैसे कह-कर जगा रही है। तुम्हारे साहस को आजमाने की घड़ी है। मनीचर बहू को कुछ भी हुआ, तो तुम सबों की जिन्दगी को धिक्कार है! मैं एक सच्ची कथा सुनाता हूं, सुनो!"

पुजारी जी पालथी लगाकर बैठ गए और भावुक की तरह कथा सुनाने लगे। कनेर के फूल उसी तरह टपक रहे थे। मगर सब के सभी इतने डूबे थे कि कनेर के झरने किसी को ख्याल नहीं थे। भावुक कथा के साथ सभी के रक्त में एक अजीब

मिसिर के यहां काम करते थे,बल्कि कहो कि मेरे दोनों मामा परीछन मिसिर के बन्धुआ थे। इन्हें छः महीने से कोई मजूरी नहीं दी थी और एक हफ्ता पहले से तो भोजन-पानी देना भी बन्द कर दिया था। मिसिर ने बनपाहा के थाने से पुलिस को बुलवा लिया और अपने घर के अहाते में ही पुलिस से उसने मेरे दोनों मामा को गोली मरवा दी।"

"बाप रे!" रामसिंगार घबराया। "ऐसा जुलुम! उस ससुरे को काटने वाला कोई नहीं था?"

"विधान सभा में यह सवाल उठा था। दारोगा को नौकरी से हटा दिया गया। मगर मिसिर को कहां कुछ हुआ? वह तो अभी भी बन्दूक कन्धे से लटकाकर गांव-गांव घूमता रहता है। जैसे उसने जिन्दगी में कोई अपराध ही नहीं किया हो।"

रामसिंगार की आंखों में नींद नहीं, गुस्से की लाल लकीरें तनी हुई थीं, जिन्हें अंधेरे में समझ पाना कठिन था। किसुन ने फिर कहना शुरू किया, "बेलछी की घटना तुम्हें मालूम है कि अग्नि-कुंड सजाकर ग्यारह लोगों को उसमें झोंक दिया गया। भागलपुर के पथहृदा की सारी घटना भी तुमसे छिपी नहीं है। आज भी यह सब क्या हो रहा है, रामसिंगार! अभी कल-परसों कोई अखबार में पढ़ रहा था कि हैदराबाद के किसी गांव में रामनैया नाम के एक अनुसूचित युवक को बेरहमी से इतना मारा कि उसकी वहीं मौत हो गई। उसके घर की दो औरतों को भी मारा गया और उनके साथ लोगों ने खूब बलात्कार किया। घटना यह थी कि एक चोरी के मामले में ऊंचे लोग उसे पकड़ ले आए थे। बेचारा चोर नहीं था, तो क्या बता सकता था? बाद में केरोसिन छिड़ककर उसकी लाश जला दी गई। जुलुम की तो अनन्त कथाएं हैं, रामसिंगार!"

काफी रात बीत गई थी। वे बेचैनी में करवटें बदलने थे

भूसे और घर लौटने का उत्साह मरा हुआ था, "चलो, कहीं भाग चलें किसुन ! मैं गांव में नहीं रह सकता।" औरत होता रामसिंगार तो इतना कहने के बाद ही रोने लगता।

"बाहर मतलब कहां ?" किसुन उठकर बैठ गया।

"कलकत्ता, बोकारो, भिलाई, राउरकेला, कहीं भी। जहां भी मजदूरी मिल जए।"

"कहीं कोई अपना है ?"

"है, बोकारो में मेरे मामा का लड़का इंजीनियर है।"

"तुमने आज तक नहीं बताया ?" किसुन को लग रहा था कि बोकारो अभी पहुंचो और नौकरी रखी हुई है। "इंजीनियर आदमी तो हमें मजूरी में लगवा ही सकता है।"

"लेकिन यही है किसुन ! कि वे लोग बड़े आदमी हैं। हमें गरीब समझकर हमारे दुआर पर नहीं के बराबर आते हैं। शादी-ब्याह, मरनी-जीनी में पहुंच गए एकाध घण्टे के लिए, तो बहुत है। ममहर मैं भी लाज से नहीं जाता। मामी लोग बहुत पढ़ी-लिखी हैं। मुझसे बहुत कम बतियाती हैं। इंजीनियर बहू तो बी० ए० पास हैं। उन्हें भउजी कहने में भी संकोच होना है, वे मुझसे बहुत शरमाती हैं। ऐसे उलटकर ताकती हैं, जैसे मैं पराया आदमी खड़ा हूं। नाना-नानी के मर जाने के बाद ममहर में कोई किसी को नहीं पूछता, बबुआ किसुन ! क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

"मैं क्या बताऊं, रामसिंगार।" किसुन बोला, "मेरे मामा को तो जालिमों ने बन्दूक से मार डाला था।"

"बन्दूक से मार डाला था ? किस हरामजादे ने किसुन !"

किसुन फिर बगल में लेट गया और दाहिनी केहुनी के सहारे उठंग कर सिर को हथेली पर रख लिया और कहने लगा, "अहियारा में ही मेरे मामा एक धनी-मानी किसान परीक्षन

कर तुम दोनों योंही चले जाओगे ? फिर तो मेरा मन्दिर वीरान हो जाएगा। मेरे कथा-वाचन की तब सार्थकता ही क्या है ?"

पुजारी बाबा की पलकें भीगी हुई थीं। दोनों पांव पकड़-कर बैठ गए, "आगे से ऐसी गलती नहीं होगी।"

"मैं यहां रहूं और अन्याय, जुलुम चलता रहे, यह ठीक नहीं है। बहुत दिनों से सहता रहा हूं। अब सहा नहीं जाता।"

धीरे-धीरे मन्दिर पर सोए दूसरे-दूसरे लोगों की आखें खुलती जा रही थीं। सनीचर तो उसके करीब सरककर आ गया था।

सुबह जब पुजारी जी अकेले थे तो रघुनी आया। वे समझ गए, रघुनी को कोई गहरी चिन्ता रात से ही मथ रही होगी। रामनाथ भाई ने उसे खबर दी थी—मुकुल जी के पास कलकत्ता से उनके बेटे का मनीआर्डर आया था।

"मुझे यही अच्छा नहीं लगा कि तुम फिर डेढ सौ रुपये दे आए हो।" पुजारी जी बोले।

"अब क्या होगा, पुजारी जी ! मुझे तो यही लगता है कि रामनाथ भाई तीन सौ रुपये डकार जाएंगे और कहेंगे मूलधन रह गया है।" रघुनी घबराया हुआ था।

"चिन्ता न करो।" पुजारी जी ने समझाया, "आगे तुम्हें भी डकार जाना होगा कि मैंने आससे कोई रुपया नहीं लिया।"

"यह कैसे हो सकता ? उन्होंने तो मेरे अंगूठे का निशान ले लिया है।"

"यह तीन सौ रुपये पाने की कोई रसीद दी है कि नहीं ?"

"नहीं, कुछ भी नहीं दिया है।"

"अब तुम सजग रहो रघुनी !" पुजारी जी ने कहा, "रामनाथ सिंह का सन्यासी चोला पहचानो। तुम लोग ठीक

और उठकर बैठ जाते थे। रात के सन्नाटे में झींगारों के स्व
काफी तेज महसूस हो रहे थे।

"रामनाथ भाई के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?
रामसिंगार ने पूछा।

"यह भी वही है। फर्क इतना है कि इसकी अहिमक खा
बड़ी मोटी है और यह आदमी बहुत आसानी से पहचान में
आने वाला नहीं है।"

पुजारी जी की खड़ाऊं की आवाज सुनाई पड़ी। वे सीढ़ियां
चढ़ते हुए ऊपर ही आ रहे थे। दोनों खड़े हो गए, "नींद नहीं आ
रही है क्या, बाबा!" रामसिंगार बोला।

पुजारी जी हंसे, "बूढ़े और बच्चों को बहुत कम नींद आती
है न?" उन्होंने कहा, "तब तुम लोग बाहर कब जा रहे हो?"

"आपको कैसे मालूम, बाबा!" दोनों आसमान से गिरे।

"मैंने सब कुछ सुन लिया है, मेरे बेटो! मगर चिन्ता की
बात है। मैं तो तुम लोगों के साथ हर तरह से हूं; लेकिन हर
तरफ से लड़ने से भागते ही रहोगे, तो तुम्हारी आखिरी मंजिल
कहां होगी?"

"क्या मतलब है, बाबा!"

पुजारी जी उसके भोलेपन पर फिर जोर-जोर से हंसे।

"क्या समझते हो, गांव की तरह वहां भी संघर्ष और
लड़ाई नहीं होगी? हर तरफ लड़ाई है, मेरे बच्चो! यही है
क कहीं ठंडी है, कहीं तेज है।"

"बात तो समझ में आ रही है, बाबा!"

पुजारी जी ने रामसिंगार के माथे को प्यार से थपथपाया
और कहा, "गिरधारी सुकुल की विधवा बहू इसी तरह छन-
छनकर मरेगी न? उससे ब्याह कर उसका उद्धार नहीं करोगे

कर तुम दोनों योंही चले जाओगे ? फिर तो मेरा मन्दिर वीरान हो जाएगा। मेरे कथा-वाचन की सब सार्थकता ही क्या है ?"

पुजारी बाबा की पलकें भीगी हुई थीं। दोनों पांव पकड़कर बैठ गए, "आगे से ऐसी गलती नहीं होगी।"

"मैं यहां रहूं और अन्याय, जुलुम चलता रहे, यह ठीक नहीं है। बहुत दिनों से सहता रहा हू। अब सहा नहीं जाता।"

धीरे-धीरे मन्दिर पर सोए दूसरे-दूसरे लोगों की आंखें खुलती जा रही थी। सनीचर तो उसके करीब सरककर आ गया था।

सुबह जब पुजारी जी अकेले थे तो रघुनी आया। वे समझ गए, रघुनी को कोई गहरी चिन्ता रात से ही मथ रही होगी। रामनाथ भाई ने उसे खबर दी थी—मुकुल जी के पास कलकत्ता से उनके बेटे का मनीआर्डर आया था।

"मुझे यही अच्छा नहीं लगा कि तुम फिर डेढ़ सौ रुपये दे आए हो।" पुजारी जी बोले।

"अब क्या होगा, पुजारी जी ! मुझे तो यही लगता है कि रामनाथ भाई तीन सौ रुपये डकार जाएंगे और कहेंगे मूलधन रह गया है।" रघुनी घबराया हुआ था।

"चिन्ता न करो।" पुजारी जी ने समझाया, "आपे तुम्हें भी डकार जाना होगा कि मैंने आपसे कोई रुपया नहीं लिया।"

"यह कैसे हो सकता ? उन्होंने तो मेरे अंगूठे का निशान ले लिया है।"

"यह तीन सौ रुपये पाने की कोई रसीद दी है कि नहीं ?"

"नहीं, कुछ भी नहीं दिया है।"

"अब तुम सजग रहो रघुनी !" पुजारी जी ने कहा, "रामनाथ सिंह का सन्यासी चोला पहचानो। तुम लोग ठीक

सुकुल जी ! घर में कुशल-क्षेम तो है ?"

"सब आपका आशीर्वाद है, महराज जी !" सुकुल जी अपनी दोनों हथेलियां एक-दूसरे के विरुद्ध सटाकर बोले, "इतना सवेरे किधर चलना हुआ है ? कोई आज्ञा है ? रसोई की तैयारी कराता हूं।"

"नहीं-नहीं।" पुजारी जी कुर्सी छोड़कर खड़े हो गए, "आज तो तुम्हारे ही रामसिंगार के यहां भोजन करूंगा। वैसे तो मेरी बेटी भी भोजन तैयार कर रही होगी।"

रामसिंगार का नाम आते ही सुकुल जी चिढ़ गए थे लेकिन बोले, "बेटी, कहा से महाराज !"

पुजारी जी ठठाकर हंसे, "क्यों ? सनीचर बहू मेरी बेटी ही तो है।"

सुकुल जी को आगे पूछने का साहस नहीं हुआ। उन्होंने कहा, "यह संसार बड़ा विशाल है, महराज जी ! प्रभु के दुश्मनों की सख्या बढ़ने ही पर है। तभी तो पाक रहे नहीं, कितनी तक-लीफें, पाप, कष्ट और अन्याय है। मैं तो कहता हूं धरती का नाश फौरन ही होने वाला है।"

पुजारी जी फिर हंसने लगे और बोले, "यह तो अपनी-अपनी समझ है, सुकुल ! मेरा तो खयाल है, धरती को तो अब रुधिर मिलने वाली है। पापियों के नाश का सिलसिला जन्म ले चुका है। भजन-बजन में तुम्हारा मन-चित्त नहीं लगता है। रात-दिन फरहंगपुर और चारो तरफ जवार में चक्कर काटते रहते हो, है न ?"

"क्या करता महराज जी ! मेरा तो पेशा ही ऐसा है।"

"सचमुच तुम पेशे के नाम पर ही इतना घूमते हो ? मुझे तो इसमें सन्देह है कि तुमने अपने पेशे के प्रति कभी ईमानदारी दिखलाई हो ?"

"तुम्हारा यह सामन्ती ढांचे का समाज" पुजारी जी ने कहा, "तो यह भी कहता है कि जो संसार से निर्विकार और स्वयं में लिप्त हो, वह श्रेष्ठ मनुष्य है। मगर यह श्रेष्ठता की कसौटी कितनी झूठी है धीरे-धीरे सबको मालूम हो गया है। सुकुल ! जिस पेशे में तुम लगे हुए हो उसीको ईमानदारीपूर्वक निभाते जाओ तो बहुत बड़ी बात है। दूसरों को उपदेश देने की बात छोड़ो।"

पुजारी जी के सामने ही दो-चार जवार-पधार के लोग अपनी चिट्ठियां और मनीआर्डर लेने के लिए आए थे, एक लोदीपुर का आदमी था, जिसका मनीआर्डर आया था। वह तो ऐसे हाथ जोड़े बैठा था, जैसे गिरधारी सुकुल अपने घर से ही रुपये देने वाले हों।

"तो मुझे जाने के लिए आज्ञा देते हो, सुकुल ! अब इसले [illegible]ठो। मैं चलूंगा।" पुजारी जी ने कहा।

"मैं अपने मुंह से कैसे कह सकता हू, महराज जी !"

"जैसे और सारी बातें कहा करते हो।"

पुजारी जोर से हंसे और उठ गए।

वे रामसिगार सुकुल के दुआर पर बहुत देर तक बैठे [illegible]र रामसिगार के बारे में उसकी मतारी और बाबू जी को [illegible] रहे थे। उसका परिवार पूरा उल्लसित और उत्साह में [illegible]। वहां से पुजारी जी सीधे सनीचर के बच्चों को स्कूल में [illegible]खिला कराने के लिए फरछुगपुर प्राइमरी स्कूल में चले आए।

थी। रामसिंगार अगर गिरधारी मुनुन की बहू से बिआह ही लेना है, तो इसमें धरम-करम जाने का सवाल ही कहां उनका बबुआ इस दुनिया से चला ही गया, तो एक ज लड़की की जान लेने से क्या फायदा ? पुजारी जी ठीक क है, यह शास्त्र द्वारा वर्जित नहीं, गिरधारी के पेट की उप कि विधवा का ब्याह लौकिक नहीं है।

बार-बार मन में होता कि गिरधारी मुनुन से बातचीत करें, लेकिन मन मसोसकर रह जाते। गिरधारी गोतिया भा हैं, तो क्या हुआ, वे सब तरह से मजबूत आदमी हैं, धन औ जन दोनों से। अभी तीन भाई हैं और तीनों साथ चल रहे है, बटवारा नहीं हुआ है। रामनाथ सिंह की संगत में लेन-बपार भी बहुत कर लिया है। लाठी और पैरवी दोनों का बल है। उनकी तुलना में तो रामसिंगार के बाबू जी सब तरह से गरीब और कमजोर हैं। रामसिंगार की संगत में कहीं उनकी पतोहिया के पेट में कुछ रह गया, तब तो दूसरा महाभारत मचा देंगे।

इन्होंने रामसिंगार की मतारी से भी सलाह ली; लेकिन मतारी तो इनसे भी ज्यादा डरपोक। कहने लगी, "बा दादा ! गिरधारी भइया की छाती में ममता नहीं है। हम राम सिंगार के लिए उससे भी बढ़िया मेहरारू लाएंगे; लेकिन दुआर के सामने वाले आदमी के साथ झगड़ा-झंझट नहीं। पुजारी बाबा आग लगाकर तो गए हैं। गिरधारी भइया घर में घुसकर मारने लगें, तो पुजारी जी फरहंगपुर से बचाने के लिए आएंगे ? ना, दादा ! ना। मुझे यह ब्याह मंजूर नहीं है। समझे कि नहीं ? ए रामसिंगार के बाबू जी ! कहां गया बबुआ राम-सिंगार ? उसे बुलाकर समझाती हूं। तू उनकी पतोहिया से ब्याह करेगा कि घर महाभारत मचाएगा ? सच-सच बता दे।"

उसके बाबू जी मतारी की बात सुनकर और भी घबड़ा गए। इसीके लगभग एक-डेढ़ हफ्ते बाद दोपहरिया में सुकुल जी की विधवा बहू रामसिंगार के आगन में दीवार तड़पकर चली आई और उसके बाबू जी के पाव पकड़कर बोली, "अब तो आपकी शरण में आ गई हू, बाबू जी ! रामसिंगार आज से मेरे देवर नही, मरद हैं। चाहे काटकर फेंक दीजिए, मगर आपके घर से बाहर नहीं जाऊगी।"

रामसिंगार के बाबू जी-मतारी दोनो बिल्कुल हक्का-बक्का थे। रामसिंगार भी घर पर नही था। बाबू जी ने सबसे बढ़िया काम यही किया कि दौड़कर आगन का दरवाजा बद कर दिया और पुजारी जी की बातें स्मरण आईं, तो मन में एक संकल्प लिया, "अब तो यह अभागिन शरण में आ गई है। अपनी जान पर खेलकर भी इसकी रक्षा करूगा।"

मतारी ने तो उसके बाबू जी से भी स्पष्ट कर दिया, "इसे रामसिंगार से पेट में बच्चा रह गया है। पूरे दो महीने का। ताज्जुब है, गिरधारी सुकुल के पूरे परिवार को कुछ भी मालूम नहीं कि पतोहिया के घर में कोई रात के समय दीवार लाघकर बराबर आता है।"

गिरधारी सुकुल के परिवार वाले और उनके आगे-पीछे के लोग भाला, गंडासा और लाठी के साथ रामसिंगार का घर घेरकर खड़े थे। लगता था, अब खून हुआ "अब खून हुआ। खैरियत यही थी कि रामसिंगार के घर वाले चारो तरफ से दरवाजा बन्द कर दुबककर बैठ गए थे। सुकुल जी गला फाड़-कर चिल्ला रहे थे, "कहां है ससुरा रामसिंगार ! इज्जत के सामने फांसी-दामिल की परवाह नहीं है। खून की धारा बहा दूगा···। साले ने कुल को कलंकित कर दिया है। अब जीकर क्या होगा···?"

सारा गांव तमाशबीन की तरह खड़ा था।

गुड्डन जी के लोग कुल्हाड़ी से दरवाजे फाड़ रहे थे। वे अन्दर घुस गए और रामसिगार के बाप को लहूलुहान कर दिया। इस घटना के कुछ ही मिनट बाद पुजारी जी के साथ रामसिगार, गनीचर, किसुन, सुखन, रघुनी समेत चार-पांच सौ लोगों के साथ वहां पहुंच गए। जैसे ही रामसिगार गिरधारी गुड्डन को पटककर उनकी गर्दन पर बैठा, पुजारी जी ने दौड़कर उसका हाथ खींच लिया। मगर रामसिगार बोला, "मुझे मत रोकिए, बाबा! मैं चाचा-भतीजे का नाता भूल गया हूं। इस पापी की गर्दन उतार लूंगा।"

पुजारी जी ने रामसिगार को धीरज बंधाया और मारपीट की स्थिति को काबू में करने के बाद गिरधारी गुड्डन से बोले, "सुनो, गुड्डन! रामसिगार चाहे तो अपने बाप का बदला बहुत आसानी से ले सकता है। देख रहे हो न? दोनों गांव के कितने लोग रामसिगार के साथ हैं? दो मिनट में तुम्हारी सारी हेकड़ी साफ हो सकती है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारी बहू तुम्हारे घर ही रह गई। अगर यह किसी दूसरे के साथ निकल जाती, तुम लोग मार डालते या फिर किरासन तेल छिड़ककर बदन में आग लगा लेती तब क्या होता? ताकत है, रामसिगार में कि दूसरा महाभारत अभी खड़ा कर दे, क्योंकि तुम्हारे जैसे कौरवों का नाश भी जरूरी है। जब तक तुम्हारे जैसे लोग गांव मे है, तब तक गांव सुखी नही बन सकता। तुम इतने बड़े निर्दयी और कसाई हो कि आखिरकार रामसिगार के बाप को घायल कर ही दिया। मेरी इच्छा होती है, इस गंडासे से ... सिर उतार लूं। इधर ताकते हो न? ये तमाम ...र-भीतर खौल रहे हैं। खाली इशारे-भर की देर है।"

तरफ घोर सन्नाटा छाया था। भीतर से

इतने बौखलाए हुए थे कि सुकुल जी को भाले की नोक पर टांग लें। मगर वे खून का घूट पीकर रह गए और फौरन रामसिंगार के बाबू जी के उपचार में लग गए।

पुजारी जी ने सुकुल जी को अच्छी तरह चेता दिया, "देख गिरधारी ! अब वह लड़की इस घर की अमानत है। तुम्हें तो कन्यादान करना चाहिए था। मगर यह सब सौभाग्य तुम्हारे करम में नहीं है। अब इस बहू पर कुछ भी तुम्हारा अधिकार नहीं है। उसे कुछ भी हुआ, तो तुम्हारी खैर नहीं। यह तमाम जनता की आवाज है।" पुजारी जी ने चारों तरफ अपनी बांहें फैलाईं।

लोग फिर बौखलाए, जैसे सुकुल जी को अभी साफ कर देंगे; लेकिन पुजारी जी ने फिर सबको शांत कर दिया।

उस दिन के बाद सुकुल जी पहली बार सोचने लगे, उनके विरुद्ध भी कोई ताकत है और उनसे कई गुना मजबूत है। इच्छा हुई थी कि पुलिस में सनीचर, सुबल, रामसिंगार, किसुन और रघुनी चमार के खिलाफ रपट दर्ज करा दें और थाने को कुछ दे-दिलाकर सबके अन्दर ठुमवा दें। रामनाथ भाई ने भी यही सलाह दी थी, परन्तु पुजारी जी का अभी तक अकथ भय था, जो उनके दिमाग को लगातार कुरेद रहा था।

पुजारी जी ने गांव का दिमाग खराब कर दिया है। यह तो बिलकुल पहली घटना थी, जो पुजारी इस तरह 'गोहार' का नेतृत्व कर रहा हो। पुजारी का तो काम पूजा-पाठ करना और मन्दिर-मठ में पड़ा रहना होता है। उन्हें दुनिया से क्या काम ? लेकिन परहमपुर के पुजारी जी, जो बचपन से इस गांव में रह गए हैं, एकदम घरेलू और सांसारिक प्राणी हैं। लोगों के सुख-दुःख में शरीक होने से इन्हें कौन रोकेगा ?

सुकुल जी बहुत डरे-डरे रहते हैं और उन्होंने दरवाजे-दर-

खिलाफ उकसाते हो, कमासुत ! अभी दारोगा को बुलवाता हूं। गुंडई करने के लिए निरोहबाजी तो मैं एक दिन में छोड़वा दूंगा।"

मुकुल जी वहां से तो जल्दी चले आए। मगर उन्हें कम आक्रोश नहीं था। चमटोली में उन्हें चक्कर मारना पड़ता है। वह भी कोई घर पर नहीं हुआ, पीछे-पीछे मेंत-बमार में दूढ़ते चलो। दिमाग तो रघुनी चमार का ही खराब हुआ है, जिसने पुजारी जी से कहा होगा कि मुकुल जी कहीं घूमते-फिरते नहीं, सबकी चिट्ठी-पत्री, मनीआर्डर अपने घर पर रखे रह जाते हैं।

एक दिन पुलिस थाने पर रघुनी को बुलाकर ले गई। पूरी चमटोली आतंकित थी। अरे, भइया ! रघुनी जैसे साधु-संत आदमी ने क्या किया है ?

एक आदमी कह रहा था, "सिपाही रघुनी काका का हाथ खींचकर ले जा रहा था और बड़बड़ाता जा रहा था, साले मुकुल जी को मारने की धमकी देता है ? चल, थाने पर डंडा करेंगे दारोगा जी, तब बुझाएगा।"

थाने में दारोगा ने कुछ कहा नहीं। चुपचाप कुर्सी से उठकर ऐसी लात चलाई कि रघुनी चीखते हुए मुंह के भरे जमीन पर लोटने लगा।

"यह मेरे साथ क्या हो रहा है, सरकार ! मेरी गलती ? मैंने कभी न चोरी की, न किसी से झगड़ा ही किया, फिर क्या कसूर हो गया। मालिक ! मैं गरीब आदमी हूं।"

दारोगा ठठाकर हंसा और एक लात दोबारा जमाते हुए

घाजे घूमकर चिट्ठियां बांटनी शुरू कर दी हैं। जाज
उन्होंने यही समझा कि पुजारी जी मट्ठी के आदमी हैं।
चाहेंगे, धरम-करम की बात अपनी इच्छा के अनुसार
उगलवा लेंगे। दोपहरिया को रघुनी को खोजते हुए सुकु
मिल गए, तो उसे भारी अचरज हुआ। सुकुल जी में यह
परिवर्तन कैसे हो गया है? उसने कहा, "पाय लागी, मह
जी! इतनी धूप-दुपहरिया में तकलीफ करने की क्या जरू
थी? कहलवा दिया जाता, मैं दुआर पर ही पहुंच जाता।"
सुकुल जी व्यंग्य से हंसे, "पुजारी जी ने पूरी चमटोली
माथे पर चढ़ा लिया है न? अब रघुनी चमार का नाम ब
कर रघुनी दास हो गया, क्यों?"
"महाराज जी की बात!" रघुनी बोला, "बेटा 'चम
की जगह 'दास' ही लिख देता है तो मेरा कसूर क्या है?
उसे चिट्ठी लिख देता हूं कि दास न लिखकर चमार ही लिखे
सुकुल बाबा को चिट्ठी पहुंचाने में दिक्कत होती है।"
सुकुल जी ने उसे गिनकर एक सौ उन्चास रुपये दिए
"धर, पकड़ जल्दी! ससुर! मैं क्या तुम्हारे बाप का नौक
हूं? दुआर पर आकर मनीआर्डर दिया, तभी तो एक रुपय
लिया है। पांच रुपये से कम नहीं चाहिए, समझे कमासुत!"
"मैंने कहां कुछ कहा, महाराज जी! आप तो बेमतलब
गालियाते जा रहे हैं।" रघुनी ने कहा।
"खूब मिजाज चढ़ा दिया है पुजारी जी ने! घबड़ाओ
नहीं, मजा तो अब बुझाएगा न।"
इस धमकी से रघुनी सचमुच डर गया।
"ठीक है, बाबा! अपनी कसम, मुझे ... सं
ए। भविष्य में यहां नहीं आऊंगा ... ...

खिलाफ उकसाते हो, कमासुत ! अभी दारोगा को बुलवाता हूं। गुंडई करने के लिए गिरोहबाजी तो मैं एक दिन में छोड़वा दूंगा।"

सुकुल जी वहां से तो जल्दी चले आए। मगर उन्हें कम आक्रोश नहीं था। चमटोली में उन्हें घुसकर मारना पड़ता है। वह भी कोई घर पर नहीं हुआ, पीछे-पीछे खेत-बधार में ढूंढ़ते चलो। दिमाग तो रघुनी चमार का ही खराब हुआ है, जिसने पुजारी जी से कहा होगा कि सुकुल जी कहीं घूमने-फिरते नहीं, सबकी चिट्ठी-पत्री, मनीआर्डर अपने घर पर रखे रह जाते हैं।

एक दिन पुलिस थाने पर रघुनी को बुलाकर ले गई। पूरी चमटोली आतंकित थी। अरे, भइया ! रघुनी जैसे साधु-संत आदमी ने क्या किया है ?

एक आदमी कह रहा था, "सिपाही रघुनी काका का हाथ खींचकर ले जा रहा था और बड़बड़ाता जा रहा था, साले सुकुल जी को मारने की धमकी देता है ? चल, थाने पर डंडा करेंगे दारोगा जी, तब बुझाएगा।"

थाने में दारोगा ने कुछ कहा नहीं। चुपचाप कुर्सी से उठकर ऐसी लात चलाई कि रघुनी चीखते हुए मुंह के भरे जमीन पर लोटने लगा।

"यह मेरे साथ क्या हो रहा है, सरकार ! मेरी गलती ? मैंने कभी न चोरी की, न किसी से झगड़ा ही किया, फिर क्या कसूर हो गया। मालिक ! मैं गरीब आदमी हूं।"

दारोगा ठठाकर हंसा और एक लात दोबारा जमाने हुए

बाने घूमकर चिट्ठियां बांटनी शुरू कर दी हैं। आज
उन्होंने यही समझा कि पुजारी जी मट्ठी के आदमी हैं।
चाहेंगे, धरम-करम की बात अपनी इच्छा के अनुसार इ
उगमवा लेंगे। दोपहरिया को रघुनी को खोजते हुए मुकुल
मिल गए, तो उसे भारी अचरज हुआ। मुकुल जी में यह प
परिवर्तन कैसे हो गया है ? उसने कहा, "पांय लागी, महर
जी ! इतनी धूप-दुपहरिया में तकलीफ करने की क्या जरू
थी ? कहलवा दिया जाता, मैं दुआर पर ही पहुंच जाता।"
मुकुल जी व्यंग्य से हंसे, "पुजारी जी ने पूरी चमटोली
माथे पर चढ़ा लिया है न ? अब रघुनी चमार का नाम बद
कर रघुनी दास हो गया, क्यों ?"
"महाराज जी की बात !" रघुनी बोला, "बेटा 'चमा
की जगह 'दास' ही लिख देता है तो मेरा कसूर क्या है ?
उसे चिट्ठी लिख देता हूं कि दास न लिखकर चमार ही लिखे।
मुकुल बाबा को चिट्ठी पहुंचाने में दिक्कत होती है।"
मुकुल जी ने उसे गिनकर एक सौ उन्चास रुपये दिए,
"धर, पकड़ जल्दी ! ससुर ! मैं क्या तुम्हारे बाप का नौकर
हूं ? दुआर पर आकर मनीआर्डर दिया, तभी तो एक रुपया
लिया है। पांच रुपये से कम नहीं चाहिए, समझे कमासुत !"
"मैंने कहां कुछ कहा, महाराज जी ! आप तो बेमतलब
गलियाते जा रहे हैं।" रघुनी ने कहा।
"खूब मिजाज चढ़ा दिया है पुजारी जी ने ! घबड़ाओ
नहीं, मजा तो अब बुझाएगा न।"
इस धमकी से रघुनी सचमुच डर गया।
"ठीक है, बाबा ! अपनी कसम, मुझे डेढ़ सौ रुपये मिल
गए। भविष्य में यहां नहीं आएंगे। दुआर पर ही आ जाऊंगा।"

खिलाफ उकसाते हो, कमासुत ! अभी दारोगा को बुलवाता हूं। गुंडई करने के लिए गिरोहबाजी तो मैं एक दिन में छोड़वा दूंगा।"

मुकुन्द जी वहां से तो जल्दी चले आए। मगर उन्हें कम आक्रोश नहीं था। चमटोली में उन्हें चलकर मारना पड़ता है। वह भी कोई घर पर नहीं हुआ, पीछे-पीछे खेत-बधार में दूड़ते चलो। दिमाग तो रघुनी चमार का ही खराब हुआ है, जिसने पुजारी जी से कहा होगा कि मुकुन्द जी कहीं घूमने-फिरने नहीं, सबकी चिट्ठी-पत्री, मनीआर्डर अपने घर पर रखे रह जाते हैं।

एक दिन पुलिस थाने पर रघुनी को बुलाकर ले गई। पूरी चमटोली आतंकित थी। अरे, भइया ! रघुनी जैसे साधु-संत आदमी ने क्या किया है ?

एक आदमी कह रहा था, "सिपाही रघुनी काका का हाथ खींचकर ले जा रहा था और बड़बड़ाता जा रहा था, साले मुकुन्द जी को मारने की धमकी देता है ? चल, थाने पर डंडा करेंगे दारोगा जी, सब भुलाएगा।"

थाने में दारोगा ने कुछ कहा नहीं। चुपचाप कुर्सी से उठकर ऐसी लात चलाई कि रघुनी चीखते हुए मुंह के भरे जमीन पर लोटने लगा।

"यह मेरे साथ क्या हो रहा है, सरकार ! मेरी गलती ? मैंने कभी न चोरी की, न किसी से झगड़ा ही किया, फिर क्या कसूर हो गया। मालिक ! मैं गरीब आदमी हूं।"

दारोगा ठठाकर हंसा और एक लात दोबारा जमाते हुए

छाया हुआ था।

पुजारी जी को पता चला, तो समझाने लगे, "लड़ाई तो सभी जगह है। यहां भी ऐसी ही बात हो, तो भागकर कहां जाओगे? अपनी कमजोरियों के कारण कब तक भागते रहोगे?"

दारोगा को सनीचर ने दो-तीन बार भाई जी के दरवाजे पर देखा था। इसलिए यह भी विश्वास था कि रामनाथ भाई और सुकुल जी को छोड़कर वह गांव के किसी भी तीसरे पर विश्वास नहीं कर सकता। पुजारी जी ने जब यह कहा कि गांव के किसी भी निर्दोष आदमी को पकड़ने के पहले उन्हें पकड़कर थाना ले जाना पड़ेगा, तब सबों को काफी बल मिला था। रघुनी को पुलिस ने पीटा और कई घंटों तक हाजत में रखा, यही गांव के लिए अपमान की बात है। वे गांव मे घर-घर घूमकर लोगों को समझा रहे थे कि घर के अन्दर चूड़ियां पहनकर बैठे रहोगे, तो कोई भी तुम्हें न्याय नहीं देगा। समानता और न्याय मांगने से कोई भी नहीं देता। एकता अगर होगी, तो थाना और गिरधारी सुकुल की मिली-जुली साजिश की कलई एक दिन खुलकर रहेगी।

"जब वडे संगठित हो रहे हैं, तब खेतिहर मजदूरों की एकता जरूरी है कि नहीं, सनीचर!" पुजारी जी ने कहा।

"आपने तो हमें रोशनी दी है बाबा!" सनीचर बोला, "हम भी गांव जाकर तमाम लोगों से मिलकर बातें करेंगे।"

उस दिन मन्दिर पर आसपास के आठ-दस गांवों के लगभग डेढ़ सौ आदमी इकट्ठा थे। पुजारी जी कनेर गाछ के नीचे खड़ा होकर बोले, "भाई रे! गरीब, हरिजन और कमजोर लोगों के खिलाफ जुलुम और पकड़ता जा रहा है। अन्याय और झूठ से लड़ने के लिए 'खेतिहर मजदूर किसान संघ' की स्थापना

जरूरी है।"

रामसिंगार 'खेतिहर मजदूर किसान संघ' का मंत्री चुना गया था। भाई जी को खबर मिली, तो पहली बार उन्होंने अपने गुस्से का सार्वजनिक प्रदर्शन किया था। रघुनी ने उनके सारे कर्ज चुका दिए थे और भाई जी से कागज वापस लेने के लिए उनके दुआर पर बैठा था। उन्होंने क्रोध में फुफकारते हुए कहा, "रघुनी राम ! सूद के पैसे श्मशान घाट से उठकर तुम्हारा बाप चुकाएगा क्या ? गनेसी, जुम्मन कुंजड़ा, भरोसी अहीर, सनीचर सिंह, कैलास राय, जंगी, पउदार सबके सब नमकहराम हैं। वक्त पर काम आया, उनकी सेवा की। इस पर बेईमानों पर राजनीति सवार है। गिरधारी सुकुल की बहू भगाकर ले गया रामसिंगार सुकुल। यह इज्जत-पानी का मामला है, भले पच जाए, पर मेरा सूद-दर-सूद किसी ने मारने की कोशिश की, तो कच्चा चबा जाऊंगा।"

रघुनी ने आज पहली बार भाई जी का असली रूप देखा था। खद्दर की धोती, बिना गंजी-कुर्ता के विशालकाय शरीर के ऊपर चादर और चादर के भीतर दो हाथ का लम्बा जनेऊ चाबी के बोझ के कारण घुटने पर झूलता रहता था। कुछ दिनों तक सर्वोदयी कार्यकर्ताओं के साथ रहने के कारण इस 'सादगी' का कुछ असर पड़ा था। क्रोध को बहुत बड़ा आवरण मिल गया था।

"यह तो सरासर धोखा है, मालिक !" रघुनी ने बहुत साहस बटोरकर कहा।

"एक दिन पुलिस पुजारी जी को भी घसीटकर जेल ले जाएगी, तब पता चलेगा।"

"अगर ऐसा हुआ, तो आग लग जाएगी, बाबू साहेब !" पुर्बी ओर से बोलकर उनके दुआर पर रुका नहीं, "मेरे पास

आपका कुछ भी बकाया नहीं है। मैं अब इसके लिए आपके दरवाजे पर नहीं आऊंगा। जो भी आप जुलुम करें, देखा जाएगा।"

परहंसपुर गांव में ही रामनाथ सिंह के जोड़ के ही एक और बड़े भूस्वामी थे विश्वनाथ सिंह। भाई जी की तरह इनका कुछ भी सार्वजनिक जीवन नहीं था। विश्वनाथ सिंह गांव के किसी भी मामले में बिलकुल तटस्थ रहते थे। दोनों सगे भाई थे, मनोहर सिंह तो चचेरा भाई पड़ जाता था, मगर रामनाथ सिंह और विश्वनाथ सिंह एक-दूसरे के जानी दुश्मन थे। रामनाथ भाई की सार्वजनिक जिन्दगी से वे बराबर चिढ़ते रहते थे। बहुत पहले की घटना है। विश्वनाथ सिंह के एक लड़का था, जो बड़ा ही होनहार और सुशील था। उस समय तक रामनाथ भाई की दूसरी शादी नहीं हुई थी और पहली मेहरारू से कोई भी सन्तान नहीं थी। इसलिए भाई जी के भीतर जलन का होना स्वाभाविक भी था। जब विश्वनाथ सिंह के लड़के ने मैट्रिक की परीक्षा दे दी, तब जवार-जपार में यह शोर हो गया कि बाबू साहब का लड़का बोर्ड में अव्वल आएगा। रामनाथ भाई सुन-सुनकर तो रस्सी की तरह ऐंठ जाते थे। मगर वश ही क्या था? लेकिन एक उपाय वश में था। भाई जी ने पता कर लिया कि लड़के की कापियां कहां-कहां गई हैं। वे चुपके घर से निकल गए और कापियां जांचने वाले अध्यापकों के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गए, "सरकार! जितना रुपया चाहते हैं, देने के लिए तैयार हूं; पर इस रोल नम्बर के लड़के को फेल कर

दीजिए। यह मेरी जिन्दगी का सवाल है, साहब !" अध्यापक हैरान रह जाते थे। अभी तक तक तो यही पैरवी होती थी कि फेल होने वाले लड़के को पास कर दीजिए। यह तो अनूठा मामला है।

ख़ैर ! रामनाथ भाई की हर कोशिश के बावजूद विश्व सिंह के लड़के का रिजल्ट हो गया और बोर्ड में लड़का न नम्बर पर आ गया था। विश्वनाथ सिंह के पैर जमीन पर न थे। उस दिन गांव में विश्वनाथ सिंह ने विशाल भोज करा या।

रामनाथ भाई को छोड़कर सभी दुआर पर लड़के आशीर्वाद देने के लिए आए थे। ब्राह्मण, हरिजन, सेवा नौकर-चाकर सभी पूड़ी-जलेबी खा-खाकर गए थे। पता नहीं विश्वनाथ सिंह की कंजूसी कहा चली गई थी। कुछ दिनों तक भाई जी की उदारता और दरियादिली की चर्चा कम हो गई थी। यह सब उनके लिए एकदम असह्य था।

रामनाथ भाई ने एक योजना बनाई थी। इसमें धीरे-धीरे उन्हें सफलता भी मिलती गई। लड़का कालेज में दाखिला लेकर शहर में ही रहता था। रामनाथ भाई जब भी शहर आते, तो इसी के यहां रात में ठहर जाते थे। लड़कों को भी मालूम था कि दोनों भाई एक-दूसरे के भीतरी दुश्मन हैं; लेकिन इतना रईस और भला था कि रामनाथ भाई के आने-जाने की खबर स्वयं पचा जाता था, अपने बाप के कानों तक भी पहुंचने नहीं देता था।

एक रोज भाई जी ने दही की हांड़ी में ही माहुर डाल दिया था और लड़के को देकर बोले, "बड़ी मुश्किल से गांव से ही लेता आ रहा हूं, बबुआ ! तुम्हारा बाप देख लेता तो जुलुम हो जाता। क्या कहूं, इतना जलता है कि तुम्हें प्यार भी नहीं करने

देता।"

लड़का उन्हें बहुत रोक रहा था, "रुक जाइए, बड़का बाबू जी! कल सुबह उठकर चले जाइएगा।"

मगर रामनाथ भाई नहीं माने। वे बोले, "बबुआ की बात! कचहरी एक काम से आया था। काम निकल गया, तो यहां रहने से क्या लाभ है? आता हूं, तो रह ही जाता हूं।"

सुबह लड़का अपने कमरे में मरा हुआ पड़ा था। पोस्ट-मार्टम से पता चल गया था कि किसी ने माहुर खिला दिया है। पुलिस ने बहुत कोशिश की, मगर अपराधी का पता नहीं चला।

विश्वनाथ सिंह को कई महीने बाद पता चला कि वहां रामनाथ भाई जाकर ठहरते थे। इन्हें पक्का विश्वास हो गया था कि लड़के की जान रामनाथ सिंह ने ही ली है। दोनों तरफ से बन्दूकें निकल गईं। मगर गांव घर के बीच-बचाव से मामला कुछ देर के लिए शांत हो गया।

विश्वनाथ सिंह ने पुलिस में मामला दर्ज भी करा दिया कि रामनाथ सिंह ने माहुर खिलाकर मार डाला है। मगर गवाह और सबूत के अभाव में मामला कचहरी में अधिक दिनों तक नहीं चल सका। तभी से विश्वनाथ सिंह में वैराग्य-भावना और भी बढ़ गई थी। कहीं भी मन नहीं लगता था। चुपचाप घर के अन्दर पड़े रहते थे।

सुकुल जी का मेल-जोल ज्यादातर भाई जी के ही साथ था। इसलिए विश्वनाथ सिंह को सुकुल जी फूटी आंख भी नहीं सुहाते थे। कभी-कभी पुजारी जी के पास जाकर बैठ लेते थे, वह भी एकांत में। इधर शहर से अंग्रेजी दारू मंगाकर बहुत पीने लगे थे।

इधर जब खबर लगी कि सुकुल जी की विधवा पतोहू ने

"धीरे-धीरे सब कुछ समझता जा रहा हूं, बाबू साहेब !"

"यह रामनाथ और सुकुल डाकमुंशी दोनों गांव को चबा जाएंगे।"

रघुनी को ध्यान आया, विश्वनाथ सिंह का लड़का भाई जी का सगा भतीजा ही तो था फिर भी ममता नहीं आई। माहुर देकर मार डाला। इसलिए कि विश्वनाथ सिंह के कुल में कोई दीपक नहीं रहेगा और जब दीपक ही नहीं रहेगा, तब जलेगा कहां से। सारा धन घूम-फिरकर इन्हीं का होगा। विश्वनाथ सिंह के सगा भाई होने का सुख रामनाथ भाई को यही है कि इनके लड़के आगे चलकर विश्वनाथ सिंह की सारी जायदाद के मालिक बन जाएंगे। इन्होंने राह का कांटा हटा ही दिया है। एक कुलदीपक था, जिसे हमेशा के लिए बुझा दिया है।

लेकिन भाई जी के जितने भी कर्जखोर थे, सबको विश्वनाथ सिंह भड़काते रहते थे। विश्वनाथ सिंह के अलावा भी गांव के लोग धीरे-धीरे भाई जी की नीयत को पकड़ने लगे थे। इधर दोनों भाइयों में बन्दूक निकल गई, तो गांव-भर के लोग खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। यह एक ही वजन के दो हाथियों का मल्ल-युद्ध था।

गांव के किसी भी आदमी के बीच में पड़ने का मतलब था अपनी जान गवाना। अकेले सुकुल जी कितना थामते! वह भी उन्हें इस बात का बराबर भय रहता कि विश्वनाथ सिंह के भीतर यह भावना घर कर गई है कि सुकुल जी रामनाथ सिंह के आदमी हैं। इसलिए दिखावे के तौर पर विश्वनाथ सिंह के पक्ष में ही बोल रहे थे; लेकिन विश्वनाथ सिंह भी समझ रहे थे कि गिरधारी सुकुल भयंकर प्राणी एकदम अकाबटी है।

"यह साला भाई है कि कसाई!" विश्वनाथ सिंह ने गाली दे दी और इनके हवेली के चेहरे को आलोचना करने लगे, "मेरे

हलवाहे, चरवाहे को भड़काता है। कहता है, मजूरी कम देता है, इनके यहां काम मत करो।"

भाई जी एकदम तल से उखड़ गए, "है कोई गवाह तुम्हारे पास ? मैं जब इनकी सेवा, मदद और सहायता के लिए व्रत ले रखा है, तो तुम्हारी छाती क्यों फटती है ? शराब के नशे में र मत जमाओ, विश्वनाथ ! देखना यही है कि तुम क्या करते हो ?"

"बेटे की मौत का बदला नहीं लिया, तो असल बूढ़ पैदाइश नहीं, समझे कि नहीं ?"

दरअसल विश्वनाथ सिंह के दिमाग में यह बात आ गई कि भाई जी ही मजदूरों को भड़काते हैं। मगर ऐसी बात नहीं थी यह बात बिलकुल सच है कि उनकी मजूरी इतनी कम है कि सारा दिन खटने-मरने के बाद अकेला पेट पालना भी मुश्किल था।

एक दिन हाथ जोड़कर तीनों हलवाहों ने विश्वनाथ सिंह से कहा था, "मालिक ! कुछ मजूरी बढ़ाइए। नहीं तो कमाते-कमाते तो हम मर जाएंगे। हमारी मौत की सारी जिम्मेदारी आप ही की होगी, सरकार !"

सुनते ही विश्वनाथ सिंह के बदन में आग लग गई। आज तक किसी साले ने मजूरी बढ़ाने का नाम नहीं लिया। कमाते-कमाते मर जाते थे, मगर मुंह खोलने की हिम्मत नहीं थी। जहाँ कुछ बोले कि हाथ-गोड़ बांधकर खूब मारो। मर गया, तो कुत्ते की तरह टांग घसीटकर नदी में बहा दो या घर-पुआल बटोरकर कहीं फूंक दो। आज तो इनका 'खेतिहर मजदूर किसान संघ' बन गया है। अगर रामनाथ सिंह तरह-तरह से आग-जाल नहीं करते, तो इन्हें हिम्मत कहां से होती ? रामसिंगार मुखुम की कमाई-धमाई नहीं, तो लौंडरी करता है। विश्वनाथ सिंह ने

अपने हलवाहों को साफ सुना दिया था, "मजूरी एक नया पैसा नहीं बढ़ेगी और काम करना पड़ेगा। नहीं तो चमटोली, मुसहरटोली दोनों को फूंक दूंगा।"

उनके हलवाहे घीरा, घीरू और गम्भीरा मुंह ताकते रह गए थे। इतने डर गए कि काम करते रहने के बावजूद मजूरी मांगने की हिम्मत नहीं हुई। वे चुपचाप काम करते जा रहे थे; लेकिन यह बात किसी से छिपी नहीं थी।

रामसिंगार उनके दुआर पर भी जाकर चेता आया था कि बेचारों के बाल-बच्चे भूखों मर रहे हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। विश्वनाथ सिंह के स्वाभिमान के अनुकूल बात नहीं थी। सुनकर दिमाग लड़खड़ा गया था। पहले रामसिंगार की तारीफ करते थे कि गिरधारी सुकुल की पतोहू को भगाकर रख लिया, बहुत अच्छा किया है। मगर खेतिहर मजदूरों की बात और हलवाहों, चरवाहों के साथ उठना-बैठना सुनकर, तो बदन में आग लग जाती है।

रामनाथ सिंह जब-तब सुना-सुनाकर कहते हैं, "विश्वनाथ सिंह कोई आदमी है? गरीब-दुखिया से भूखे-प्यासे खटवाता है और मजूरी में एक नया पैसा भी नहीं देता। अरे, रावण है, असली रावण!"

"तुम लोग मेरी हंसी उड़ाते फिरते हो न?" विश्वनाथ सिंह ने घीरा, घीरू और गम्भीरा से इतना ही पूछा।

सुनकर उनके शरीर का रक्त सूख गया, "आज पन्द्रह दिन हो गए, सरकार! मगर लगातार हमारी सेवकाई में कोई अंतर नहीं आया है। हम तो जो भी कहते हैं, आपसे कहते हैं। हमारा बेटा मर जाए अगर हमने कहीं मुंह खोला हो तो। आप हमारी जीभ काढ़ लीजिए, मलिकार!"

विश्वनाथ सिंह इससे आगे कुछ नहीं बोले। खाली ठठाकर

लगभग दो गाड़ियाँ सशस्त्र पुलिस के साथ वहाँ पहुंच गए। कोई खास वाकिया नहीं हुआ। वे विश्वनाथ सिंह को पकड़कर ले गए और सुरक्षात्मक दृष्टि से विश्वनाथ सिंह के दुआर पर ही सशस्त्र पुलिस का पहरा बराबर के लिए बैठा दिया गया। ये सारी बातें धीरा, धीरु और गम्भीरा की हत्या से लेकर विश्वनाथ सिंह की गिरफ्तारी तक इस झटके से हुई कि कहीं कुछ नया और आश्चर्यजनक नहीं लगा। जिसे इस घटना से चौंकना था वह टोलता रह गया। रामसिंगार, किसुन, सनीचर, सुबल, यहां तक कि पुजारी जी भी, सबके सब विवश रह गए। सबों के दिमाग पर यह बात बैठ गई कि पुलिस को तो कमजोर और चमटोली, मुसहरटोली की रक्षा के लिए नहीं, विश्वनाथ सिंह के घर-दुआर, परिवार और जमीन-जायदाद की रक्षा के लिए तैनात कर दिया गया है।

रामनाथ भाई और सुकुल जी को विश्वनाथ सिंह की गिरफ्तारी से भीतर-भीतर प्रसन्नता जरूर थी। मगर जो नया खतरा और 'लड़ाई' की नई दिशा पैदा हो गई थी, उससे भाई जी सबसे ज्यादा भयभीत थे। उनके भीतर विश्वनाथ सिंह के प्रति जो तनाव था, वह पता नहीं कैसे शिथिल पड़ गया था।

अरे, विश्वनाथ को न अब लड़का-फड़का होने जा रहा है और न वह शादी ही करने जा रहा है। पता चल जाय कि विश्वनाथ बहू गर्भवती है, तब भाई जी उसे जहर खिलाकर मरवा डालने की भी ताकत रखते हैं। सारी सम्पत्ति को तो घूम-फिरकर भाई जी के पास आना ही है। विश्वनाथ सिंह जेल से छूटकर आ गया, तब भी क्या अन्तर पड़ता है ?

उन्होंने कई दिनों तक बहुत सोच-विचार किया। सुकुल जी की मौजूदगी में विचार-बात हुई। सुकुल जी की भी सलाह थी, "बाबू साहेब ! भाई आखिर भाई होता है। विश्वनाथ

सिंह जेल में ही सड़ते रहें, तो जग-हँसाई होगी और ये जो सगुन लोग हैं और आग पर पड़कर पेशाब करने लगेंगे। देव नहीं रहे, मनीभरा उन्हीं सबों में घुसा रहता है। वह आपका भाई नहीं, कसाई है। रामसिंगार मेरा गोतिया है, तो क्या हुआ? आगे उसके यहां शादी-ब्याह बन्द? देखता हूं, अबसे कौन उसके यहां अपने बेटी-बेटे का ब्याह करता है?"

सुकुल जी का भी भाई जी की तरह ही दूसरों के मामलों में बोलते-बोलते अपना ही स्वार्थ तन जाता है। उनका कलेजा, तो उसी दिन ठंडा होगा, जिस दिन कोई रामसिंगार को इसी तरह नदी में डुबा दे या गोली मार दे। विश्वनाथ सिंह ने कैसे चुपके-चुपके अपना बैर साध लिया। इसी को कहते हैं बड़े आदमी की बुद्धि। भाई जी बोले, "गाँव एकदम गरम है, सुकुल बाबा! खाली पुलिस आकर बैठ गई है, इसीलिए सन्नाटा है।"

"आप अपनी कुछ राजनीति की करामात दिखलाइए, बाबू साहेब! नहीं तो दुश्मन महाभारत जीतकर रहेंगे"।" सुकुल जी ने कहा।

भाई जी हंसे। "मगर इनकी राजनीति इतनी कमजोर और बंटी हुई है कि अभी इनसे कोई खतरा नहीं है। महाभारत भी हुआ तो हमारे ही पक्ष में होगा।"

"यह बात तो मुझे भी मालूम है, बाबू साहेब।" सुकुल जी खैनी को बड़े सुख से मलते हुए बोले, "जब तक थाना-पुलिस में हमारे लोग हैं, तब तक कोई खतरा नहीं है।"

"मुझे मालूम है। ऊपर से पेनशन पाने वाला स्वतन्त्रता-
ी तो हूं।"

जी की छाती प्रसन्नता से चौड़ी होती जा रही थी।
भी इनके दुआर पर आते थे, विश्वनाथ सिंह के दुआरे

पर भी झाककर सिपाही-इस्पेक्टर का हालचाल पूछ लेते थे। कभी-कभार भाई जी के यहां से भी उनके लिए दही-दूध पहुंचता रहता था। उन्हे अपना खाने का कभी मौका नहीं आया।

एक रोज इस्पेक्टर भी बोला था ' अब हमारे सामने कोई जुलूस-हगामे की बात क्यो नही करता? गोलियो से भून देंगे!" सुकुल जी को बडा बल मिला था।

भाई जी ने भी एकदम तय कर लिया कि विश्वनाथ सिंह को भी किसी तरह बचाना है। भाई जी ने एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया और विश्वनाथ सिंह एक सप्ताह के भीतर ही जमानत पर छूटकर गाव चले आए।

गांव के लोगो को भीषण अचरज हुआ। जब उन्होंने देखा कि दोनों भाई रामनाथ सिंह और विश्वनाथ सिंह एक ही टमटम से उतर रहे हैं। उस दिन विश्वनाथ के दुआर पर भारी जश्न था। दो पट्ठा खस्सी इस्पेक्टर साहब और सिपाहियो की खुशी के लिए कटे थे।

मन्दिर पर घोर उदासी थी। अखबारो में भी समाचार तरह-तरह से छपते रहते थे। पहला समाचार तो ऐसे छपा कि बडो और छोटी जातियो की परस्पर लडाई जमाने से चली आ रही थी। इसी मे दोनो तरफ से मुठभेड के समय एक ही तरफ के तीन लोग मारे गए थे, जिन्हे श्री विश्वनाथ सिंह की मदद से बैलगाड़ी मे उठाकर नदी में बहा दिया गया था।

पहली बार उन्हें जानकारी हुई कि अखबारों में समाचार भी प्रभावित किए जा सकते हैं। रामनाथ सिंह और पुलिस ने अपने बचाव के लिए अखबारो को गलत ढग से बताया होगा। रामसिगार तो दोनों भाइयों के लिए अब दुश्मन था। सुबस, सनीचर सभी गुस्से में जल रहे थे। किसुन ने

नोचकर फेंक दिया था।

"यह तो बड़ी अचरज की बात है कि भाई जी और वि
नाथ सिंह दोनों अचानक मिल गए।" किसुन बोला।

पुजारी जी ने उन्हें समझाया, "यह तो होना ही था,
बच्चो। उनका स्वार्थ जो एक है। तुम लोगों को काफी हं
यार और सजग रहना है। जब तक पुलिस चौकी यहां र
वे तरह-तरह से तुम लोगों को तंग करते रहेंगे।"

धीरे-धीरे केस बड़ा कमजोर पड़ता जा रहा था और
तय था कि विश्वनाथ सिंह का कुछ भी नहीं होगा। एव
साल के भीतर मामला एकदम ठंडा पड़ जाएगा। और पु
और भाई जी दूसरी ही बात कहना शुरू करेंगे कि गांव में अ
राधियों, डकैतों और असामाजिक तत्वों की संख्या दिन-प्रं
दिन बढ़ती जा रही है।

विश्वनाथ सिंह की जमानत के तीन-चार महीने बा
बभार-पचार के दस हजार से ऊपर हरिजनों और दूसरे लोग
ने फतहपुर से शहर तक एक लम्बा जुलूस निकाला। उन्हों
एस० पी० और कलक्टर का घेराव किया। उनकी तीन ही मां
थीं, 'अपराधी विश्वनाथ सिंह को फांसी दो', 'धीरा, ग्रीक और
रामधीरा के परिवार को जीने का साधन दो!' 'हरिजनों पर
जुल्म बन्द हों।'

स्थिति बड़ी गम्भीर थी। भयानक युद्ध की शुरुआत होने
लगी थी। किसुन और रामाधार ही मुख्य रूप से उनके
अगुआ थे। उन्हें तोड़ने के लिए पुलिस को लाठी चलानी पड़ी।

रामसिंगार का सिर फट गया था और वह बेहोश होकर गिर पड़ा था। फिर भी वे टस-से-मस नहीं हुए थे। वे तो संकल्प लेकर गए थे कि जब तक न्याय नहीं मिलेगा, गोली खाकर मर जाएंगे, मगर वापस नहीं आएंगे। जब घेराव के बारह घण्टे हो गए, तब राजधानी से वायरलस आया कि गोली चलाओ। पहले तो उन्होंने झूठे फायर किए और अश्रुगैस के गोले छोड़े। इस पर स्वाभाविक था कि भीड़ तितर-बितर हो जाती।

परन्तु इस घटना के बाद उनमे और भी जबर्दस्त दृढ़ता आ गई। भाई जी और विश्वनाथ सिंह पहली बार सकपका गए थे। पुलिस और मजिस्ट्रेट के सरक्षण के बावजूद उन्हे अपने ही अस्तित्व का खतरा बनता जा रहा था। लेकिन हिम्मत इतनी थी कि जवार-पथार मे कुछ भी कर दें, तब भी यहा की पुलिस चौकी उनकी हर तरह से मदद करेगी।

इन सारी घटनाओ के बावजूद मन्दिर पर पुजारी जी के प्रवचन और कथाए पूर्ववत् ही चालू थी, परन्तु विशेषता यह थी कि श्रोताओं की संख्या बराबर बढती चली गई। अब तो अगल-बगल के गावो से भी लोग आने लगे थे। औरतो की संख्या मे भी काफी वृद्धि थी। उन्हे दृढ विश्वास था कि जुल्म के दिन मिटकर रहेंगे।

इधर भाई जी और विश्वनाथ सिंह के अलावा दूसरे भूस्वामियो के मुंह से गाव मे जोरो की चर्चा है कि फरहगपुर गांव नक्सलपथियों का अड्डा है, जिसके अगुआ किसुन जादव, रामसिंगार सुकुल और सुबल राम हैं। गांव में पुलिस चौकी तो

इस बीच एक विचित्र स्थिति पैदा हुई।

भाई जी कितने ही दिनों के बाद मन्दिर पर गए थे। वे शिव बाबा के बसहा बैल की तरह निर्विकार बैठे थे। पुजारी जी ने उन्हें दूर से ही देखा था। उनके भीतर पीड़ा का भाव जरूर था, जो चेहरे की जड़ता के कारण दीख नहीं रहा था। पुजारी जी ने अन्दर से प्रसाद लाकर उन्हें दिया था। भाई जी ने कन्धे से झोला उतारकर नीचे रख दिया और कमर से नीचे झुकते हुए दोनों हाथ से प्रसाद ग्रहण कर लिया।

"पुलिस गांव से चली गई?" पुजारी जी ने सनीचर के सबसे छोटे बच्चे को गोद में उठाते हुए पूछा।

"यह तो मैंने लिखकर दिया था, तभी पुलिस यहां से गई है।"

"या पुलिस जब निश्चित हो गई कि विश्वनाथ सिंह के जेल से छूटने के बाद भी यहां कुछ नहीं होगा, तब वह यहां से गई है।" कहते हुए पुजारी जी हसने लगे।

"बाबा! यहां काली भी रहता है?" भाई जी ने इस बेताबी से चारों तरफ ताका, जैसे इनका कोई बैल दुआर से खूंटा झटककर भाग आया हो।

"अब तो कहीं गया है। काम-धन्धे के फेर में। आसपास में ही होगा। रात तक जरूर लौटेगा।"

"वह मेरा बनिहार है, बाबा।"

पुजारी जी मुसकराए, "वह आदमी भी तो है, त्यागी जी!" पुजारी जी उन्हें अक्सर त्यागी जी ही कहते थे। भाई जी को यह शब्द बड़ा प्रिय था। अमृत से भी ज्यादा मधुर।

उन्होंने कहा, "हमारे यहां बनिहार आदमी नहीं होते हैं। बेचारे काली को इसी बात की चिन्ता है कि उसमें आदमियत कहां से है। वह आपका संपूर्ण बैल क्यों नहीं है।"

"और मन्दिर पर संध्या-पूजा, बाबा !"

"इससे भी बड़ी कोई संध्या-पूजा है ? मगर आपके सतोष के लिए संध्या-पूजा भी समान रूप से चलती रहेगी। मेरे आधा घंटा समय से पूजा का कोई नुकसान नहीं होता । मदिर की घंटियां, आरती, गीत और रात्रि-कथाएं अपनी गति और मर्यादा के साथ चलते ही रहेंगे।"

अपने मस्तिष्क को जबरन खरोंचकर भाई जी ने एक प्रश्न निकाला, "बरसात के दिन मे पढ़ाई आसमान के नीचे तो नहीं चलेगी, बाबा !"

"इसका निर्णय तो स्कूल चलने के बाद हम लेंगे।"

भाई जी अचानक मुसकराकर ऐसे झूमने लगे, जैसे समीत-भजन की सुरीली आवाजों मे खो रहे हों।

"मेरी प्रार्थना थी।" पूर्ण सर्वोदयी मुद्रा मे हाथ जोड़कर अत्यन्त ही सरलता से बोले।

"हुकुम, त्यागी जी !"

"कुछ-कुछ मुझे भी सेवा का मौका मिले।"

पुजारी जी ठठाकर हसे, 'हरिजनो का मेला और आपके दुआर पर ? सनीचर बहू है, तो मर्यादा भग नहीं होगी ?"

"सारा गांव-जवार जानता है कि मुझे चमड़े मे कोई भेद नहीं रहा है। सन् ४२ के समय जेल मे हम सभी एक ही चटाई पर सोते थे। मेरे साथ गिरधारी तांती भी था।" भाई जी आजादी की लड़ाई का स्मरण आते ही काफी उन्मुक्त और खुल जाते थे, "बेचारे गिरधारी के पेट मे साले अंगरेज जेलर ने मिरिच घुसेड़ दिया था, एकदम बेलाग। वाह रे, वाह ! तब भी वह भारत माता, भगतसिंह और महात्मा गांधी की जय कहते हुए ही मरा। वाह रे सुराज वाह ! हम लोग एक साथ बैठकर खाते थे। बाबा की बात ! मैं तो हरिजन

टोली, गुमडर टोली, बाह्मन टोली, हर जगह दोनों हाथ से सेवा के लिए बराबर तैयार रहता हूं। गांधि-पाठशाला के लिए चन्दा-उन्दा की जरूरत पड़े तो मुझे कहेंगे। मैं हर तरह से तैयार हूं। जेल में तो मैंने भी शिक्षक का काम किया है न। अहा! क्या आनन्द की सेवा है! शिक्षा देने वाला तो स्वतः धर्मात्मा पुरुष होता है। इससे बढ़कर सेवा कहां?"

भाई जी के वक्तव्य को पुजारी जी ऐसे सुन गए नहीं सुन रहे हो। परन्तु भाई जी की मुद्रा का हठात् परि निश्चय ही आश्चर्यजनक था।

"लोगों से बात करूंगा, स्वामी जी!"

"महात्मा जी ने तो हरिजन-सेवा को आदर्श माना भाई जी अभी तक उसी आह्लाद में थे, "महाराज जी! दीजिए। चलता हूं।"

रामनाथ भाई झोला उठाकर चल पड़े।

सनीचर बहू चुपचाप सुन रही थी। सामने आकर यहां बड़े दुष्ट लोग हैं, बाबा! मैं वहां नहीं जाऊंगी।"

"पगली!" पुजारी जी हंसे, "मेरे जीते जी तुम्हें को कुछ कहने की हिम्मत है! मेरी बेटी स्कूल-मास्टरनी हिम्मत से काम लो।"

सनीचर बहू ने थोड़े ही दिनों में अपनी इतनी क्षमता ली थी कि मंदिर पर किए गए संकल्प को पूरा कर सके। बच्चों को भी घेरकर मंदिर पर पढ़ाती है। दोपहर ... भी हाथ बटाते हैं।

सुकुल जी को इन दिनों चारों तरफ बतियाने के लिए विषय मिल गया है, "सनीचरा बहू कुलच्छनी मास्टरनी बन गई है। कैसा समय आ गया है ! एक तो रंडी-पतुरिया पता नहीं कहां से चली आई है। सनीचरा को भ्रष्ट किया, उसके बाद नौजवानों के ऊपर पड़ी। अब सुनते हैं, चमटोली में स्कूल खोलेगी। पुजारी जी ने तो सबको सनका दिया है, लेकिन सनीचरा बहू कौन-सी जमीन पर स्कूल चलाएगी ?"

पुजारी जी ने सुना तो बोले, "वह जमीन गैरमजरुआ है। किसी के बाप की है क्या ? हम चमटोली कुएं पर साल-भर के भीतर स्कूल खड़ा कर देंगे।"

रामसिंगार सुकुल और किसुन शहर जाकर दस स्लेट, पंसिल, दस मनोहर पोथी की प्रतियां और चार लालटेन खरीद लाए थे। विचार तो यह भी था कि एक लम्बी दरी खरीद लें। मगर दरी में लगभग सौ-सवा सौ रुपये लगते थे। बेचारे जी ममोसकर रह गए।

कुछ दिनों तक तो गांव में 'स्कूल मास्टरनी' को लेकर तरह-तरह के मजाक चलते रहे, लेकिन औरतों और बच्चों की पढ़ाई की बात जवार-पथार के लिए घोर आश्चर्यजनक बात थी। कुछ लोगों ने स्कूल तोड़ने की बहुत कोशिश की, मगर कोई असर नहीं हुआ।

स्कूल खत्म होने के बाद पुजारी जी मंदिर पर अभी आ भी नहीं पाए थे कि किसुन से पता चला, रामसिंगार के बाबू जी को विश्वनाथ सिंह ने अपने दुआर पर बुलवाया था और धमकी दी थी कि रामसिंगार ने लीडरी नहीं छोड़ी, तो गोली मार देंगे। रामसिंगार के बाबू जी गिड़गिड़ाते हुए हाथ जोड़ रहे हैं, विश्वनाथ सिंह पिघलकर बोले थे, "ब्राह्मण होकर हाथ जोड़ रहे हैं, इसीलिए छोड़ भी दे रहा हूं। मगर भविष्य में अपने

गड़के पर अंकुश रखिए।"

"आखिर हुआ क्या, किसुन बेटे ?" पुजारी जी बोले।

"हाल में शहर से दो नौजवान अखबार वाले आए थे। उन्होंने धीरा, धीरू और गम्भीरा का सही-सही मामला लिख अखबार में लिख दिया है। उसमें हम लोगों का भी बयान है। बड़े-बड़े पुलिस के अफसर छटपटाए हुए हैं। बेचारे दो नौजवानों को तो तरह-तरह से धमकाया जा रहा है। पर विश्वनाथ सिंह को भी पुलिस अफसरों ने बुलाया था। पुलि ने उन्हें कहा है कि गांव के गुंडों को संभालो, नहीं तो बु तरह फसोगे। हम मदद कहां तक कर पाएंगे। हम तो बु तुम्हें साथ देने के कारण अखबारों में बदनाम किए जा रहे हैं। विश्वनाथ सिंह ने इसीलिए रामसिगार के बाबू जी को बुलाया था।"

"विश्वनाथ सिंह फिर अपना चक्र शुरू करेगा।"

"मैंने तो यह भी सुना है।" किसुन बोला, "कह रहा था घमटोली में पढ़ाई के नाम पर ढोंग चल रहा है। एक दिन उठाऊंगा बन्दूक और स्कूल मास्टरनी का मिजाज ठंडा हुआ। किसके हुकुम से गैरमजरुआ जमीन को सालों ने दखल किया है ?"

पुजारी जी का चेहरा क्रोध से तमतमाया जा रहा था। उन्होंने कहा, "मेरे बेटो ! सिर हथेली पर रख लो। कायरता से मरने की बजाए साहस के साथ मरो।"

मन्दिर पर कनेर गाछ के नीचे किसुन, रामसिगार, सनीचर, रघुनी, सुबल, काली तांती सभी बैठे थे। लगभग बीस-पच्चीस गाव के दूसरे लोग भी थे।

"विश्वनाथ जंगली सुअर है !" रामसिगार ने कहा, "वह कभी भी हमारे ऊपर बन्दूक उठा सकता है। भाई जी उससे

मिले हुए हैं। इससे उसका अत्याचार और भी बढ़ता जा रहा है।"

पुजारी जी ने बीच में ही टोका, "उससे भी खतरनाक तो रामनाथ सिंह है। भीतर-भीतर से गाव-जवार का सारा रक्त चूसता जा रहा है और हमें कुछ पता भी नहीं चलता।"

इसी बीच इसी जिले के एक गांव, देवरिया में बहुत ही बुरी घटना घटी। परसों शाम को ही यही पाच बजे शाम के आसपास पांच हरिजनों को जिन्दा जला दिया गया। इनमे तीन मरद और दो औरतें थीं। देवरिया के भूस्वामियो ने वह काम बड़ी आसानी से किया था। उन्होंने इन्हें घरो मे घेरकर बन्द कर दिया था और बाहर से आग लगा दी थी।

घटना के पहले से भी वहां 'फोरस' तैनात थी, क्योंकि देवरिया में तनाव पहले से भी चल रहा था; लेकिन पता नहीं क्यों, जिस दिन यह घटना हुई उसी दिन सुबह 'फोरस' गाव छोड़कर लौट गई थी। 'फोरस' को विदाई देने भूस्वामी देवरिया दूर तक आए थे और चलते समय 'हाकिम' ने सबसे हाथ भी मिलाया था।

शाम को अचानक दक्खिन तरफ से शोरगुल हुआ। फायरिंग हो रही थी। दो हरिजन औरतों को भूस्वामियों ने बन्दूक भड़ाकर नंगा कर दिया था और उनका प्रदर्शन करते हुए ले जा रहे थे। लगभग तीस-चालीस लोगों ने बन्दूक के साथ उनके टोले पर हमला कर दिया था। बन्दूक छूटने के बीच मे फटने की भी आवाज हुई थी।

मिले हुए हैं। इससे उसका अत्याचार और भी बढ़ता जा रहा है।"

पुजारी जी ने बीच मे ही टोका, "उसमे भी खतरनाक तो रामनाथ सिंह है। भीतर-भीतर से गाव-जवार का सारा रक्त चूसता जा रहा है और हमे कुछ पता भी नही चलता।"

इसी बीच इसी जिले के एक गाव, देवरिया मे बहुत ही बुरी घटना घटी। परसो शाम को ही यही पाच बजे शाम के आसपास पाच हरिजनो को जिन्दा जला दिया गया। इनमें तीन मरद और दो औरतें थी। देवरिया के भूस्वामियो ने वह काम बडी आसानी से किया था। उन्होने इन्हें घरो मे घेरकर बन्द कर दिया था और बाहर से आग लगा दी थी।

घटना के पहले से भी वहां 'फोरस' तैनात थी, क्योकि देवरिया मे तनाव पहले से भी चल रहा था, लेकिन पता नहीं क्यों, जिस दिन यह घटना हुई उसी दिन सुबह 'फोरस' गांव छोड़कर लौट गई थी। 'फोरस' को विदाई देने भूस्वामी देवरिया नहर तक आए थे और चलते समय 'हाकिम' ने सबसे हाथ भी मिलाया था।

शाम को अचानक दक्खिन तरफ से शोरगुल हुआ। फायरिंग हो रही थी। दो हरिजन औरतो को भूस्वामियों ने बन्दूक भिड़ाकर नगा कर दिया था और उनका प्रदर्शन करते हुए ले आ रहे थे। लगभग तीस-चालीस लोगो ने बन्दूक के साथ उनके टोले पर हमला कर दिया था। बन्दूक छूटने के बीच में बम फटने की भी

कई झोंपड़ियां जल रही थीं। औरत और बच्चे चीखते-चिल्लाते नगर की तरफ भाग रहे थे। कई घंटे तक हरिजन टोली जलती रह गई थी। आसपास और तमाम दुनिया ने देवरिया गांव से अपना सम्पर्क ही काट लिया था, जैसे उन्हें कुछ भी पता नहीं हो।

इस घटना के सत्तरह-अट्ठारह घंटे बाद शहर से 'फोर्स' आई थी और बारह भूस्वामी गिरफ्तार किए गए थे। कलक्टर ने छानबीन की तो दो हजार कारतूस, सात राइफलें और चार बन्दूकें बरामद की गईं। दूसरे लोगों का तो यह भी कहना है कि अभी भी उनके पास हजारों कारतूस, एक दर्जन राइफलें और कई बन्दूकें अवैध रूप से पड़ी हैं।

'लड़ाई' की कहानी वही पुरानी है। मारे जानेवालों में भोला चमार, फूलना तांती और धारी जादो की जमीनें बीस वर्षों से एक भूस्वामी जगन पांडे के यहां पड़ी हुई थी। सरकार ने ऐसी भूमियों को बन्धनों से मुक्त कर दिया था। इसी से शह पाकर बेचारे तीनों आदमी अपनी धरती हासिल करने के लिए जमीन पर हल-बैल लेकर गए। जगन पांडे ने उन्हें चुनौती दी; लेकिन भोला, फूलना और धारी ने पांडे की बातें अनसुनी कर दी। नतीजा यह हुआ कि सारे भूस्वामी एक साथ मिल गए और जगन पांडे की प्रतिष्ठा के लिए अमानवीय स्तर तक उतर आए।

इस घटना से फरहंगपुर, सीतापुर आदि गांव भी अछूते नहीं थे। मन्दिर पर जब लोगों ने यह सुना कि रामनाथ भाई देवरिया के जगन पांडे और वहां के भूस्वामियों की मदद के चन्दा कर रहे हैं, तब सबका दिमाग गुस्से से तमतमाने [illegible]-धीरे भाई जी की नीयत स्पष्ट होती जा रही थी। [illegible] की ओर रामनाथ भाई झोला लेकर बढ़े आ रहे

थे, तब किसुन ने उन्हें टोक ही दिया, "कोई जलसा-जुलूस है का मलिकार !"

"कुछ वैसा ही समझ लो किसुन बबुआ !" रामनाथ भाई ने कहा, "इससे भी बड़ा अनुष्ठान है, महायज्ञ ही समझो। देवरिया के बारह बड़े आदमियों में अभी तक दो जेल से छूटे नहीं हैं। जगन पांडे भी उसी में हैं। बड़े रईस आदमी हैं।"

"जिसे खाने को ठिकाना नहीं, वह आपको क्या देगा, बाबू साहेब !"

"भक्ति में जो भी मिल जाए वह सही है।" उन्होंने बात पलट दी, "पुजारी जी मजे में तो हैं न ?"

"आपकी कृपा से स्वस्थ हैं; लेकिन इन दिनों काफी चिन्तित रहते हैं।"

"काहे रे किसुन !" भाई जी ने बनावटी अचरज जाहिर किया।

"चमटोली में रात के स्कूल पर तरह-तरह की गुंडई की कोशिश होती है। सनीचर बहू पर हमले होते हैं। बाबू विश्वनाथ सिंह अभी भी शांत नहीं हैं। तीन हत्या करने के बाद भी उनका कलेजा ठंडा नहीं हुआ है···।"

"ऐसी बात मुंह से नहीं काढ़ते।" उन्होंने बात काटकर कहा, "विश्वनाथ सिंह को मैं समझा दूंगा। अभी तक उसे दुनियादारी से कोई सरोकार नहीं हुआ है न ? तुम लोगों को मालूम नहीं है न ? बेचारे को लड़के के मरने के बाद भी कोई सदमा नहीं हुआ है। अपार सम्पत्ति है। उसे भोगने वाला कोई नहीं है। चिन्ता तो रहती ही। इसी बात को लेकर बराबर चिन्तित रहता है बेचारा !"

"एक बात पूछूं, बाबू साहेब !"

"मैं तो तुम्हारे बाप के बराबर का हूं। पूछ बबुआ !"

किसुन बनावटी फुसफुसाहट के स्वर में बोला, "सुना किसी ने उनके लड़के को ज़हर देकर मार डाला था ?"

"ऐसी बात नहीं कहते। गड़ा मुर्दा उखाड़ने से कोई फायदा नहीं।"

"जो भी हो।" आगे की बात अनायास ही किसुन के मुंह से जरा ज़ोर से निकल गई, "कुछ भी कहें बाबू साहेब! लेकिन ज़हर देने वाला आदमी हमारे गांव का ही है।"

"चोप स्साले !" किसुन ने पहली बार उनके मुंह से गाली सुनी थी।

"मैं नहीं जानता था। आपको तो गाली भी देना आता है, भाई जी !" किसुन हंस दिया।

"और बता, स्कूल-मास्टरनी के हालचाल क्या हैं ?"

"आपको अभी तक अच्छी लगती है न ?"

"तुम्हें कहां से मालूम ? तुम तो अभी उमिर में बच्चे हो ?"

किसुन ने गम्भीरता के साथ कहा, "बाबू साहेब की बात ! मैं तो सब कुछ जानता-समझता हूं। आपको स्कूल-मास्टरनी चाहिए ? इतने दिनों तक आपकी शरण में रही। तब आप कहां थे ?"

रामनाथ भाई की यह 'साली औरत' ही कमज़ोरी है। वे तो खाली इनकी 'सूरत' पर मरते हैं। सनीचरा ससुर बड़ा भाग्यवान है। दुनियादारी के चलते पंचदूती में बड़ों का साथ देना पड़ जाता है। नहीं तो ऐसी सूरत वाली को दरवाज़े से खदेड़ना चाहिए था ? यही सुकुल जी कभी-कभी दिमाग में भूसा भर देते हैं।

"तब क्या एकाध दिन इंतजाम करा सकते हो, किसुन बबुआ !"

"वह तो आपकी कोई लगती है न ?"

"दुनिया में सभी किसी-न-किसी के कुछ लगते हैं। सनीचरा मोतिया का भाई है यही न ?"

"कुछ माल-पानी खर्च करोगे ?"

रामनाथ भाई बच्चों से भी ज्यादा खुलते जा रहे थे, "देवरिया के लिए चन्दे में से तुम्हें आधा दे दूंगा। महात्मा जी की कसम !"

"चलिए, प्रभु की दया से बात तो पक्की हो गई।" किसुन ने कहा, "मगर उसे कहां भेज दूं ? आपकी कोठी पर या अरहर के खेत में ?"

"सुन रे किसुना ! मजाक कर रहे हो या दिल से बोल रहे हो ?"

"दिल से बोल रहा हूं, बाबू साहेब !"

उन्होंने जीभ से होंठ चाटते हुए पूछा, "सुनता हूं, तुम लोग उसे बहुत मानते हो ?"

"वह तो हमारी भौजाई है न ? वह तो गांव-भर की मास्टरनी है। सबके लिए पूज्य और मां।" किसुन ने कहा, "मगर एक बात से होशियार रहेंगे, बाबू साहब ! सनीचरा बहू बराबर अपने साथ कटार भी रखती है। कहीं आपके पेट में घुसेड़ न दे ?"

रामनाथ भाई अपने-आप में लौटे।

"देख किसुना पचकूती बुलाता हूं। मजाक उड़ा रहे हो न ? ठहर जा बताता हूं।"

भाई जी किसुन को मां-बहिन की गालियां बकते हुए वहां से भाग गए। किसुन को यह समझते देर नहीं लगी कि भाई जी विश्वनाथ सिंह की चापलूसी करेंगे और उसके खिलाफ गांव में गंदा वातावरण बनाने की तैयारियां करेंगे।

एक दिन सचमुच सनीचर बहू ने रामनाथ सिंह के ऊपर कटार चला ही दी। दोपहर को वह गाव में लोगों को समझाने-बुझाने के लिए निकल जाती थी। भाई जी उसका समय जानते थे। जब वह खेतों से होकर मंदिर पर लौटने लगी, तो भाई जी कुत्ते की तरह पीछे लग गए। अरहर की आड़ में और खलिहान के झुरमुटों के पास एकांत मिला, तो उन्होंने पीछे से लपककर सनीचर बहू का हाथ पकड़ लिया।

बेचारे रामनाथ भाई की सनीचर बहू के साथ यह दूसरी कोशिश थी। भय से उनका चेहरा फक था। मगर जबरन द निपोरे जा रहे थे। उन्होंने आरी से नीचे खींचना चाहा, सनीचर बहू ने कटार निकालकर चला दी। भाई जी की बा शरीर से अलग तो नहीं हुई; परन्तु बुरी तरह घायल ह गए।

बहुत देर तक आरी पर वे बेहोश पड़े हुए थे। कुछ लोगं ने देखा, तो उन्हें उठाकर मलहम-पट्टी के लिए करीब के ह जुम्मनपुर बाजार ले गए।

विश्वनाथ सिंह टमटम पर पहुंचे तो भाई जी होश में आ चुके थे, "अब कैसी तबीयत है, भइया?" विश्वनाथ सिंह ने पूछा।

"ठीक हूं, बबुआ!"

"अभी जाता हूं, माग्नी को गोली मार देता हूं। देखता हूं पुजारी जी क्या कर लेते हैं?" विश्वनाथ सिंह गुस्से से बोले।

"घबड़ाने की जरूरत नहीं है।" भाई ने समझाया, "पुलिस आई थी। मैंने बयान दे दिया है।"

"क्या बयान दिया है?"

"यही कि मैं देवरिया के लोगों की राहत के लिए चंदा वसूल कर सीतापुर से लौट रहा था, तो सनीचर बहू ने कटार

दिखलाकर खलिहान के पास मुझे घेर लिया और कहने लगी, झोले में जितनें भी रुपये-पैसे हैं, मेरे हवाले करा दो, नहीं कटार चलाकर मार डालूगी ?' मैं जनता की सम्पत्ति की रक्षा के लिए जान पर खेल गया और झोले को कंधे से उतारकर दोनों हाथों के बीच समेटने लगा। इसी बीच उसने कटार चला दी। वह तो कहो, कटार बांह में ही आकर धसी। गर्दन पर उछल-कर आती तो पता नहीं मैं अब तक इस दुनिया मे होता या नहीं।"

"साली ! डाकून है, डाकून !" विश्वनाथ सिंह ने दांत किटकिटाए।

दूसरे ही दिन थानेदार के साथ तीन-चार सिपाही स्कूल मास्टरनी सनीचर बहू को पकड़कर ले गए। गांव में तहलका मच गया। चमटोली की रात्रि-पाठशाला बन्द हो गई थी। सनीचर के लड़के मदारी के लिए कुछ दिनों तक छछनकर रोए, लेकिन पुजारी जी ने स्नेह-दुलार से समझा लिया कि मां कुछ दिनों में आ जाएगी।

भाई जी घूम-घूमकर लोगों को अपनी बांह दिखलाते चलते थे, लेकिन इसका असर ठीक उलटा हो रहा था। भाई जी के प्रति गांव के लोगों में घृणा भरती आ रही थी। गनेसी से जब पूरा हाल सुना रहे थे, तब गनेसी आधी बात के बाद ही वहां से उठकर चल दिया था। वे गनेसी को अपने पक्ष में करने के लिए गए थे कि अगर सनीचरा बहू के खिलाफ गवाही दिया तो सब करज माफ कर देंगे। गनेसी ने इसकी परवाह नहीं की

ने मार डंडकर मन दिया था।

इस तरह जहां-जहां भी गए, यही लगा कि उनकी तरफ से कोई भी मन से तैयार नहीं है। यह पता चला कि मुकुल जी और परभरन सिंह को छोड़कर कोई भी तैयार नहीं है। सुनने में यह भी आया कि मुकुल जी ने दारोगा को बताया था कि वे उसी रास्ते से चिट्ठी बांटते हुए आ रहे थे। उन्होंने अपनी आंखों से साफ देख लिया किया कि सनीचर बहू उनकी गर्दन पर कटार चला रही है।

थाने-पुलिस में पहले से ही सनीचर, सुखल, रामसियार, किसुन वगैरह के नाम 'बदनाम सूची' में अंकित थे। इधर विश्वनाथ सिंह बार-बार उनके कान खड़े कर रहे थे कि वे नक्सलाइट हैं। सनीचर बहू के लिए रात्रि पाठशाला तो बहाना था। वहां तो औरतों को 'डकैती' के लिए ट्रेनिंग की योजना थी।

लाख कोशिश के बावजूद सनीचर बहू की जमानत नहीं हो रही थी। गांव के नौजवान मन मसोस कर रह जाते थे। यह कैसी दुनिया है ? सनीचर बहू की मर्यादा पर रामनाथ सिंह ने हमला किया और उलटे बेचारी को डकैती और 'मर्डर' के इलजाम में गिरफ्तार भी करवा दिया।

"अब तो अन्याय और जुलुम बर्दाश्त नहीं हो रहा, बाबा!" सनीचर आंखों में आंसू भरकर पुजारी जी से बोला, "इसका मतलब तो यही हुआ न कि हमारा रक्षक कोई नहीं है ? अब तो किसी को भी नक्सलाइट कहकर जेल में डालकर अत्याचार किए जा सकते हैं ? सनीचर बहू भी वही हो गई। यह जुलुम कैसे खतम होगा, बाबा !"

पुजारी जी ने उसे शान्त भाव से समझाया, "ऐसे घबड़ाने काम नहीं चलेगा, मेरे बेटे ! हम लोग मनुष्य हैं और मनुष्य

अपने जीने के लिए मरते दम तक संघर्ष छोड़ दे, तो वह आदमी नहीं है।" पुजारी जी की आँखें भी डबडबाई हुई थीं। मगर किसी को दिखलाई नहीं पड़ा।

रामनाथ भाई सुकुल जी से बक रहे थे, "मनीचर बहू को सिपाही खूब तंग कर रहे हैं। अब मजा आ रहा होगा। अब पता लग रहा है कि वह कितनी पापी थी! गाव के सारे मौगों को ट्रेनिंग दे रही थी। बाप रे बाप, सुकुल बाबा! भर-सक कटार लेकर चलती थी! अरे, उसे तो हमीं सबके लिए भगवान ने भेजा गया था। चलो, एक बहुत बड़ा कांटा खतम हुआ।"

"बाबू साहेब की बातें," सुकुल जी ने कहा, "बड़े आदमी इसी तरह शहीद होकर दुनियां की रक्षा करते हैं। आपकी बांह में कटार तो जरूर लगी, मगर गांव की भयंकर डाकुन पकड़ी भी गई।"

"सो तो है, पंडी जी! मगर बिसुना, सुबल, रामसिंगार, ये सब कैसे साफ होंगे? इन्होंने तो चारों तरफ खेतिहर मज-दूरों की लड़ाई लगा दी है। सब तरफ हक की बीमारी लगा गई है। आज तक इतिहास में उन्होंने कभी सिर उठाया है क्या? हमने जैसे चाहा है, जो चाहा है, इनसे कराया है।"

"बड़े आदमी की इज्जत खतरे में है बाबू साहेब!" सुकुल जी बातें बाहर बोलने के लिए विख्यात हैं, "महाभारत की रचना काहे हुई? क्या भगवान ने इन्हीं नवमों के सत्यानाश के लिए हुई थी। संसार पतन की ओर जा रहा है, कलयुग से भी आगे 'घटयुग'। इस युग में तो कमाल करेंगे ही। हमारे लिए तो त्रिशूल छोड़कर कहीं जगह नहीं है।"

"आप ने पुलिस को तो बड़ा बचा था।" भाई जी ने

कहा।

"एक बात बताऊं, बाबू साहेब !" मुकुल जी फुसफुसाकर कहने लगे, "कुछ भी हो, विश्वनाथ सिंह भी किसुन और रामभिलार को नहीं छोड़ेंगे। इन्होंने अखबार वालों से मिलकर धीरा; धीमू और गम्भीरा के मामले को नये सिरे से उठाया है। विश्वनाथ सिंह की गिरफ्तारी निश्चित है।"

"सचमुच, पंडी जी !" रामनाथ भाई को सचमुच का अचरज हुआ। "विश्वनाथ अब जेल भी गया, तो चिन्ता की बात नहीं। मैं उसका बड़ा भाई किस दिन-रात के लिए हूं ? उसकी सारी गृहस्थी संभाल लूंगा।"

"संभालना ही चाहिए।" मुकुल पंडी जी बोले, "सारी-जमीन-जायदाद भी तो आप ही की होने वाली है। उन्हें कोई वंश-विरवा ही कहां, जो चिन्ता करें।"

"वह जेल में निश्चित होकर रहेगा। मैं इधर सब कुछ संभाल लूंगा, फिर भी तो उसका मामला उतना संगीन नहीं है। तीन हत्याएं एक साथ कर दीं। फिर भी गांव में सीना फुलाकर चलता है। मान गए मेरा लोहा कि नहीं पंडी जी ? विश्वनाथ सिंह के केस में पैरवी कर, नक्सलाइट उपद्रव साबित करा दिया है और सनीचरा बहू को ऐसे फंसा दिया कि उसके साथ-साथ कितने ही लोगों की खैर नहीं। कर तो ले कोई गांव-जवार में मेरा मुकाबला ? किनकी मतारी सांड ब्याई है ?"

भाई जी की इस करवट से तो मुकुल जी को भी भय हो गया। किसी दिन भाई जी किसी बात को लेकर मुकुल जी से नाराज हो गए, तब क्या इनके साथ भी इसी घमंड के साथ बात करेंगे ? मुकुल जी ने पूछा, "सनीचर बहू की जमानत होगी कि नहीं ?"

"मेरे रहते कैसे हो सकती है ?" भाई जी गुस्से में बोले, "एक दिन पुजारी जी भी जेल जाएंगे।"

सुकुल जी आसमान से गिरे। विश्वास नहीं हो रहा है। क्या यह वही सर्वोदयी किस्म के आदमी रामनाथ सिंह उर्फ रामनाथ भाई हैं या इनके चोले में ही कोई रहस्यात्मक परिवर्तन हुआ है ? पुजारी जी के खिलाफ अभी तक गांव में किसी ने भी खुल्लमखुल्ला कुछ भी नहीं कहा था। तो क्या भाई जी इस सीमा तक खतरनाक आदमी हैं ? सुकुल जी का तो माथा चकरा रहा था।

"चलता हूं, बाबू साहेब !" सुकुल जी कमर सीधी करते हुए उठ खड़े हुए, "थोड़ी-बहुत चिट्ठियां रह गई हैं।"

"तब क्या सचमुच आप चिट्ठियां मन से बांटते हैं ?" कहकर रामनाथ भाई हंस पड़े।

"आज बाबू साहेब को क्या हो गया है ?" सुकुल जी कुछ बोले नहीं। चिट्ठी-पत्रीवाला झोला कंधे पर डालकर चल दिए। सुकुल जी ने पहली बार विचार किया, रामसिंगार से पतोहिया का ब्याह हो ही जाये, तो इसमें धरम का मामला कहां से आता है ? इच्छा हुई, लौटकर पुजारी जी के पास मंदिर पर कुछ देर के लिए बैठें, परन्तु हिम्मत नहीं बंध रही थी।

रास्ते में सुबल दिखाई पड़ा था। सुकुल जी ने नजर मिलते ही उसे हाल-समाचार पूछा था। सुबल खुद हैरत में था कि सुकुल पंडित में बदलाव कहां से आया है ?

"रामसिंगार कहीं बाहर गया है क्या ?" सुकुल जी ने पूछा।

सुबल घबराया, "अभी तक रामसिंगार के पीछे ही हैं, सुकुल बाबा ?"

"इन्हें कौन नहीं जानता, महराज जी। यही तो असली भगवान् हैं, इन्हीं के सेवक के रूप में तो मेरा जन्म हुआ था, फिर कोई हुकुम है क्या ?"

तमाम ऐसे खड़े थे जैसे किसी चित्र मे खींची हुई असंख्य लकीरें हों, "ये आपकी मनुष्यता और ईमान की परीक्षा चाहते हैं, त्यागी जी !" पुजारी जी बोले।

"हुकुम तो करिए, महराज जी।"

"इसमे सभी आपके किसी-न-किसी रूप मे गुलाम हैं। ये अपनी गुलामी के प्रमाण-पत्र, हैंडनोट के सारे कागज अपने सामने चाहते हैं कि · "

भाई जी उल्लास मे बीच ही में बात काटकर बोले, "अभी लाता हूं, महराज जी।"

थोड़ी देर में अन्दर से बाहर निकले और सबके सामने तमाम कागजात पटक दिए। "इन्हें संभालिए, महराज जी।"

पुजारी जी ने एक-एक आदमी का कागज पढ़कर पुकारना शुरू किया, रघुनी, गनेसी, कानी ताती, परीखा जादव, कंवलपतिया मुसम्मात, फुलेसरी, कालीचरन दुसाध, लगभग बाईस-तेईस लोग, फिर पुजारी जी ने आवाज लगाई, "और कोई ऐसा भी आदमी बच गया है, जिसके कागजात यहां पर नहीं हैं ?···और कोई है रामनाथ सिंह का कर्जखोर ?"

कोई आवाज नहीं आई।

पुजारी जी समझ गए, रामनाथ सिंह के मात्र तेईस गुलाम ही बच रहे हैं। उन्होंने युवकों की ओर ताका, "किसुन बेटे !"

"हां, बाबा !" वह दौड़कर उनके सामने आ गया।

"तुम्हारे पास माचिस है ?"

"यह है, बाबा !" उसने माचिस पुजारी जी के सामने बढ़ाने की कोशिश की। नौजवान अभी तक कुछ भी समझ नहीं

पा रहे थे। पुजारी जी का अंकुश ज़रा भी हटा कि भाई जी को कच्चा चबा गए। उनकी मुट्ठियां तनी हुई थीं।

"इन सारे कागजातों में आग लगा दो, किसुन बेटे!"

किसुन ने माचिस की तिल्ली जलाकर सारे कागजातों आग लगा दी। दो मिनट के अन्दर सारे कागज जल गए इसके बाद पुजारी जी ने भाई जी को सम्बोधित करते हुए कहा, "आज से प्रतिज्ञा करो रामनाथ सिंह, कि तुम किसी को भी अपना कर्जखोर नहीं बनाओगे। अब अधिक बढ़े, तो तमाम लोग तुम्हारा खून पी जाएंगे।"

पुजारी जी भीड़ की ओर मुड़े, "मेरे गांव-जवार के निवासियो! आज से रामनाथ सिंह के चंगुल से तुम मुक्त हो। मैंने तुम्हारे सामने तमाम कागजों में आग लगवा दी, ताकि यह तुम्हें पुनः डरा-धमका नहीं सकें। तुम्हें मालूम है, अभी इनके हाथ बड़े लम्बे हैं। अभी इनकी चाह सर्वोपरि है। ये तुम्हें तरह-तरह से तंग करना चाहेंगे। हो सकता है, दो-चार दिन के भीतर ही एक-दो दर्जन लोगों की गिरफ्तारियां भी हों कि सभी इनके यहां डकैती करने के लिए आए थे। मगर डरने की जरूरत नहीं है और आनेवाली विपत्तियों का संगठित होकर मुकाबला करो!"

इस घटना के बाद गांव में ही नहीं, जवार-पथार में भी नई शक्ति का उदय हुआ था; लेकिन दो ही तीन दिनों के बाद गांव में एक मजिस्ट्रेट के साथ पुनः पुलिस चौकी आ गई। कुछ दिन तक तो गांव को पुलिस बहुत आतंकित किए रही; परन्तु जब किसुन और रामनिगार को पकड़ लिया, तो हंगामा ... फिर भी पुलिस मुगल, सनीचर, काशी ताती ... में थी।

और किसुन शहर भेज दिए गए थे और भाई

विश्वनाथ सिंह ने दो ही फायर में उसे भी सुला दिया।

सुबह होते-होते मंदिर पर असंख्य लोग जमा होने गए। वे विश्वनाथ सिंह को ढूंढ रहे थे। मगर वह तो पुलिस चौकी के अन्दर टेण्ट में छिप गया था।

दोपहर तक जब वे लोग सुबल, सनीचर और उसके बच्चे की लाश को कंधे पर लेकर जुलूस की शक्ल में शहर की ओर बढ़ रहे थे, तब उनकी संख्या बीस-पच्चीस हजार से भी ऊपर थी। पुजारी जी सबसे आगे सनीचर के बच्चे की लाश कंधे पर लिए हुए